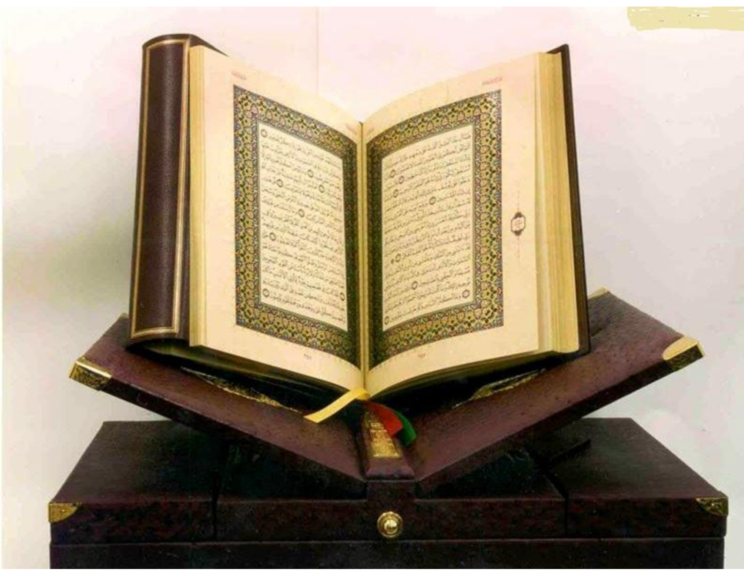


हजरत मौलाना यूसुफ कान्धलवी रह0 के बयानात की रौशनी मे

नमाज से परवरिश

तर्तीब

हाफिज यूसुफ

परवरिश लेने का आसान रास्ता

नमाज से परवरिश

तर्तीब

हाफिज यूसुफ

नमाज से परवरिश

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह जल्ला शानुहू ने जिन्न व इन्सान को आखिरत मे कामयाब करने के लिये बनाया है और कामयाब होने वाले जिन्न व इन्सान की खिदमत के लिये फरिश्तों और हूरों को बनाया है। इन्सान व जिन्न आखिरत मे हमेशा जिन्दा रहेगें इनके जिस्म से कभी रूह न निकाली जायेगी पर रहने के लिये जगह दो होगीं एक जन्नत और एक जहन्नम, जन्नत मे पहुचॅने वाला कामयाब और जहन्नम मे पहुचॅने वाला नाकाम। आखिरत मे कामयाब होन वाले इन्सान व जिन्न वो होगें जो दुनियॉ की मुख्तसर सी जिन्दगी मे आखिरत को अपनी मेहनत का मैदान बनायेगें, आखिरत को मेहनत का मैदान बनाने का मतलब ईमान को सीखते हुए आमाल ए सालिहा के साथ जिन्दगी गुजारना लेकिन ये जिन्दगी उन्ही लोगों को नसीब होगी जो इस कायनात को इम्तेहानगाह समझेगें इसलिये कि अल्लाह जल्ला शानुहू ने इस कायनात को इन्सान के इम्तेहान के लिये बनाया है और इम्तेहान परवरिश का है कि ये अपनी परवरिश का इन्तेजाम कायनात के रास्ते से करते हैं या खालिक ए कायनात की कुदरत के रास्ते से करते हैं ? यहॉ पर याद रखने वाली बात ये है कि कायनात को बनाने के बाद हक तआला ने कभी इसकी तरफ तवज्जो नही की है, इसकी तरफ तवज्जो न करने की वजह इसका मुर्दार होना है और मुर्दार एक ऐसी चीज है जिससे कुत्तों के अलावा किसी की उम्मीद पूरी नही होती,

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! ये दुनियॉ मुर्दार है और इसके चाहने वाले कुत्ते है। (कंजुल आमाल -1-122)

यानी कुत्तों के अलावा किसी को भी दुनियॉ की चीजों से अपनी परवरिश की कोई उम्मीद न करनी चाहिये इसलिये कि मुर्दा चीज से उम्मीद करना नासमझ होने की निशानी है, कायनात की हर चीज अपने बनने और बाकी रहने मे हर लम्हा अपने बनाने वाले की मोहताज है और ये बात तो यकीनी है कि जो चीज अपने बनने और बाकी रहने मे अपने बनाने वाले की मोहताज हो उसे पाकर इन्सान की उम्मीदें कैसे पूरी हो जायेगी और इन्सान उस चीज से कैसे कामयाब हो सकता है ? इसलिये सबसे पहले इस बात को समझ लेना होगा कि इस कायनात की बुनियाद दुनियॉ की चीजों पर नही कुदरत पर है अल्लाह तआला ने किसी भी चीज को सबब से नही बनाया बल्कि हर एक को अपनी कुदरत से बनाया है और ये बात भी याद रखना कि अल्लाह के करने का सबब उनकी कुदरत है, अल्लाह तआला जो कुछ भी करते हैं अपनी कुदरत से करते हैं, जमीन व आसमान, सूरज, चॉद व सितारे, दरिया, पेड़ व पहाड़, इन्सान, जिन्नात और फरिश्ते इन सबको खुदा ने किसी सबब से नही बनाया बल्कि बगैर नमूना सिर्फ अपनी कुदरत से बनाया है, जैसे

आदम अलै0 को बगैर किसी इन्सान के बनाया,
पेड़ों को बगैर किसी बीज के बनाया,
आसमानों को बगैर किसी आसमान के बनाया,
जानवरों को बगैर किसी जानवर के बनाया,
फरिश्तों को बगैर किसी फरिश्ते के बनाया,
फलों को बगैर किसी फल के बनाया,
दूध को बगैर दूध के बनाया लेकिन इन सारी चीजों को खुदा अब दुनियॉ की चीजों से होता हुआ दिखलाते हैं ताकि इन चीजों के रास्ते से क़दरत को समझा जाये और कुदरत के रास्ते से दुनियॉ के बनाने वाले को जाना जाये कि बनाने वाला कौन है ? कुदरत दुनियॉ की चीजों को समझने के लिये नही है बल्कि कुदरत को समझने के लिये दुनियॉ की चीजें है अगर आदमी दुनियॉ की चीजों से कुदरत को नही समझेगा तो ये दुनियॉ की चीजों का शिकार हो जायेगा और जब आदमी दुनियॉ की चीजों का शिकार हो जाता है तो कुदरत तक पहॅुचने का रास्ता बन्द हो जाता है फिर आदमी चीजों मे ही अटक जाता है और इतना

अटक जाता है कि अपनी सारी जरूरतों को हक तआला से पूरा होने क बजाये दुनियॉ की चीजों से पूरा होना समझता है कि मेरी जरूरत चीजों से पूरी हो रही है, जब जरूरत का चीजों से पूरा होना इन्सान के दिमाग मे आ जाता है तो इसके दिल मे चीजों का यकीन पैदा हो जाता है। आदमी जब कुदरत को छोड़कर दुनियॉ की चीजों की तरफ मुतवज्जाह होता है तो कुदरत से दूर हो जाता है, आज हमे जो कुछ ऑखों से होता हुआ नजर आ रहा है इस सबकी बुनियाद कुदरत है, ये नजर आने वाला सारा सामान सिर्फ कुदरत को समझने के लिये बनाया गया है ताकि हम इन चीजों को देखकर खुदा तक पहुॅचे। ये बात भी हमेशा याद रखना कि बनी हुई चीजों को जितना बनाने वाला जानता है उतना कोई और नही जानता, खुदा ने मूसा अलै0 के किस्से मे यही बात समझायी है कि

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! तुम्हारे हाथ मे क्या है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, लाठी।

खुदा ने पूछा ! किसकी है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, मेरी।

खुदा ने पूछा ! इससे क्या होता है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, टेक लगाता हूॅं, पत्ती तोड़ता हूॅं, बकरी हकाता हूॅं।

खुदा ने कहा ! इसे जमीन पर फेंक दो।

मूसा अलै0 ने उस लाठी को जमीन पर फेंक दिया, जमीन पर फेंकते ही वो लाठी सॉप बन गयी,

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! ये क्या है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, सॉप।

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! किसका है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, आपका।

खुदा ने मूसा अलै0 से पूछा ! इससे क्या होता है ?

मूसा अलै0 ने जवाब दिया, आदमी डर जाता है, भाग जाता है, जिसे काटता है उसके जिस्म मे जहर दाखिल हो जाता है। आज हर आदमी अपने सबब की यही तीन बाते बतलाता है, 1 उसकी जात 2 उसकी मल्कियत 3 उसकी सिफात, मिसाल के तौर पर किसी दुकानदार से उसकी दुकान के बारे मे पूछो ! ये क्या है ? जवाब देगा दुकान,

ये किसकी है ? जवाब देगा मेरी है,

इससे क्या होता है ? जवाब देगा इससे हमारा और हमारे घर वालों के खाने का इन्तेजाम होता है, कपड़े मिलते है, खर्च करने को पैसे मिलते हैं, इसी तरह खेती वाला जमीन के बारे मे, नौकरी वाला आफिस के बारे मे, गर्ज हर आदमी अपने अपने सबब के बारे मे आज वही जवाब देता है जो मूसा अलै0 ने दिया था कि लाठी है, मेरी है और इससे ये ये होता है, यहॉ खुदा ने मूसा अलै0 को अपनी कुदरत समझायी और कुदरत समझाकर कहा कि जाओ फिरऔन को मेरे बारे मे समझाओ। मूसा अलै0 जब फिरऔन को खुदा के बारे मे समझाने चले तो उन्हे अपनी बीबी और बकरियों का ख्याल आया कि उनका क्या होगा ? उनके दिल मे आने वाले इस ख्याल पर खुदा ने इनसे कहा ! मूसा लाठी को पत्थर पर मारो।

मूसा अलै0 के पत्थर पर लाठी मारने पर पत्थर के अन्दर से एक पत्थर निकला, खुदा ने फिर हुक्म दिया ! इस पर भी लाठी मारो फिर लाठी मारी तो उस पत्थर के अन्दर से भी पत्थर निकला, खुदा ने फिर हुक्म दिया इन्होने फिर लाठी मारी तो उस पत्थर मे एक कीड़ा मुॅह मे हरी पत्ती खाता हुआ नजर आया, यहॉ खुदा ने मूसा अलै0 को अपनी रूबूबियत समझायी कि हमारे अलावा मेरी मख्लूक को पालने वाला कोई दूसरा नही है, मैं रब हूॅ। ये खुदा की हिक्मत है कि कुदरत को समझाने के बाद अपनी रूबूबियत समझायी, पहले रूबूबियत नही समझायी बल्कि पहले कुदरत समझायी कि लाठी को फिकवाकर कुदरत समझायी और पत्थर को पिटवाकर रूबूबियत समझायी तो जब नबी को कुदरत और रूबूबियत समझायी जा रही है, क्या हमे

तुम्हे इसके बगैर खुदा समझ मे आ जायेगा ? इसलिये याद रखना जो कुदरत को ना समझेगा वो रब को ना समझ पायेगा फिर ये सबब के फित्ने मे फंसकर सबब को ही अपना माबूद बनायेगा,
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे दुकान से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे खेती से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे नौकरी से पालता है।
कोई कहेगा ! पालने वाला तो अल्लाह है पर वो मुझे मजदूरी से पालता है।
कुदरत को ना समझने की वजह से आज हर जगह इन्सान शिर्क बोलता है, इन्सान को शिर्क से निकालने के लिये अल्लाह ने अपनी कुदरत को बतलाया कि बगैर मर्द और औरत के आदम अलै0 को, बगैर औरत के दादी हव्वा को और बगैर मर्द के ईसा अलै0 को बनाकर रहती दुनियॉ तक अपनी कुदरत समझायी है कि हम जो कुछ भी करते हैं अपनी कुदरत से करते है कायनात के हर सबब को हमने अपनी कुदरत से बनाया है और कयामत लाकर हर सबब को खत्म भी हम अपनी कुदरत से करेगें और फिर आदम अलै0 से लेकर आज तक हजारों साल मे जो कुछ बनाया है पलक झपकते ही सब कुछ बगैर सबब के एक साथ कुदरत से बना देगें, इसलिये सबब सिर्फ सबब हैं कुदरत नही है।
अल्लाह ने सारे सबब को बनाकर हमे सबब के फित्ने से बचाने के लिये لَا إِلَٰهَ मे यही बतलाया कि हर चीज को मैने ही बनाया है और मैं ही कह रहा हूँ कि इनसे कुछ नही होता, जिस तरह हुकूमत ने हजार का नोट बनाया था और अब हुकूमत ने ये कह दिया है कि इससे कुछ नही होता ये सिर्फ कागज का एक टुकड़ा है। अब अगर तुम इस हजार के नोट से चावल खरीदने जाओगे तो चावल नही मिलेगा बल्कि पुलिस की लाठी जरूर मिलेगी क्यों कि इन हजार के नोटों को रखना जुर्म है, इसी तरह अल्लाह ने सारे सबब को बनाकर हमे यही बतलाया कि मैने ही बनाया है और मैं ही कह रहा हूँ कि इनसे कुछ नही होता,
जमीन मैने बनायी और मैं कह रहा हूँ कि जमीन से कुछ नही होता,
दरख्त मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि दरख्त से कुछ नही होता,
इन्सान मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि इन्सानों से कुछ नही होता,
जानवर मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि जानवरों से कुछ नही होता,
आसमान मैने बनाये और मैं कह रहा हूँ कि आसमानों से कुछ नही होता,
सूरज, चाद व सितारों को मैने बनाया और मैं कह रहा हूँ कि सूरज, चॉद व सितारों से कुछ नही होता।
आदमी को सबसे बड़ा नुकसान उसकी ऑखो के देखने से पहुँचता है कि जो काम अल्लाह के करने से हो रहा है, ऑख उसे मख्लूक से होना दिखलाती है कि
गल्ला होता है कुदरत से और ऑख देखती है जमीन से,
बच्चा होता है कुदरत से और ऑख देखती है औरत से,
सेहत मिलती है कुदरत से और ऑख देखती है दवा और डाक्टर से,
बारिश होती है कुदरत से और ऑख देखती है बादल से,
अगर आदमी अपनी ऑख को नही समझा तो सबसे बड़ा नुकसान इसी से है, खुदा ने ऑखों के फित्ने से बचाने के लिये आदमी को जबान दी है कि ऑख देख रही है गल्ला जमीन से हो रहा है और जबान भी अगर यही कहे कि गल्ला जमीन से हो रहा है तो आदमी का जहन जमीन से होने का बनेगा फिर दिमाग दिल मे जमीन से होने का यकीन पैदा करेगा। इसलिये इन्सान की सबसे बड़ी दुश्मन खुद उसकी नजर है और इस नजर पर हम इन्सानों का कोई काबू नही क्यों कि ऑख के नीचे जबान है, इसलिये जब
ऑख देखे गल्ला जमीन से हो रहा है तो जबान बोले कि गल्ला जमीन से नही कुदरत से हो रहा है,
ऑख देखे बच्चा औरत से हो रहा है तो जबान बोले कि बच्चा औरत से नही कुदरत से हो रहा है,

ऑख देखे सेहत दवा और डाक्टर से मिल रही है तो जबान बोले कि सेहत दवा से नही कुदरत से मिल रही है,
ऑख देखे बारिश बादल से हो रही है तो जबान बाले कि बारिश बादल से नही कुदरत से हो रही है, ऑख देखती जाये मख्लूक से और जबान बोलती जाये खालिक से, आदमी का ये बोलना ऑख के फित्ने से बचाकर कुदरत की तरफ ले जायेगा। जब तक इन्सान जबान का ऑख के मुकाबले पर नही लायेगा उस वक्त तक ऑख के फित्ने से नही बच पाएगा, इन्सान को ऑख की खता से सिर्फ जबान बचा सकती है। कान पर ऑख की देखी का असर नही होता बल्कि कान जबान की बात को सच मानता है हदीस मे है कि रोजाना सुबह बदन के हर आजा जबान से पनाह मॉगते है, इसलिये ऑखों से जो दिखलायी दे रहा है क़दरत के मुकाबले पर जबान से उसका इन्कार करो। अपनी ऑखों को समझाओ कि तू गलत देखती है ना गल्ला जमीन से है, ना पानी बादल से है, ना बच्चा औरत से है, ना सेहत दवा और डाक्टर से है बल्कि जबान कहे कि ये सब अल्लाह से है। अल्लाह ने मख्लूक को देखने के लिये इन्सान को ऑख दी और बोलने के लिये जबान दी, ऑख रब से होना नही देखती सबब से होना देखती है पर जबान इन्सान के ताबेअ है इससे चाहे रब से होना बुलवा दो या ऑख की ताईद मे बोल जाओ, बस यही इन्सान का इम्तेहान है अगर ऑख की ताईद मे बोलोगे तो चाह जितनी तस्बीह पढ़ो, चाहे जितनी नमाज पढ़ो पर रब तक न पहुँच पाओगे। जब ऑख ने गलत देखा है और जबान ने भी गलत बोल दिया फिर कान ने भी गलत सुना तो तीनों आजा की गलती पर दिमाग ने भी गलत सोचा, दिमाग के इस गलत ख्याल के दिल मे दाखिल होने से सबब का यकीन दिल मे पैदा हो गया, अब रही बात कि ये गलत यकीन पैदा होना शुरू कहॉ से हुआ ?
इसकी शुरूआत हुई ऑख से और खत्म हुई दिल पर तो इस तरह बावजूद मुसलमान होने के हमारे अन्दर चीजों का यकीन पैदा हो गया, इसलिये मौत तक जबान को ऑख के खिलाफ रखो, अल्लाह से होने और सबब से ना होने को लोगों को खूब समझाओ। इन्सान को कुदरत के मुकाबले पर चीजों से होने का इन्कार करना ही कामयाब बनायेगा, ये पहली आवाज है जिसे हुज़ूर सल्ल0 ने मक्का मे लगायी कि ऐ लोगो ! बनी हुई चीजों से परवरिश नही होती, हर एक की परवरिश खुदा अपनी कुदरत से करते हैं इसको एक दूसरे से बोलो तो कामयाब हो जाओगे वरना बनी हुई चीजों को अपना माबूद बनाये रहोगे और कदम कदम पर नाकामियों का शिकार होते रहोगे।
खुदा ने हमको सबब के फित्ने से बचाने के लिये لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ मे पहले إِلَّا اللّٰهُ नही कहा बल्कि لَا إِلٰهَ पहले कहा है इसलिये कि ये सब बनी हुई चीजें है, बनी हुई चीजें जिस तरह अपने बनने मे खुदा की मोहताज हैं उसी तरह ये अपने बाकी रहने मे भी अपने बनाने वाले की मोहताज है। जब बनाने वाले के बगैर ये बन नही सकती तो बनाने वाले के बगैर बाकी भी नही रह सकती और जिस तरह ये अपने बनने व बाकी रहने मे अपने बनाने वाले की मोहताज है उसी तरह अपने अपने करने मे भी ये अपने बनाने वाले की मोहताज है, ऐसा नही है कि
जिस जमीन को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो जमीन अब खुद गल्ला पैदा करने लगे या
जिन दरख्तों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो दरख्त अब खुद फल पैदा करने लगे या
जिन जानवरों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो जानवर अब खुद दूध देने लगे या
जिन औरतों को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो औरतें अब खुद बच्चे पैदा करन लगे या
जिस सूरज को खुदा ने अपनी कुदरत से बनाया हो वो सूरज अब खुद रौशनी देने लगे,
ये सारी चीजें खुदा के बगैर कुछ नही कर सकती पर इन्सान इन चीजों के फित्ने से बच नही पाता है क्यों ? इसलिये कि इन्सान को सबब का बनाने वाला खुदा नजर नही आता और खुदा ने जिस कुदरत से सबब को बनाया है वो कुदरत भी नजर नही आती इसलिये इन्सान सबब के फित्ने मे फंस जाता है। खुदा ने इन्सान को इस फित्ने से बचाने के लिये ही सबसे पहले لَا إِلٰهَ कहा कि मैं बनाने वाला हूॅ मै ही कह रहा हूॅ किसी से कुछ नही हो सकता, हॉ इतनी बात जरूर है कि मै तुम्हारी आजमाईश के लिये कुदरत से करूॅगा और सबब से दिखाऊॅगा कि
गल्ला पैदा करूॅगा मैं और दिखाऊॅगा जमीन से,
बारिश करूॅगा मैं और दिखाऊॅगा बादल से,

फल पैदा करूँगा मैं और दिखाऊँगा दरख्त से,
बच्चा पैदा करूँगा मैं और दिखाऊँगा औरत से,
अब तुम्हारी आजमाईश ये है कि ये देखकर तुम इनका होना खुदा से कहते हो या जहाँ से दिख रहा है उससे कहते हो, अब इस आजमाईश से तुम्हे لَا إِلَٰهَ का जुम्ला फित्ने से निकालेगा, इस जुम्ले के अलावा कोई और जुम्ला आदमी को सबब के फित्ने से नही बचा पाएगा क्यों कि चीटी से लेकर जिब्रील तक, औलिया से लेकर अम्बियाँ तक, मैने सबको बनाया है और मैं कह रहा हूँ कि किसी से कुछ नही होता, इसलिये हर चीज का कुदरत के मुकाबले पर सबसे पहले इन्कार करो अगर इन्कार नही करोगे तो إِلَّا اللهُ तक कैसे पहुँवोगे इसलिय कि जो बनी हुई चीज का इन्कार नही करेगा वो إِلَّا اللهُ को तस्लीम नही करेगा, बस जुबान से إِلَّا اللهُ कहता रहेगा और अपनी सारी जरूरतों को मख्लूक से जोड़ता रहेगा कि
दुकानदार कहेगा मेरी जरूरतें दुकान से पूरी होती,
खेत वाला कहेगा मेरी जरूरतें जमीन से पूरी होती,
नौकरी वाला कहेगा मेरी जरूरतें नौकरी से पूरी होती,
कारखाने वाला कहेगा मेरी जरूरतें कारखाने से पूरी होती,
अपनी जबान से ये बोल बोलकर अल्लाह से दूर होता चला जायेगा और मख्लूक ए मौला के करीब होता चला जायेगा, इसलिये सबसे बुनियादी जुम्ले दो है एक لَا إِلَٰهَ और दूसरा إِلَّا اللهُ ये बुनियाद जिसकी सही हो गयी वो हुज़र सल्ल0 वाले अमल को सबब बनाकर खुदा की कुदरत से फायदा उठायेगा और ये दोनो बुनियादें जिसकी सही नही होगी वो सबब मे फंस जायेगा कि देखने मे तो ये हुजूर सल्ल0 वाले अमल करता हुआ नजर आयेगा मगर ये अमल सबब के यकीन के साथ होगा कि देखने मे तो ये अमल की सूरत होगी पर अमल की सीरत ना होगी और खुदा किसी को सूरत पर कामयाब नही करता है सीरत पर कामयाब करता है, अमल की सीरत لَا إِلَٰهَ और अमल की बुनियाद है إِلَّا اللهُ अगर ये बुनियाद नही है तो मुसलमान ये कहता फिरेगा कि
करने वाला तो अल्लाह है मगर दुकान भी होनी चाहिये,
करने वाला तो अल्लाह है मगर दवा और डाक्टर भी होना चाहिये,
करने वाला तो अल्लाह है मगर बारिश के लिये बादल भी होना चाहिये फिर ये हर जगह शिर्क बोलेगा हालाँकि अल्लाह को बारिश के लिये बादल की जरूरत नही है, नूह अलै0 की कौम के लिये बगैर बादल के बारिश की है,
रौशनी के लिये सूरज की जरूरत नही है, सहाबा की लाठी मे रौशनी दी है,
बच्चे के लिये औरत की जरूरत नही है, दादी हव्वा को बगैर औरत के पैदा किया है,
गल्ले के लिये जमीन की जरूरत नही है, सहाबा की चक्की मे बगैर जमीन के गल्ला दिया है,
दूध के लिये जानवर की जरूरत नही है, हुजूर सल्ल0 के प्याले मे बगैर जानवर के दूध दिया जिसे 71 या 72 लोगों ने पिया, अल्लाह की जात मख्लूक से बेनियाज है वो जो कुछ करता है अपनी कुदरत से करता है, जब वो बगैर दवा के बीमार कर सकता है तो क्या बगैर दवा के ठीक नही कर सकता ? मगर ये बात यकीन वालों के समझ मे आयेगी सबब वालों के समझ मे नही आयेगी कि बनी इसराईल को अल्लाह ने चालीस साल तक आसमान से खाना उतार कर खिलाया, क्या मतलब है इसका ? इसका मतलब ये है कि
हम चाहें तो ऊपर से उतार कर खिलायें या जमीन फाड़कर खिलायें,
हम चाहें तो यूनुस अलै0 को मछली के पेट मे खिलायें या हम चाहें तो ईसा अलै0 को आसमानों के ऊपर बुलाकर खिलायें, इसलिये हमारी रूबूबियत को समझो कि रब हम हैं, आज तुमने हमारी रूबूबियत को सबब के साथ जोड़ दिया और खुद सबब के साथ जुड़कर हमारी कुदरत से महरूम हो गये। रब हम हैं ये पहला जुम्ला है रूबूबियत का اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ मे पहला जुम्ला है कि रब हम हैं सिर्फ तुम्हारे नही बल्कि सारी मख्लूकात के रब हम हैं, मेरे अलावा कोई रब नही है पर हमने

हजारों रब तस्लीम कर लिये क्यों ? इसलिये कि आज हमने बनी हुई चीजों का कुदरत के मुकाबले पर इन्कार नही किया तो إِلَّا اللّٰهُ को तस्लीम नही किया बस जुबान पे إِلَّا اللّٰهُ और अपनी सारी जरूरतों को मख्लूक से जोड़ दिया।
इसलिये हम इसको समझने की कोशिश करें कि सब कुछ अल्लाह के करने से हो रहा है, हमे जो चीजों से होता हुआ नजर आ रहा है ये सारा का सारा हमारी आजमाईश के लिये है कि जब खुदा जिब्रील अलै0 के बगैर इब्राहिम अलै0 को आग से बचा सकता है तो क्या जिब्रील अलै0 के बगैर वो नबियों के पास वहय नही भेज सकता ? जब जिब्रील अलै0 के बगैर खुदा आग को बाग बना सकता है तो जिब्रील अलै0 के बगैर खुदा क्या नही कर सकता है ? अल्लाह ने जगह जगह नबियों के साथ सबब हटाकर अपनी कुदरत का इस्तेमाल किया,
बिलकीस को हिदायत देने के लिये खुदा ने परिन्दे का इस्तेमाल किया, बिलकीस की हिदायत के लिये खुदा ने सुलेमान अलै0 को इस्तेमाल नही किया, इस वाकिये से अल्लाह ने ये बतलाया कि हिदायत के लिये हम नबी के मोहताज नही है नबी हमारे मोहताज है, अल्लाह ने हम पर रहम किया कि हर जगह अपनी कुदरत को समझाया ताकि हम सबब के फित्ने से बचे। उसने सबब के फित्ने से बचाने के लिये हमे अहकामात दिये है कि हम उसकी कुदरत से लें, अब एक रास्ता है सबब से लेने का ये अवामुन्नास का रास्ता है और एक रास्ता है अहकामात के जरिये लेने का कि ये रास्ता है नबियों का,
हुक्म के रास्ते से मूसा अलै0 ने दरिया से रास्ता लिया है,
हुक्म के रास्ते से ही मूसा अलै0 ने मैदान ए तीह मे अल्लाह से खाना लिया है,
हुक्म के रास्ते से ही मूसा अलै0 ने पत्थर से पानी लिया है ओर सहाबा किराम के तो सीरत की किताबों मे बेशुमार किस्से हैं कि प्यास की हाजत पर बगैर सबब के जमीन को फाड़कर पानी लिया है,
जेल मे हाजत हुई नहाने की तो जेल मे बादल आकर पानी बरसा गया है,
कैद मे अगूंर खाने की चाहत पर बगैर सबब के अल्लाह से कोठरी मे अगूंर का खोशा लिया है,
भूख की हाजत पर बगैर सबब के तन्दूर से रोटी और चक्की से आटा लिया है,
जब तक हमारे जहन मे कुदरत नही आयेगी तब तक हम सबब की गुलामी से नही निकल पायेगें और जब तक हुक्मों पर खुदा से मिलने का यकीन नही आयेगा तब तक हम हुक्मों से लेने वाले नही बन पायेगें। हुक्मो से लेने की पूरी लाईन कुरआन मे है, कुरआन के सारे हुक्म अल्लाह से लेने के लिये है और सबब से लेने की लाईन जमीन पर फैली हुई। कुदरत की सिफत अल्लाह की जात मे है और अल्लाह ने अपनी सिफत ए कुदरत को अपने वादों के साथ जोड़ रखा है और वादे हुक्मों पर कर रखे है, जब आदमी अल्लाह पर यकीन करते हुए हुक्म को पूरा करता है तो खुदा अपनी कुदरत को जाहिर करके वादा पूरा करता है, खुदा वादा खिलाफ नही है।
अल्लाह ने कयामत तक सबसे ज्यादा वादे لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को समझाने के साथ किये है, अम्बिया और सहाबा की सीरत मे यही मिलता है कि कलिमे को समझाने पर हो सबसे ज्यादा वादे पूरे हुए है, इसलिये सबसे पहले सबब से कुदरत को समझो क्यों कि कुदरत को समझे बगैर आदमी शिर्क से नही निकल पायेगा पर सबब से कुदरत को हम इसलिये नही समझना चाह रहे हैं क्यों कि जब हमे
हर साल जमीन से गल्ला मिल रहा है तो फिर हम क्यूॅं समझे कि गल्ला कुदरत से मिल रहा है,
औरत से बच्चा मिल रहा है तो फिर हम क्यूॅं समझे कि बच्चा कुदरत से मिल रहा है,
जब दवा से इन्सान ठीक हो रहा है तो फिर हम क्यूॅं समझे कि इन्सान कुदरत से ठीक हो रहा है।
आज कुदरत छोड़कर हम दवा पर आ गये,
कुदरत छोड़कर हम औरत पर आ गये,
कुदरत छोड़कर हम जमीन पर आ गये,
कुदरत छोड़कर हम बागों पर आ गये कि कुदरत को छोड़ दिया और सबब से चिमट गये।
जरा सोचो कि जब यूसुफ अलै0 को कुएँ मे डाला गया तो खुदा ने उनकी सबब से मदद की या कुदरत से मदद की ?

जब इब्राहिम अलै0 को आग मे डाला गया तो खुदा ने उनकी सबब से मदद की या कुदरत से मदद की ? वहॉ तो जिब्रील भी आया तो उसका भी इन्कार कर दिया।
जब इब्राहिम अलै0 ने बीबी बच्चे को जगंल मे डाला, उनक खाने पीने का इन्तेजाम खुदा ने सबब से किया या कुदरत से किया ?
इसी तरह जब इब्राहिम अलै0 ने इस्माईल अलै0 को जिब्ह करना चाहा तो इस्माईल अलै0 की जगह पर आसमान से दुंबे का इन्तेजाम खुदा ने सबब से किया या कुदरत से किया ?
जो खुदा आसमान फाड़कर दुंबा उतार सकता है, जमीन फाड़कर जमजम निकाल सकता है तो ऐसा कौन सा काम है जो खुदा नही कर सकता ? मगर ये कुदरत सबब वालों की समझ मे नही आयेगी बल्कि ये कुदरत नबियों वाले अमल से समझ मे आयेगी, कुदरत के समझने का इसके अलावा कोई और रास्ता नही है। ये सारे किस्से कुरआन मे हैं और कुरआन नबियों की सीरत है इसमे ये बतलाया गया है कि खुदा ने इन्सान को सबब का मोहताज नही बनाया है कुदरत का मोहताज बनाया है अगर इन्सान अपने को सबब का मोहताज समझेगा कुदरत के मुकाबले पर तो कदम कदम पर नाकाम होगा। अल्लाह ने अपनी रूबूबियत को समझाने के लिये कुरआन मे इब्राहिम अलै0 का वाकिया नकल किया कि इब्राहिम अलै0 से कहा तुम हाजरा और इस्माईल को जगंल मे डालो ताकि हम कयामत तक आने वाले इन्सानों को ये बात समझा द कि रब हम हैं, रब कोइ दूसरा नही है, इन्हे जगंल मे डालो कि इब्राहिम तुम इस्माईल के बाप हो रब नही हो, इब्राहिम तुम हाजरा के खाविन्द हो रब नही हो, हम खाविन्द के बगैर औरत को पालते हैं और बाप के बगैर बच्चे को पलते हैं, हॉ खाविन्द और बाप से पलता हुआ जरूर दिखलाते है, हम दुनियॉ मे इसका सुबूत देगें कि बाप बाप है रब नही है और खाविन्द खाविन्द है रब नही है। हम किसी को किसी असबाब से नही पालते बल्कि अपनी कुदरत से पालते हैं,
जो खुदा हाजरा और इस्माईल को जगंल मे पाल रहा था, वो खुदा आज जमीन फाड़कर पानी नही निकाल सकता ?
जो खुदा बनी इसराईल को मैदान ए तीह मे आसमान से खिला चुका है वो खुदा आज हमे आसमान से नही खिला सकता ?
जो खुदा ईसा अलै0 के हवारीन को आसमान से खिला चुका है वो खुदा आज आसमान से नही खिला सकता ?
जो खुदा ईसा अलै0 को आज भी आसमान पर खिला रहा है वो खुदा आज हमे जमीन पर नही खिला सकता ?
जो खुदा मरियम अलै0 को आसमान से फल खिलाता था वो खुदा आज आसमान से हमे फल नही खिला सकता ?
जो खुदा यूसुफ अलै0 को ख्वाब मे मुल्क व माल दे सकता है वो खुदा आज हमे मुल्क व माल नही दे सकता ?
जिस खुदा ने बद्र मे सहाबा की मदद के लिये आसमान से फरिश्ते उतारे वो खुदा आज हमारे लिये फरिश्ते नही उतार सकता ?
ऐसा कौन सा काम है जो खुदा आज नही कर सकता है।
ये नबियों के किस्से हमारी रहबरी के लिये है कि अगर तुम इब्राहिम अलै0 जैसा ईमान बनाओगे तो जो मदद हमारी इब्राहीम के साथ थी वैसी ही मदद हम हर ईमान वाले की करेगें अगर लेने वाले को लेना नही आये तो ये अलग बात है वरना देने वाले मे कोई कमी नही आयी है, वो आज भी अवामुन्नास को सबब के रास्ते से हर चीज दे रहा है, कोई दूसरा नही दे रहा है खुदा ही सबको दे रहा है पर कुदरत से लेन के लिये नबियों वाले अमल है और ये भी याद रखना कि सबब के रास्ते से चीजो का मिलना वक्ती और दुनियॉ मे है पर कुदरत के रास्ते से चीजो का मिलना अब्दी है कि दुनियॉ व आखिरत दोनो जगह मिलेगा और हमारी सोच व गुमान से ज्यादा मिलेगा।
इसलिये ये बात हर वक्त अपने आपको समझाते रहा करो कि करने वाली जात सिर्फ अल्लाह की है और नबियों की सीरत पर खूब गौर किया करो कि
जब यूसुफ अलै0 को जुलैखा ने कमरे मे बन्द किया तो उनकी मदद सबब से हुई या कुदरत से हुई ? या
जब ईसा अलै0 को शहोद करने के लिये कमरे मे बन्द किया गया और उन्हे जिन्दा आसमान के ऊपर उठा लिया गया तो उनकी मदद सबब से हुई या कुदरत से हुई ? जब तक हमारा यकीन सबब से निकलकर कुदरत पर नही आयेगा हम सबब मे अटके रहेगें अगर हम ये चाहें कि सबब भी हो और कुदरत भी हो तो ये कैसे होगा।

ये बैतुल्लाह यादगार ए इब्राहीमी है, जहॉ हाजरा और इस्माईल को जमीन फाड़कर जमजम दिया और इब्राहीम अलै0 को आसमान फाड़कर दुंबा उतार कर दिया है, ये सबब से नही किया कुदरत से किया है और इसीलिये हज को फर्ज किया ताकि हाजी मक्का आकर अपने यकीन को सबब से निकालकर अल्लाह तक पहुॅचाये और खुदा की कुदरत से फायदा उठाये। ये बैतुल्लाह हजरत हाजरा, हजरत इस्माईल और हजरत इब्राहीम अलै0 इन तीनों की याद मे बना है इसलिये यादगार ए इब्राहीमी है, ये बैतुल्लाह से लेकर मिना तक इन तीनों की याद के लिये है कि जमीन फाड़कर जमजम निकाला और जिब्ह करने के लिये आसमान फाड़कर दुंबा उतारा, ये ऐसी मुकददस जमीन हो गयी कि हम अपना घर भी यहीं बनायेगें और सारी दुनियॉ को यहॉ बुलायेगें, बुलाने मे इस्तेमाल इब्राहीम को करेगें और वो बोल मॉ के पेट मे बन रहे बच्चे से लेकर आलम ए अर्वाह तक हम पहुॅचायेगें, खुदा ने इस आवाज को हर आलम मे अपनी कुदरत से पहुॅचाया फिर जिसने इस आवाज पर लब्बैक कहा वो ही हज पर जायेगा तो खुदा ने ये आवाज इन्सानों तक सबब से पहुॅचाया या कुदरत से पहुॅचाया ? बस बात इतनी है कि हमने कुदरत से लेने की कोशिश नही की है, खुदा तो हर वक्त देने के लिये तैयार है ऐसा नही है कि नबियों के बाद उसने अपनी कुदरत से देने का रास्ता बन्द कर दिया हो, कुदरत से लेने का रास्ता कयामत तक खुला हुआ है और वो रास्ता है नमाज।
अल्लाह जल्ला शानुहू ने इन्सानों को कामयाब करने के लिये चीजों के मुकाबले पर ही नमाज दी है, इन्सानों की राहत, इज्जत, सुकून, इत्मेनान और सेहत का तआल्लुक अल्लाह ने नमाज से जोड़ा है और जिल्लत, तकलीफ, परेशानी, बेचैनी और बीमारी का तआल्लुक अल्लाह ने चीजों से जोड़ा है, चूॅकि चीजें मुर्दार हैं और ये बात सभी जानते हैं कि मुर्दार का इस्तेमाल करने वाला बीमारियों और परेशानियों मे मुब्तिला होता है और नमाज कायनात के मुकाबले पर अल्लाह की महबूब तरीन मख्लूक है, नमाज का अल्लाह की महबूब तरीन मख्लूक होने का पता इस बात से चलता है कि हुजूर सल्ल0 को अल्लाह जल्ला शानुहू की बारगाह मे पहुॅचने का सिर्फ एक बार मौका मिला है वो भी मेराज मे लेकिन नमाज को अल्लाह की बारगाह मे पहुॅचने का शर्फ हर वक्त हासिल है, इसो शर्फ की वजह से नमाज नमाजी को बुलन्दी तक पहुॅचा देती है इसलिये कि नमाज ही मोमिन की मेराज है, गैब की ताकतवर चीजों में नमाज का शुमार है,
नमाज के लिये सफे सीधी करते ही आसमानों के दरवाजे, जन्नत के दरवाजे और जहन्नम के दरवाजे खुल जाते हैं, अल्लाह जल्ला शानुहू और उस नमाजी के दरमियान के पर्दे हट जाते हैं और जन्नत की हूरें ज़मीन की तरफ झांकतीं हैं।

(हाकिम जिल्द-3-494)

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज आसमानों की कुंजी है, (तर्गीब)

अल्लाह रब्बुल इज्जत के यहां नमाज की दुआ और बददुआ दोनो मकबूल हैं, (तर्गीब)

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने नमाज को नफा और फायदा हासिल करने के एतबार से अपनी आंखों की ठंडक बतलाया है और नुकसान के एतबार से इससे अल्लाह की पनाह चाही है।

''रसूलुल्लाह सल्ल0 की ये दुआ कि ''ऐ अल्लाह मै नफा न पहुंचाने वाली नमाज से आपकी पनाह चाहता हूं''

(अबुदाऊद शरीफ-1549)

अम्बिया अलै0 दुनियॉ मे रहकर इन्सानो को न दिखने वाली चीजें, न दिखने वाला फरिश्तो का निजाम और न दिखने वाले आलमों को समझाते थे इसी को गैब कहते हैं और गैब की चीजों को समझाना हो अम्बिया अलै0 का काम होता था, इन्सान गैब से फायदा उठाने वाला बन जाये इसके लिये हर नबी इन्सानों को सबसे पहले ईमान सिखलाते थे। यही काम रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भी किया और आपके बाद यही काम सहाबा किराम रजि0 ने भी किया लेकिन ईमान को न सीखने की वजह से आज का मुसलमान रसूलुल्लाह सल्ल0 की बातों को गैब से जोड़ने के बजाये जाहिर से जोड़ देता है, नमाज को लेकर भी यही हुआ कि आज मुसलमान नमाज के अमल को ही नमाज समझ रहे है हांलाकि नमाज भी गैब की चीजों मे है पर मुसलमान नमाज के अमल को ही नमाज समझ रहा है, आज बयान करने वाले नमाज को कसरत और योग बतला रहे है अब अगर

इन बयान करने वालों से कोई ये सवाल करे कि जब नमाज कसरत और योग है तो क्या नमाज का अमल करने वाला नमाज की बददुआ से बच जाता है ? इसलिये जरूरत इस बात की है कि सबसे पहले अमल को समझा जाये कि अमल किस को कहते हैं फिर नमाज को समझना कि नमाज क्या है ?

अमल किसको कहते है

इन्सानी जिस्म की सात चीजें ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह से होने वाली हरकत को अरबी जुबान मे अमल, ऊर्दू जुबान मे हरकत, हिन्दी जुबान मे कर्म और अग्रेजी जुबान मे function कहते है। जिस तरह मोबाईल का Key Pad मोबाईल का जिस्म यानी parts of body है, जिससे Call करने, मैसेज Message लिखकर या Whatsapp से Image या Mail को Send करते है ठीक इसी तरह हमारे जिस्म की इन सात चीजों से होने वाली हरकतें आसमानों के ऊपर Send हो जाती है और सुबूत {Record} के तौर पर इन हरकतों को लिखने वाले फरिश्ते (video clip बनाने वाले फरिश्ते) फज्र और असर की नमाज के बाद रोजाना दो मर्तबा आसमानों के ऊपर ले जाते हैं ताकि कयामत के दिन इन्सानों को उनके अमल दिखलाये जायें। अब रही बात कि ये करामन और कातबीन के लक्ब से पुकारे जाने वाले फरिश्ते इन्सानो के दायें और बायें कान्धों पर बैठकर आखिर क्या लिखते हैं ? हदीस की रौशनी मे दायें कान्धे पर बैठा हुआ फरिश्ता नेकी लिखता है और बायें कान्धे पर बैठा हुआ फरिश्ता बुराई लिखता है, अब रही बात कि नेकी और बुराई किसे कहते है ?

नेकी यानी अच्छाई

बहुत आसान जुबान मे इसे यूँ समझ लो कि ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को अल्लाह जल्ला शानुहू की मर्जी पर इस्तेमाल करना नेकी है इसलिये कि अल्लाह जल्ला शानुहू ने ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को अपनी कुदरत से बनाया है सिर्फ अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने के लिये।

बुराई यानी गुनाह

ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह का इन्सान का अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करना बुराई है यानी गुनाह है और गुनाह इसलिये है क्यों कि हर आजा के खालिक, मालिक और राजिक अकेले अल्लाह हैं, अल्लाह ने इन्हे बनाया था अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने के लिये पर इन्सान का अपनी मर्जी पर इन्हे इस्तेमाल कर लेना ही गुनाह है।

इन्सान की अपनी मर्जी और मंशा वाले अमल

किसी से मिली हुई चीज का अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करना उस वक्त ठीक होता है जब उस चीज के देने वाले ने उसका नफा और नुकसान ना बतलाया हो चूँकि अल्लाह जल्ला शानुहू ने ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को बनाया और इसके इस्तेमाल पर नफा और नुकसान भी बतलाया इसलिये हमे इनका इस्तेमाल अल्लाह जल्ला शानुहू की बात को सामने रखकर करना होगा अगर हमने अपने रब की बात को ना माना और इन चीजों को अपनी मर्जी पर इस्तेमाल किया

ऑख से जो चाहा देख लिया,

कान से जो चाहा सुन लिया,

जुबान से जो चाहा बोल लिया,

हाथ से जो चाहा कर लिया,

पैर से जिधर चाहा चल दिये,

दिमाग से जो चाहा सोच लिया और

शर्मगाह से जहॉ चाहा शहवत पूरी कर ली,

इन्हे अपनी मर्जी पर इस्तेमाल करने के नतीजे मे इन्सान के इसी जिस्म पर आसमानों के ऊपर से जिल्लतें, तकलीफें, परेशानियॉं और बीमारियॉं नाजिल होगीं, ऐसा इन्सान चाहे कलाई और चूने के पहाड़ मे मौजूद हो ये नतीजे उस तक पहुॅंच कर रहेगें, ऐसे इन्सान के पास चाहे जितना माल और सामान हो पर ये इन्सान इज्जत की तंगी, राहत मे तंगी, चैन व सुकूनं मे तंगी और सेहत मे तंगी के साथ यानी जिल्लत या बेइज्जती, तकलीफें, परेशानियौं और बीमारियौं के साथ दुनियॉं मे नाकामी वाली जिन्दगी के बाद कयामत मे अंधा उठाया जायेगा।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا

قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ

सूर ताहा 124

जिल्लत या बेइज्जती

किसी को हाकिम से जिल्लत या बेइज्जती का डर होगा, किसी को पुलिस से जिल्लत या बेइज्जती का डर होगा, किसी को गुंडे बदमाशों से जिल्लत या बइज्जती का डर होगा, किसी को रिश्तेदारों से जिल्लत या बेइज्जती का डर होगा, अक्सर इन्सान इनमे मुब्तिला मिलेगें।

तकलीफ

किसी के दॉंत मे तकलीफ होगी, किसी के पेट मे तकलीफ होगी, किसी के हाथ पैर मे तकलीफ होगी, किसी की हडडी मे तकलीफ होगी, किसी को पानी की तकलीफ होगी, किसी को बारिश की तकलीफ होगी, किसी को रहने की तकलीफ या खाने पीने की तकलीफ होगी, अक्सर इन्सान इनमे मुब्तिला मिलेगें।

परेशानियॉं

कोई बीबी से परेशान होगा, कोई औलादों से परेशान होगा, कोई दामाद से परेशान होगा, कोई पड़ोसी से परेशान होगा, कोई दुकानदार से परेशान होगा, कोई नौकर से परेशान या किरायदार से परेशान होगा, अक्सर इन्सान इनमे भी मुब्तिला मिलेगें।

बीमारियॉं

कोई शुगर मे, कोई कैंसर मे, कोई फीवर मे, कोई फैक्चर मे, कोई बवासीर मे, कोई मिर्गी या दौरा मे या कमजोरी और बदहजमी, अक्सर इन्सानो का यही हाल होगा।

ईमान को ना सीखने की वजह से आज हमे खुद पता नही है कि अल्लाह तआला ने हमारे जिस्म के आजा ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह वगैरह को क्यों बनाया है ? हॉं, सूरज को, चॉंद को, आग को आर हवा के बारे मे तो जानते हैं कि इन्हे क्यों बनाया गया है पर हमारी ऑख, कान जुबान, हाथ, पैर, दिमाग और शर्मगाह को क्यों बनाया इसकी खबर नही है, किसी से अगर आज ये पूछो कि अल्लाह तआला ने

आंख क्यों बनायी है ? जवाब देगा देखने के लिये ।

जुबान क्यों बनायी ? जवाब मिलेगा बोलने के लिए।

कान क्यों बनाये ? जवाब देगा सुनने के लिये।

दिमाग क्यों बनाया ? जवाब देगा सोचने के लिए।

हाथ क्यों बनाये ? जवाब देगा पकड़ने के लिए।

पैर क्यों बनाये ? जवाब देगा चलने के लिए।

शर्मगाह क्यों बनाई ? जवाब देगा शहवत पूरी करने के लिए।

हांलाकि ये बात झूठ है कि अल्लाह तआला ने ऑंख देखने के लिये बनायी है अगर आंख देखने के लिये बनायी होती तो फिर इन्सान इन आंखों से जो चाहे वो देखता कि चाहे किसी औरत को नंगा नहाता हुए देखे या मोबाईल मे नंगा नाच देखे पर ऐसा नही है बल्कि अल्लाह तआला ने आंख बना कर उसमें रोशनी भेजी तो रोशनी के साथ ही हुक्म भेजा कि आंख से ये देखना और ये नही देखना। जुबान बनायी फिर जुबान पर बोल भेजकर नबी के जरिये ये हुक्म भिजवाया कि जुबान के बोल से ये बोलना और ये ना बोलना कि तुम किसी की मॉं बहन को गाली दो या किसी की चुगली करो पर ऐसा नही है बल्कि अल्लाह तआला ने जुबान बना कर उसमें बोल भेजे तो बोल के साथ ही हुक्म भी भेजा कि जुबान से ये बोलना और ये नही बोलना, बदन के हर आजा से क्या करना है और क्या नही करना नबी के जरिये से हमे बतलाया। इन नेयमतों के बारे मे उस शख्स से पूछो जिसके पास

आंख हो पर उसमें रोशनी न हो,

कान हो पर अन्दर आवाज न जा रही हो,

जुबान हो पर मुंह से बोल न निकल पा रहे हो,

हाथ.पैर हों पर फालिज की वजह से हाथ पैर हरकत न करते हों,

दिमाग हो पर सोचने और समझने की सलाहियत न हो,

इन्सान को इन नेयमतों को अपनी मर्जी पर अमल करने का अख्तियार तो है पर अपनी मर्जी वाले अमल करने से इन्सान जिल्लतों, तकलीफों, परेशानियों और बीमारियों मे घिर जायेगा इसलिये कि अमल का तआल्लुक खुदा के गैबी निजाम से है।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

अल्लाह तआला का इर्शाद है ! खुश्की और तरी मे जो फसाद फैला है वो लोगो के आमाल का नतीजा है ताकि अल्लाह तआला उनको उनके आमाल का मजा चखाये अजब नही कि वो इन अमलो से रूक जाये।   (सूर रूम-41)

गैबी निजाम के तहत आसमानों के ऊपर से आने वाली जिल्लते, तकलीफे, परेशानियॉं और बीमारियॉं इन्सान की रूह पर आतीं है और जाहिर जिस्म पर होती है इसलिये कि आसमानों के ऊपर से इन्सानों के पास जो कुछ भी आयेगा वो इसकी रूह पर आयेगा और जाहिर इसके जिस्म पर होगा मिसाल के तौर पर जिस तरह मोबाईल मे जो कुछ भी आयेगा {Message – Image – Sound clip – Mail या Recharg वगैरह} वो जमीन से 350 किलोमीटर ऊपर मौजूद satellite से मोबाईल के अन्दर मौजूद सिमकार्ड पर आयेगा लेकिन जाहिर मोबाईल पर होगा, इसी तरह जो कुछ भी मोबाईल से satellite पर जायेगा वो सिमकार्ड की ही वजह से जायेगा इसलिये कि नेटवर्क का तआल्लुक सिमकार्ड से है, इन्सानों के आमाल का आसमानों के ऊपर जाना और उनके फैसलों का जमीन पर आना ये नीचे लिखी जा रही हदीस से भी समझा जा सकता है।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! हर आसमान पर हर इन्सान के लिए दो दरवाज़े हैं, एक दरवाजे से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाजे से उसकी रोजी उतरती है।   (किताबुल जनाइज़)

आमाल को आसमानों के ऊपर ले जाने वाले फरिश्तों के साथ हमारा क्या मामला होना चाहिये ?

हजरत अबुहुरैरा रजि0 फरमाते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! तुममे से हर एक अपने उन दोनो फरिश्तों से हया करे जो हर वक्त तुम्हारे साथ रहते हैं, जिस तरह तुम अपने दो नेक पड़ोसियों से हया करते हो उसी तरह ये दोनो फरिश्ते हया के इससे ज्यादा मुस्तहिक हैं क्योंकि ये रात-दिन तुम्हारे साथ रहते है। (शुअबुल ईमान)

अगर उन फरिश्तो के साथ हमने हया का मामला ना किया तो ये हमारे ईमान के लिये बड़े खतरे की बात है क्योंकि हुजूर सल्ल0 का इर्शाद है जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा का अमल हो जाता है तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है (मुस्लिम शरीफ) गुनाह करने वाला जब तक तौबा नही करता ईमान का नूर उसके दिल मे वापस नही आता।

इसीलिये हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने फरमाया ! गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दायें-बायें के फरिश्तों से शर्म न आयी तो ये उस किये हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।
(कंज-8-224)

फरिश्तो से हया ना करना इस बात की अलामत है कि हमे फरिश्तों की मालूमात है, फरिश्तों की मौजूदगी का यकीन नही है यानी फरिश्तों पर ईमान नही है मिसाल के तौर पर एक डाक्टर ने हमसे कहा कि तुम्हारे दिमाग मे कैन्सर है या तुम्हारे सर मे टियूमर है लिहाजा तुम इन इन चीजों से बचना और ये काम करना, डाक्टर की इस बात का यकीन हमारी जिन्दगी के इस्तेमाल को बदल देता है हालॉकि ना हमने कैन्सर को देखा और ना टियूमर को देखा कि ये दिखने वाली चीज ही नही है बस चौबीस घंटे कैन्सर और टियूमर के ध्यान और ख्याल के साथ गुजरते है, जिन्दगी का बदलना डाक्टर की बात के यकीन की वजह से हुआ ह पर हमारा हुजूर सल्ल0 की बात का कितना यकीन है यानी हुजूर सल्ल0 पर कितना ईमान है कि हुजूर सल्ल0 की बातों के यकीन ने हमारी जिन्दगी के इस्तेमाल को कितना बदला है ? इसका फैसला खुद करो।

हजरत अबुबक्र रजि0 जब बैतुलखला में दाखिल होने का इरादा करते तो अपनी चादर बिछा देते और फरमाते ‘‘ऐ मुहाफिज फरिश्तों ! तुम लोग यहां इस चादर पर तशरीफ रखो मैने अल्लाह तआला से अहद किया है कि मै बैतुलखला में कोई बात नही करूंगा। (मुकद्दमा अबुल्लैस)

हजरत जैद बिन सामित रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! क्या मैने तुम लोगों से कपड़े हटाने को मना नही किया है ? तुम्हारे साथ ये दोनो फरिश्ते जो तुमसे अलग नही होते है, न नींद में न बेदारी में। याद रखों जब भी तुममे से कोई अपनी बीवी के पास जाये या पेशाब-पाखाना जाये तो उन दोनो से शर्म करे खबरदार उन दोनो की इज्जत करो।
(बैहकी)

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! ऐ लोगों अल्लाह तआला तुम्हे कपड़े उतार देने से मना फरमाता है। तुम अल्लाह के उन फरिश्तो से हया करो जो करामन कातिबीन तुम्हारे साथ रहते हैं, वो तुमसे अलग नही होते सिवाय तीन वक्तों के जो तुम्हारी जरूरते हैं, 1. पेशाब-पाखाने के वक्त, 2. बीवी से सोहबत के वक्त, 3. गुस्ल करते वक्त । (मुस्नद बज्जार)

रब की मर्जी और मंशा वाले अमल हुजूर सल्ल0 वाले अमल हैं

अगर इन्सान ने जिस्म की इन चीजों को अपने बनाने वाले की मर्जी पर इस्तेमाल किया है जिस तरह हुजूर सल्ल0 ने इस्तेमाल किया या इस्तेमाल करने के लिये बतलाया है कि

ऑख से वो देखा जिसके देखने का रब ने हुक्म दिया था,
कान से वो सुना जिसके सुनने का रब ने हुक्म दिया था,
जुबान से वो बोला जिसको बोलने का रब ने हुक्म दिया था,
हाथ से वो किया जिसके करने का रब ने हुक्म दिया था,
पैरों को उधर चलाया जिधर चलाने का रब ने हुक्म दिया था,
दिमाग से वो सोचा जिसके सोचने का रब ने हुक्म दिया था,

ऐसे इन्सानों की रूह पर आसमानों के ऊपर से इज्जत, राहत, चैन व सुकूनं और इत्मिनान का नतीजा और फैसला आयेगा जो इसके जिस्म पर जाहिर होगा इसलिये कि अमल का नतीजा जाहिर होने की जगह अमल करने वाले का जिस्म है।

हजरत अबुहुरैरा रजि0 से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! इन्सान तक उसकी रोज़ी पहुँचाने के लिये फरिश्ते मुतय्यन हैं अल्लाह तआ़ला ने उनको हुक्म फरमा रखा है कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ, जिसने (हुजूर

सल्ल0 वाले अमल) को ही अपना ओढ़ना-बिछौना बना रखा है तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क मुहय्या कर दा और दीगर इन्सानों को भी रोज़ी पहुँचा दो पर ये दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज्यादा रोज़ी न पा सकेगें। (अबु अवाना)
हुजूर सल्ल0 वाले अमल अल्लाह की कुदरत से लेने का सबब और जरिया हैं अगर हुजूर सल्ल0 वाले अमल नही हैं तो मुक़द्दर वाली रोज़ी मिलेगी।
हजरत इब्ने उमर रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि जब मुसलमान पर कोई बीमारी भेजी जाती है और वो इस पर सब्र (हुजूर सल्ल0 ने बीमारी मे जिन अमलों को करने के लिये बतलाया था) करता है तो अल्लाह तआला किरामन-कातिबीन को हुक्म फरमाते हैं कि जब तक यह मेरी गिरह में बंधा हुआ है मेरे बन्दे के लिये हर-दिन और रात इतने नेक अमल लिखों जितना वो बीमारी से पहले किया करता था। (इब्ने अबी शैबा)
हजरत मकहोल रह0 फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! जब कोई मुसलमान (हुजूर सल्ल0 वाले अमल करने वाला) बीमार होता है ता बाई तरफ के गुनाह लिखने वाले फरिश्ते को ये हुक्म होता है कि अपना कलम उठा ले और दाहिने तरफ वाले फरिश्ते से ये कहा जाता है कि इस बन्दे के अच्छे आमाल लिखते रहो जो यह तन्दुरूस्ती की हालत में किया करता था क्योंकि इसकी आने वाली हालत को मैं जानता हूं मैने हो इसे इस हाल में मुब्तला किया है। (इब्ने असाकिर)
हजरत अली रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि आपने फरमाया ! अल्लाह तआला किरामन कातिबीन की तरफ अपना पैगाम भेजते हैं कि मेरे बन्दे के आमाल-नामे में रंज व गम के वक्त कोई अमल न लिखो। (दैलमी)
कुरआन व हदीस मे य कहीं नही बतलाया गया है कि किरामन कातिबीन दायें और बायें कान्धों पर बैठकर इन्सानो के माल या सामान को, जमीन या जायजाद को लिखते हैं कि
कौन कितने 2000 रूपये के नोट कमाकर ला रहा है और कौन कितने 500 रूपये के नोट ला रहा है या
कौन कितना सोना लेकर आ रहा है और कौन कितनी चॉदी ला रहा है या
कौन कितना आटा और चावल लेकर आ रहा है या
कौन कितना आलू और प्याज लेकर आता है या
कौन कितनी दवा और इन्जेक्शन लेकर आता है या
कौन दुकान पर जा रहा और कौन मजदूरी करने जा रहा है।
किरामन कातिबीन का काम माल और सामान का लिखना नही है बल्कि किरामन कातिबीन का काम इन्सानों के अमल को लिखना है इसलिये कि अल्लाह रब्बुल इज्जत जो इस कायनात के बनाने वाले और हर एक की हर जरूरत को पूरा करने वाले हैं अगर इन्सान इस दुनियॉ के थोड़े दिन अपने रब की मर्जी और मंशा पर चल तो अल्लाह रब्बुल इज्जत इस इन्सान को अम्बिया और सहाबा की तरह से कामयाबी का परवाना दे दे। इस दुनियॉ मे इन्सान को अपने रब की मर्जी और मंशा पर चलने के लिये पहला मुकाबला माल से करना पड़ेगा, इसलिये इसे अपने आपको ये समझाना पड़ेगा कि माल से कुछ नही होता ह बल्कि अमल से होता है।

दुकान से माल नही मिलता, माल अमल से मिलता है

इस बात को समझना बहुत आसान है कि एक आदमी ने अपनी परवरिश के लिये दुकान को सबब बनाया हुआ है कि दुकान से पैसा मिलेगा, पैसे से चीजें मिलेंगीं और चीजों से परवरिश होगी पर ये आदमी अगर दुकान पर जाने का अमल ना करे और घर पर ही बैठा रहे तो इसकी ये बात झूठ साबित होगी कि दुकान से पैसा मिलेगा, हॉ इसको दुकान से ही पैसा मिलेगा पर जब ये आदमी दुकान जाने का अमल करे कि
अपने पैरो के अमल से दुकान जाये,
फिर हाथ के अमल से दुकान खोले,

ऑख के अमल से दुकान के अन्दर देखे,
ग्राहक आ गया तो कान के अमल से उसकी बात सुने,
जुबान के अमल से सौदा तय करे,
सौदा तय हो जाने के बाद हाथ के अमल से सौदा देकर पैसे लेगा,
अब हम सब खुद फैसला करें कि पैसा दुकान से मिला या अमल से मिला ? अब अगर ये दुकान पर ना जाकर किसी के यहॉ मजदूरी के अमल करता तो मजदूरी के अमल से इसे पैसा मिलता। इसलिये पैसा दुकान से या मजदूरी से या कारखानों से नही मिलता बल्कि उन शोबों मे किये हुए अमल पर मिलता है।

चीजे पैसे से नही मिलती अमल से मिलती है

इसी तरह चीजे भी पैसे से नही मिलती अमल से मिलती है जैसे कोई आदमी किसी दुकान पर साबुन खरीदने के लिये अपने हाथों मे 100 रूपये का नोट लेकर जाये पर ऑख, जुबान और हाथ से अमल ना करे यानी जुबान से कुछ न बोले, ऑख और हाथ से इशारा न करे तो 100 रूपये क्या 2000 रूपये का नोट हाथ मे होने के बावजूद इसे साबुन तो क्या नमक भी नही मिलेगा, इस मिसाल को सामने रखकर अब हम सब खुद फैसला करें कि रूपये से साबुन या नमक मिलता है या अमल से मिलता है ? ये बात बिल्कुल वाजेह और साफ है कि दुकान, मजदूरी या नौकरी वगैरह मे माल अमल से ही मिलेगा और सामान या चीजे वगैरह भी माल से नही मिलेगी बल्कि सामान या चीजे भी अमल ही से मिलेंगीं। अब समझने वाली बात ये है कि रब की मर्जी और मंशा वाले अमल पर कामयाबी कब मिलेगी ?
रब की मर्जी और मंशा वाले अमल पर दुनियॉ व आखिरत मे कामयाबी उस वक्त मिलेगी जब अमल करने वाला अमल के मुकाबले पर जो दुनियावी सबब है उससे मायूस और नाउम्मीद होकर नमाज को कायम करे अगर नमाज को कायम न किया तो नमाज कुबूल न होंगी और जिसकी नमाज कुबूल न होंगी उसके कोई अमल कुबूल न होगें इसलिये कि इज्जत या जिल्लत, राहत या तकलीफ, सुकून या परेशानी, सेहत या बीमारी के हाल आसमानों से इन्सान की रूह पर रब की मर्जी से आयेगें और रूह पर आने वाली चीज को रब की मर्जी वाले वो अमल ही हटायेगें जो कुबूल होगें। कायनात की किसी छोटी या बड़ी चीज से इज्जत या जिल्लत, राहत या तकलीफ, सुकून या परेशानी, सेहत या बीमारी के हाल ना आयेगें और ना ही जायेगें, क्यों कि रूह मान्निद करंट के है और जिस्म मान्निद तार के है, करंट तार पर असर डाल सकता है कि करंट बढ़ गया यानी वोल्टेज ज्यादा आ गया तो तार जल गया पर तार करंट पर कोई असर नही डाल सकता तार चाहे 3 mm का हो या चाहे 12 mm का कि जिल्लत, तकलीफ, परेशानी और बीमारी का हाल आया रूह पर तो इन्सान की अपनी मर्जी और मंशा वाले अमल कायनात की किसी छोटी या बड़ी चीज से आसमान से आने वाले हाल को नही हटा सकते कि करंट तो तार पर मे घुस सकता है पर तार करंट मे नही घुस सकता कि जैसे रूह पर आने वाली बीमारी हुजूर सल्ल0 वाले अमल से ही आसमान पर वापस हो सकती है लेकिन दवा खाने या इन्जेक्शन के लगाने से रूह पर आयी हुई बीमारी वापस ना जायेगी लेकिन आज हमे नजर ये आ रहा है कि इन्सान पर चीजों के रास्ते से ही ये हाल आ और जा रहे हैं ऐसा क्यों ? ऐसा होने की वजह इन्सान का गुमान है कि अल्लाह का ये फरमान है “ मैं अपने बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा मेरा बन्दा गुमान करता है ” बन्दों का गुमान सही करने के लिये अल्लाह ने नमाज दी है, जिसकी नमाज अर्श पर पहुॅच कर सिफारिश कर देगी उसका काम बन जायेगा और जिसका काम बन जायेगा उसका अमल से होने का गुमान बनेगा। इसलिये खूब अच्छी तरह समझ लो नमाज अलग चीज है और अमल अलग चीज है, नमाज अर्श पर पहुॅच कर नमाजी की सिफारिश करती है और इन्सान इस जमीन पर नमाज का अमल करता है, नीचे की रिवायत से यही बात पता चलती है।
”रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज रोशन और चमकदार होकर नमाजी को दुआ देती हुई आसमानों के ऊपर चली जाती है कि अल्लाह जल्लाशानुहु तेरी भी ऐसे ही हिफाजत करें जैसे तूने मेरी हिफाजत की है और या तो नमाज स्याह रंग में

नमाजी को बददुआ देती है कि अल्लाह तआला तुझे भी ऐसे ही बर्बाद करे जिस तरह तूने मुझे बर्बाद किया है फिर ये नमाज पुराने कपड़े की तरह लपेट कर नमाजी के मुंह पर मार दी जाती है ” (तर्गीब)

इस रिवायत मे तीनों बातें बतलायी गयी हैं,

1 आसमानों के ऊपर रोशन और चमकदार होकर जाने वाली चीज नमाज।

2 नमाज को ऊपर भेजने वाला नमाजी।

3 नमाज का अमल करने वाला नमाजी।

गौर व फिक्र करने के लिये (तर्गीब) मे दर्ज ये कुछ और रिवायतें है,

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाजी के कब्र में पहुँचते ही उसके सर के करीब नमाज आकर खड़ी हो जाती है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! मैदाने हश्र में मीजान पर नमाज का वजन किया जायेगा।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! जन्नत की कुंजी नमाज है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! जिस इमाम से मुक्तदी नाराज हों फिर भी वो उनकी इमामत करे तो उस इमाम की नमाज उसके कानों के ऊपर नही जायेगी।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज शैतान का मुंह काला करती है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज मेरी आंखों की ठंडक है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज नूर है इससे अपने घर को नूरानी बनाया करो।

यहॉ से सवाल शुरू होता है कि जब नमाज का अमल करने वाले को नमाजी कहते हैं फिर नमाज क्या चीज है ?

गौर करो रोशन और चमकदार होकर आसमानों के ऊपर कौन सी चीज जा रही या नमाजी के चहरे पर कौन सी चीज मारी जा रही है ?

वो कौन सी चीज है जिसके लिये आसमानों के दरवाजे, जन्नत के दरवाजे और जहन्नम के दरवाजे खुल जाते हैं ?

वो कौन सी चीज है जो आसमानों की कुंजी है ?

वो कौन सी चीज है जिसकी अल्लाह रब्बुल इज्जत के यहां दुआ और बददुआ दोनो मकबूल हैं ?

वो कौन सी चीज है जिसे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अपनी आंखों की ठंडक बतलाया है और नुकसान के एतबार से अल्लाह की पनाह चाही है ?

इसे यूँ समझो कि जिस नमाजी की नमाज रोशन और चमकदार होकर आसमानों के ऊपर चली जाती है, उस नमाजी के कब में पहुँचते ही उसके सिरहाने नमाज आकर खड़ी हो जाती है कि नमाज का अमल करने वाला कफन में लिपटा हुआ पड़ा है तो जो चीज उसके सर के करीब पहुँच जाती है वो क्या है ? कब्र में कौन पहुंच जाता है ? तो जवाब मिलगा नमाज,

इसी तरह मैदाने हश्र में जब नमाजी हिसाब देने के लिये खड़ा होगा तो मीजान पर अपना वजन कराने के लिये जो नमाज होगी वो आखिर क्या है ? उसका भी यही जवाब होगा - नमाज,

यही वो नमाज होगी जिसे हिसाब-किताब वाले दिन निकाला जायेगा अगर कम निकली तो नवाफिल वाली नमाजों से इनकी तादाद को पूरा किया जायेगा।

फिर नमाजी जब अपनी जन्नत के दरवाजे पर पहुंचेगा तो दरवाजे का ताला कौन सी चीज खोलेगी ? क्या नमाज के अलावा कोई और चीज होगी क्योंकि जन्नत की कुंजी नमाज है।

आखिर ये कौन सी चीज है जो इमाम के कानों के ऊपर भी नही जायेगी ? इसका भी यही जवाब होगा - नमाज,

नमाज का अमल करने वाला नमाजी शैतान का मुंह काला नही करता बल्कि नमाज नाम की मख्लूक शैतान का मुंह काला करती है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की आंखों में नमाजी को देखकर ठंडक नही होती थी इसलिये कि नमाजियों में मुनाफिक भी होते थे तो क्या आप सल्ल0 की आंखों मे मुनाफिकों को नमाज का अमल करते देखकर ठंडक पहुंचती थी ? नही बल्कि आप सल्ल0 की आंखों की ठंडक नमाज थी, वो नमाज जिसे आप आसमानों के ऊपर से लेकर आये थे और उस नमाज से फायदा उठाने के लिये जिब्रील अलै0 ने रसूलुल्लाह सल्ल0 को मकाम जिब्रील (बैतुल्लाह की दीवार से लगी हुई जगह जो मकामे इब्राहीम के सामने है) पर नमाज का अमल करके सिखलाया था।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! मुझे दुनियॉ मे तीन चीजें महबूब है, 1 खुश्बू 2 औरतें 3 नमाज -

जिस नमाज को हुजूर सल्ल0 आसमानो के ऊपर से लेकर आये थ, मुसलमानों को ये नमाज नजर क्यों नही आती ? ये बात इन्शाअल्लाह नीचे लिखी जा रही हदीस से समझ मे आयेगी,

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! मुझे वो चीजें दिखलायी देती हैं जो तुम्हें नजर नही आती और मुझे वो आवाजें सुनायी पड़ती हैं जो तुम्हे सुनायी नही पड़ती अगर वो चीजें तुम्हे दिखलायी और सुनायी पड़ जाये ंतो तुम लोग अपनी बीबियों के साथ लुत्फअन्दोज होना छोड़कर जंगलों मे चले जाओगे। (तिर्मिज़ी)

जिस तरह खुद हमारी रूह या हमारे कंधों पर बैठे हुए किरामन और कातबीन, जिन्नात, और बुखार वगैरह ना दिखने वाली मख्लूक हैं, उसी तरह नमाज भी इन्सानों को न दिखने वाली मख्लूक है, इसलिये कि मख्लूक के सिवा अल्लाह जल्लाशानुहु से दुआ या बददुआ और कौन करेगा ? खालिक और मख्लूक के अलावा कोई तीसरी चीज नही है, अल्लाह खालिक है और उसके अलावा जो कुछ है वो सबके सब मख्लूक है। यहॉ पर एक बात और समझने की है जिसे अक्सर लोग कहते हैं कि “ नमाज अल्लाह का हुक्म है ” अब अगर नमाज अल्लाह का हुक्म है तो फिर ये मख्लूक कैसे हो गयी ? इस मिसाल मे सवाल का जवाब मिल जायेगा जैसे आपने अपने बेटे को हुक्म दिया कि बेटा साइकिल उठा लाओ, य साइकिल आपका हुक्म नही है बल्कि उसे उठाकर लाना हुक्म है, साइकिल तो लोहे की बनी हुई एक चीज है। इसी तरह अल्लाह जल्ला शानुहू ने नमाज को कायम करने का, नमाज की हिफाजत करने का, नमाज के हक को अदा करने का और नमाज को अख्तियार करने का हुक्म दिया है। “कायम करना” “हिफाजत करना” और नमाज के “हक को अदा करना” ये अल्लाह जल्ला शानुहू की जात से निकला हुआ हुक्म है, नमाज तो मख्लूक है, जैसे “उठा लाओ” इन्सान की जात से निकला हुआ हक्म है, साइकिल तो मख्लूक है। जिस तरह अम्बिया के अलावा जिब्रील अलै0 हर किसी को नजर नही आते या बुखार हर किसी को नजर नही आता उसी तरह नमाज भी किसी को नजर नही आती, नीचे लिखी जा रही बुखार की हदीस से ये बात भी समझ मे आ सकती है,

हज़रत सलमान रज़ि0 फरमाते हैं एक दिन बुखार ने हुजूर सल्ल0 से घर के अन्दर आने की इजाज़त चाही, हुजूर सल्ल0 ने उसे अन्दर आन की इजाज़त दे दी, जब वो अन्दर आया तो हुजूर सल्ल0 ने उससे पूछा ! तुम कौन हो ? उसने कहा मैं बुखार हूँ, गोस्त को काटता हूँ और खून चूसता हूँ।

हुजूर सल्ल0 ने उससे फरमाया ! तुम कुबा वालों के पास चले जाओ।

चुनांचे बुखार कुबा वालों के पास चला गया और उन सबका इतना खून चूसा और गोस्त काटा कि उनके चेहरे पीले हो गये तो उन्होने आकर हुजूर सल्ल0 से बुखार की शिकायत की।

हुजूर सल्ल0 ने उन लोगों से फरमाया ! तुम लोग क्या चाहते हो ? अगर तुम चाहो तो मैं अल्लाह से दुआ कर दूं तो अल्लाह तआला बुखार को वापस बुला लें और अगर तुम लोग चाहो तो बुखार को रहने दो, जिससे तुम लोगों के सारे गुनाह माफ हो जायें।

कुबा वालों ने अर्ज़ किया ! या रसूलुल्लाह ! आप बुखार को रहने दें। (बिदाया.6.160)

जरा सोचो इस बुखार के बारे मे, क्या बुखार इन्सानों को नजर आता है ? लेकिन मदीना मुनव्वरा मे ''बुखार'' हुजूर सल्ल0 से घर के अन्दर आने की इजाज़त मागॅ रहा है, अब ये बात शायद आप हजरात की समझ में आ गयी हो कि नमाज और नमाजी ये अलग-अलग चीज है, जिस तरह बुखार और इन्सान अलग-अलग चीज है, हॉ नमाज से फायदा हासिल करने के लिये नमाज का अमल हैं, नमाज का अमल नमाज को कायम करने के लिये है, इसलिये कि

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! जिसने नमाज को कायम किया उसने इस्लाम को कायम किया और जिसने नमाज को कायम ना किया उसने इस्लाम को गिरा दिया। (तर्गीब)

जब मुसलमान नमाज को कायम करेगा तब नमाज कुबूल होगी और जब नमाज कुबूल होगी तो इसके हर छोटे बड़े अमल कुबूल होंगें और जिसकी नमाज कुबूल नही होगी उसके कोई छोटे बड़े अमल कुबूल नही होंगें,

''रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! जिसकी नमाज कुबूल होगी उसके अमल कुबूल होंगें आर जिसकी नमाज कुबूल नही होगी उसके कोई अमल कुबूल नही होंगें,''

इसलिये सारा मसअला नमाज के कुबूल कराने का है, हमारे तुम्हारे सामने सिर्फ इतनी से बात है कि नमाज पढ़ा करो हालॉकि कुरआन व हदीस मे नमाज को पढ़ने का कहीं पर भी हुक्म नही है बल्कि नमाज को कायम करने का, नमाज की हिफाजत करने का और नमाज के हक को अदा करने का हुक्म है। कुछ इस तरह से भी समझ लो कि आपने अपने बेटे को साइकिल उठा लाने का हुक्म दिया है ना कि साइकिल को पढ़ने का हुक्म दिया है, साइकिल कोई पढ़ने की चीज नही है। इसी तरह नमाज कोई पढ़ने की चीज नही है बल्कि कायम करने, हिफाजत करने और इसके हक को अदा करने के लिये मुसलमानो को मिली है। अब सवाल ये उठता है कि नमाज कहॉ कायम होगी ? जवाब- नमाज मुसलमान के अन्दर कायम होती है पर नमाज उसी मुसलमान के अन्दर कायम होगी जिसने अपने दिल को नमाज के लिये खाली कर लिया हो क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने नमाजी को हुक्म फरमाया है ! नमाज के लिये अपने दिल को (अल्लाह के गैर की उम्मीदों से) फारिग कर लो।

इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज नूर है और ये नूर तुम्हारे दिल को नूरानी बना देगा।

नमाज उसी वक्त कायम होगी, जब मुसलमान का दिल अल्लाह के गैर की उम्मीदों से खाली होगा, नमाज को अन्दर कायम करने का मतलब नमाज के अमल के वक्त मुसलमान के अन्दर तीन चीजें मौजूद हों,

1 हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहे।

2 इत्मिनान से रूकुऊ और सज्दा करे।

3 अल्लाह को देखता रहे।

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने फरमाया ! नमाज कायम करने से मुराद हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहना, इत्मिनान से रूकुऊ और सज्दा करना, खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करना। (तर्गीब)

नमाज को कायम करना

हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहना, इसका तआल्लुक इल्म से है।

इत्मिनान से रूकुऊ और सज्दा करना, इसका तआल्लुक ईमान से है।

खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करना, इसका तआल्लुक ध्यान से है।

हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहना

हजरत अबुजर रजि0 हुजूर सल्ल0 का इर्शाद नकल करते हैं कि मुसलमान जब नमाज के अमल के लिये खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ उस वक्त तक पूरी तवज्जो फरमाते है जब तक कि वो नमाज के अमल मे किसी और तरफ मुतवज्जा न हो, जब बन्दा अल्लाह को तरफ से अपनी तवज्जो हटा लेता है तो अल्लाह तआला भी उसकी तरफ से तवज्जो हटा लेते है। (नसाई 1196)

उक्बा बिन आमिर जुहनी रजि0 हुजूर सल्ल0 का इर्शाद नकल करते हैं कि जो मुसलमान कामिल वुजू करके दो रकआत नमाज का अमल इस तरह करता है कि दिल अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहे और आजा मे भी सुकून हो तो उसके लिये यकीनन जन्नत वाजिब हो जाती है। (अबु दाऊद सफा-906)

नमाज के अमल मे हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहने के लिये दो चीजों के इल्म की जरूरत है,

1 किसके सामने खड़े हैं ?

2 उससे क्या कह रहे हैं ?

आज अगर हमे इसका इल्म होता कि हम किसके सामने खड़े होने जा रहे हैं तो हमारे बदन में कपकपी तारी हो जाती और हमारा चेहरा पीला पड़ जाता कि हम किसके सामने खड़े होने जा रहे हैं ? नये मुसलमान हजरत अली रजि0 से पूछा करते थे कि अजान की आवाज सुनते ही आपका चेहरा क्यों पीला पड़ जाता है ? फरमाते थे मालूम है किसके सामने खड़े होने जा रहा हूँ ? सहाबा का चेहरा क्यों पोला पड़ जाता था ? चेहरा पीला पड़ने की वजह उनके दिलों मे अल्लाह जल्ला शानुहू की अज्मत थी, सहाबा रजि0 के अन्दर ये अज्मत और खौफ पैदा हुआ था अल्लाह की कुदरत का, उसकी रूबूबियत का, उसकी ताकत का, अमलों पर जरूरतों के पूरा होने का और किसी मख्लूक से कुछ ना होने का यानी तर्दीद का इल्म हासिल करने से।

अमलों से जरूरतों के पूरा होने के इल्म को फजायल का इल्म कहते हैं,

किस तरह अमल करने से जरूरतें पूरी होगी इसके इल्म को मसायल का इल्म कहते हैं,

मख्लूक से कुछ ना होने के इल्म को तर्दीद का इल्म कहते हैं,

आज का मुसलमान तर्दीद के इल्म से जाहिल है हालॉकि अल्लाह जल्ला शानुहू की अज्मत और खौफ तर्दीद के इल्म से ही पैदा होता है, मिसाल के तौर पर आपको एक पुलिस के सिपाही की वर्दी की ताकत का इल्म है पर जिस थाने मे वो तैनात है उस जिले के पुलिस कप्तान की वर्दी मे लगे हुए बिल्ले की ताकत का और उसके अख्तियारात का इल्म नही है तो बगैर बिल्ले वाली वर्दी जो सिपाही के बदन पर है उसकी अज्मत और खौफ आपके अन्दर होगा पुलिस के कप्तान का खौफ आपके अन्दर न होगा अगर पुलिस का कप्तान आपके सामने बगैर वर्दी के आकर खड़ा हा जाये तो उसे आप आम इन्सान ही समझोगे उसका खौफ आपके अन्दर नही होगा। इसी तरह मुसलमान को आज अल्लाह के अलावा से जो होता हुआ नजर आ रहा है उसकी तो मालूमात है लेकिन ये सब कुछ जो अल्लाह की कुदरत से हो रहा है इस इल्म से मुसलमान जाहिल है।

अगर मुसलमान को पुलिस के कप्तान की ताकत का और उसके अख्तियारात का इल्म हो और पुलिस का सिपाही बुलाने आये कि कप्तान साहब ने आपको बुलाया है तो सच सच बताओ आपके दिल पर कप्तान साहब ने "अभी बुलाया" है के बोल सुनकर क्या हाल होगा ? आप किस अज्मत और खौफ स कप्तान साहब के दफतर मे दाखिल होगे ? आज मुसलमान का अजान की आवाज सुनने के बाद और मस्जिद मे दाखिल होने के बाद जिस अज्मत और खौफ का असर हमारे जिस्म और दिल मे पुलिस के कप्तान के दफतर मे दाखिल होने पर होता है क्या वैसी अज्मत और खौफ हमारे जिस्म और दिल मे मस्जिद मे दाखिल होने पर होता है ? जिस तरह चोर के कानों मे पुलिस का नाम पहुँचते ही चोर का दिल डर जाता है क्या मुअज्जिन की अल्लाह अकबर की आवाज सुनकर अल्लाह की अजमत से हमारा दिल डरता जाता है ? इस सवाल को अपने अन्दर झॉककर देखने की जरूरत है, जब हम अपने अन्दर झॉकेगें तो जवाब मिलेगा कि ये कैफियत हमारे अन्दर "नही" है। अल्लाह तआला का इर्शाद है,

إِنَّمَا يَخْشَى اللهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاء

"अल्लाह तआला से उसके वही बन्दे डरते हैं जो उसकी अज्मत का इल्म रखते है" सूर फातिर, 28

हम सब अपने अन्दर झॉकने वाले बन जाये कि हमारे अन्दर ये कैफियत है या नही ? हमारे अन्दर इस कैफियत की शुरूआत नमाज के अमल मे अल्लाह से हम क्या कह रहे हैं इसका इल्म हासिल करने से होगी,

उक्बा बिन आमिर जुहनी रजि0 हुजूर सल्ल0 का इर्शाद नकल करते हैं कि जो मुसलमान कामिल वुजू करके नमाज के अमल मे इस तरह ध्यान से खड़ा होता है कि उसे मालूम हो वो अल्लाह से क्या कह रहा है ? तो नमाज से इस हाल मे फारिग होता है कि उस पर कोई गुनाह नही होता जैसे उस दिन था जिस दिन उसकी मॉ ने उसे जना था।

(मुस्तदरक हाकिम जिल्द-2 सफा-399)

हजरत कतादा रजि0 ने फरमाया ! नमाज कायम करने से मुराद कामिल वुजू करना, नमाज के औकात की हिफाजत करना और इत्मिनान से रूकुऊ और सज्दा करना। (दुर्रे मंसूर)

हमारा वुजू कामिल कब होगा ? कामिल वुजू के लिये हमे तीन काम करने होंगें,

1 वुजू करते वक्त हमारा दिल हसद और कीना से पाक हो लेकिन ईमान को सीखे बगैर दिल हसद और कीना से पाक नही हो सकता।

2 वुजू करते वक्त हमारे जिस्म के आजा गुनाहों से पाक हो लेकिन इल्म को सीखे बगैर हमारे जिस्म के आजा गुनाहों से पाक नही हो सकते।

3 वुजू करने मे पानी का इशराफ न हो, अल्लाह के ध्यान के बगैर ये बात नही आ सकती।

फिर नमाज के अमल मे यानी कयाम मे, रूकू मे, कौमे में, सज्दो में, जलसों में, कायदा मे हम जो कुरआन, जो दुआ, जो अज्कार और जो तस्बीह वगैरह पढ़ रहे हो उसके माने और मफहूम का पता हो, ये नही कि रटे हुए तोते की तरह पढ़ गये बल्कि उसके मायने और मफहूम को सामने रखकर पढ़ो पर हमारा हाल ये है कि हम हक तआला के सामने गफलत के साथ खड़े होते है कि जबान रटे हुए वो अल्फाज कहती है जिसका दिमाग को पता ही नही होता कि जबान क्या कह रही है ? इसलिये दिमाग कभी दुकान की तरफ चला जाता है, कभी माल की तरफ चला जाता है और कभी हमारा दिमाग किसी सामान या इन्सान की तरफ चला जाता है, अब सवाल ये है कि ऐसा क्यों होता है ?

ऐसा इसलिये होता है कि जबान आर दिमाग एक जगह पर इक्टठा नही हो सके, जब जबान और दिमाग एक जगह पर इक्टठा होते हैं तो दिल उस बात की गवाही देता है और दिल की इस गवाही को ही ईमान कहते हैं लेकिन जबान और दिमाग के एक जगह पर इक्टठा न होने को निफाक कहते हैं, इसलिये सबसे पहला काम इन दोनों को एक जगह पर इक्टठा करना है कि जबान जो कहे दिमाग उसको जानता हो।

नमाज के अमल की शुरूआत मे तक्बीर **اللّٰهُ اَكْبَرُ** कहकर हाथों को कानों तक उठाना, ये हाथों को कानों तक क्यों उठाया जाता है ? **اللّٰهُ اَكْبَرُ** कहकर हाथों को कानों तक उठाने को इस तरह समझो कि पुलिस का आला अफसर जब किसी फरार मुजरिम के सामने पहुँचता है तो मुजरिम हर तरफ से अपनी उम्मीदां को तोड़कर अपने हाथों को कानों तक उठाकर (Hands Up की हालत में) अपने आपको पुलिस के हवाले कर देता है, इसी तरह जिन-जिनसे हमारी उम्मीदें थी हर एक से अपनी उम्मीदों को तोड़कर हम अपने हाथों को कानों तक उठाकर हक तआला की पनाह मे आ गये कि ऐ अल्लाह मुझे छोड़कर हर मख्लूक तेरी बात मानती है अब मैं भी तेरी मानने आ गया हू, अब सामने हक तआला है और हाथों के पीछे दुकान, माल, सामान और वो इन्सान है जिनसे हमने उम्मीदें लगा रखी थी उन सबसे अपने रुख को फेर कर हम आपके सामने आ गये हैं।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

लेकिन तक्बीर कहते वक्त हमारे अन्दर इस बात की शर्मिदंगी होनी चाहिये कि ऐ अल्लाह मैं अब तक तेरे गैर की उम्मीदों के साथ जिन्दगी गुजार रहा था इस बात पर मैं तेरा मुजरिम हूँ, अब अपनी उम्मीदों को सबसे तोड़कर तेरे सामने आकर खड़ा हो गया हूँ, अब अल्लाह की और बन्दे की बातचीत शुरु होती है कि

तू जानता है किसके सामने खड़ा है ?

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

तारीफ के लायक तो सिर्फ तेरी जात है जो सारे आलमों की सारी मख्लूकात की सारी जरूरतों को पैदा करता है और पूरा भी करता है।

तूने कैसे जाना कि मैं रब्बुल आलमीन हूँ ?

الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

तेरे रहम की वजह से जो तूने अपना जानना हमारे हवाले कर दिया है कि आपका जानना कुरआन है और कुरआन को नाजिल करके आपने हम पर रहम फरमाया।

तुझे कुरआन म मेरी ताकत का पता चला ?

مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

तू ही दुनियॉ व आखिरत का बादशाह है पर फैसला कयामत के दिन करेगा।

अच्छा बता तू मुझसे क्या चाहता है ?

إِيَّاكَ نَعْبُدُ

मैं तेरी मर्जी के मुताबिक अपनी जिन्दगी गुजारना चाहता हूँ।

मॉग क्या मॉगता है ?

إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

मैं तेरी मर्जी के मुताबिक जिन्दगी गुजारने की तुझसे तौफीक मॉगता हूँ।

कैसी तौफीक चाहता है ?

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ

जिस तरह अम्बिया, शोहदा, सिददीकीन और सालिहीन ने सिर्फ तुझसे उम्मीद लगाकर तेरी मर्जी पर चलकर अपनी जरूरतो को आपसे मॉग कर लिया है।

तुझे मालूम है इस रास्ते पर चलने वालों को किस चीज की जरूरत पड़ती है ?

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

इस रास्ते पर चलने वालों को आप अपना ध्यान और अपनी जात से अच्छे गुमान का इनाम अता फरमाते हैं।

तुझे मालूम है इनाम पाने के बाद उन्होने क्या किया है ?

غَيْرِ الْمَغْضُوبِ

फिर वो लोग कभी तेरी लानत वाले रास्ते पर नही चले हैं।

तुझे पता है मेरी लानत वाला रास्ता कौन सा है ?

عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ

तेरे ध्यान के बगैर तेरे गैर से उम्मीदे लगाकर जिन्दगी गुजारने वाला रास्ता तेरी लानत वाला रास्ता है।

अच्छा और बता,

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِنْ سِجِّيلٍ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَأْكُولٍ

आप हमे याद दिला रहे हैं कि आपने हाथी वालों के साथ अपनी कुदरत का किस तरह इस्तेमाल किया है और जब चाहेगें आप अपनी कुदरत का इसी तरह इस्तेमाल करेगें।

फिर **اَللّٰهُ اَكْبَرُ** कहते हुए (कि ऐ अल्लाह मुझे छोड़कर हर मख्लूक तेरी बात मानती है अब से मैं भी तेरी मांनूगा,)

रुकूऊ करना।

रुकूऊ किस को कहते है ? रुकूऊ मे दो चीजें हैं

1- अपनी रूह को हक तआला के सामने झुकाना,

2- जबान से “ سبحان رب العظیم ” की तस्बीह कहने पर दिल को इत्मिनान होना।

हमारे दिमाग मे यहॉ पर एक बात ये भी रहनी चाहिये कि नमाज के अमल मे अल्लाह जल्ला शानुहू का दीदार हमारी रूह को होगा इसलिये कि अल्लाह जल्ला शानुहू के हुक्मों का तआल्लुक इन्सान की रूह से है, ये बात इस तरह से समझ मे आ सकती है कि अगर किसी इन्सान का नमाज के वक्त मस्जिद के अन्दर इन्तेकाल हो जाये तो क्या नमाज के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ? या

अगर बैतुल्लाह मे दाखिल होते ही उसकी मौत हो जाये तो क्या तवाफ के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ? या

अगर रमजान की रात मे सहरी खाने के वक्त किसी की मौत हो जाये तो क्या रोजे के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ?

तो जवाब होगा नही, क्यों ? इसलिये कि अल्लाह जल्ला शानुहू का हुक्म जिस चीज को मिलता था, मलकुलमौत वो चीज जिस्म से निकाल ले गया, अब रहा सवाल ये कि इन्सान की रूह अल्लाह जल्ला शानुहू का हुक्म कैसे पूरा करेगी ? इसका जवाब ये होगा कि अल्लाह तआला ने रूह से अपना हुक्म पूरा कराने के लिये इन्सान को जिस्म दिया है ताकि जिस्म उस पर अमल करे वरना जिस्म तो मिटटी है, हॉ मिटटी के इस जिस्म मे गोस्त का एक लोथड़ा है जिसे “दिल” कहते है इस दिल का तआल्लुक रूह से होता है और रूह का तआल्लुक अल्लाह जल्ला शानुहू के साथ जुड़ता है, रूह अल्लाह जल्ला शानुहू के साथ जुड़ेगो “سبحان رب العظیم” और “سبحان رب الاعلی” की तस्बीहात से, रूह जब अल्लाह जल्ला शानुहू के साथ जुड़ेगी तब ही हमारे दिल को इत्मिनान होगा।

इसके लिये रुकूऊ मे اللهُ أَكْبَرُ कहते हुए जबान से “سبحان رب العظیم” की तस्बीह कहते वक्त दिमाग और जबान को इक्टठा रखने की मेहनत करना कि हमारा रब हर सबब, हर शक्ल और हर हाजत से पाक है, बगैर किसी सबब के वो हमारी हर जरूरत को पूरा कर रहा है और पूरा करेगा यही उसको बड़ाई है। जब तक हमारे दिल को इस मफहूम से इत्मिनान न हो उस वक्त तक अपनी रूह को हम रब के सामने झुकाये रहे, इत्मिनान मिल जाने के बाद

“ سمع الله لمن حمده ” कहते हुए कौमा के लिये सीधे खड़े होकर ربنا و لک الحمد،حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه कहे कि ऐ मेरी जरूरतों को अपनी कुदरत से पूरा करने वाले, तारीफ के काबिल तो सिर्फ तेरी जात है जो शक्लों से पाक है बरकत वाला है, इस मफहूम को सामने रखकर, अपनी रूह को रब के सामने सज्दे मे डाल कर “سبحان رب الاعلی” को उस वक्त तक कहें “हमारा रब हमारी हर जरूरत को बगैर किसी सबब के पूरा कर रहा है और पूरा करेगा इसलिये कि वो हर सबब और हर शक्ल से पाक है, यही उसका अंन्दाज है,” जब तक हमारे दिल को इस मफहूम से इत्मिनान न हो जाये तब तक अपनी रूह को सज्दे मे रखे रहें, नमाज के अमल मे हमारी ऐसी कैफियत बन जाये इसके लिये नवाफिल नमाजों के अमल मे हमे ये मेहनत करनी है कि

हजरत अबु तल्हा रजि0 अपनी बाग मे नफिल नमाज का अमल कर थे तो अल्लाह ने एक परिन्दे को भेजकर इनके अपनी तरफ मुतवज्जा रहने का इम्तेहान लिया, बस जरा सी देर के लिये इनकी तवज्जोह अल्लाह की तरफ से हटी, जिस पर सारा बाग हजरत अबु तल्हा रजि0 ने अल्लाह के नाम पर सदका कर दिया। अब जरा सोचें कि क्या कभी हमने भी नमाज के अमल मे किसी चीज का ध्यान आने पर उसे सदका किया है ? अगर नही तो अब से ये नियत करो कि नमाज के अमल मे अगर अब हमे किसी चीज का ध्यान आ गया तो उसे सदका कर देगें, इसलिये कि यही वो नमाज का अमल है जिसमे बन्दे का और रब का आमना-सामना होता है, अल्लाह के और बन्दें के बीच में कोई आड़ और दीवार नही होती है, आलमे अर्वाह

में हम जो इकरार करके आये थे वही इकरार जमीन पर असबाब और चीजों से घिरा होने के बावजूद कायनात की हर छोटी बड़ी शक्ल से नाउम्मीद और मायूस होकर,

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِين** दोहरा रहे हों और नमाज के बाहर वाली जिन्दगी में अपने जिस्म के आजा को अल्लाह की मर्जी पर इस्तेमाल कर रहे हों कि मेरा अल्लाह इस वक्त इस जगह पर मेरे जिस्म के आजा से क्या चाहता है ? जिस तरह से वो जो चाहता है अगर हम वैसे ही इस्तेमाल हो रहे हैं तो हम अल्लाह से إِيَّاكَ نَعْبُدُ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कहकर अल्लाह से सच बोल रहे है वरना हमारा إِيَّاكَ نَعْبُدُ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कहना अल्लाह से झूठ बोलना है।

सहाबा किराम रजि0 ने इस तरह से इस्तेमाल होकर नमाज से परवरिश लेना सीखा था इसी को इबादत से परवरिश लेना कहते है, इबादात से परवरिश लेना इस मिसाल से समझा जा सकता है कि कुरआन और हदीस में कहीं पर भी मकान बनाने का हुक्म नही है अब अगर कोई इन्सान अपने रहने के लिये मकान बनाना चाहे तो मकान का बनाना न मना है और न मकान का बनाना गुनाह है लेकिन इसे बनाने का अल्लाह ने हुक्म भी नही दिया है पर एक आदमी ने जमीन के एक टुकड़े पर चारों तरफ से दीवार उठाई, ऊपर छत डाली अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा लगाया इस तरह मकान बनकर तैयार हो गया। इस आदमी का मकान का बना लेना न गुनाह है और न मना है लेकिन इसके बनाने का हुक्म भी नही था, अब ये आदमी जिसने अपनी खून पसीने की कमाई से अपने ही रहने के लिये मकान बनाया है अगर ये अपने मकान में दाखिल होना चाहे तो ये आजाद नही है बल्कि अब अल्लाह के हुक्म बतौर असबाब इसकी तरफ मुतवज्जाह होंगें कि

1-दरवाजे से दाखिल हो,

2-दरवाजे पर खड़े होकर आवाज दो,

3-अन्दर जाकर सलाम करो,

इन अमलों को करत हुए इस मुसलमान का मकान में दाखिल होना इबादत है, ये मुसलमान मकान में दाखिल होकर अब अल्लाह के सामने अपनी कोई हाजत पेश करे कि ऐ अल्लाह आपने मकान में दाखिल होने क जो हुक्म रसूलुल्लाह सल्ल0 के जरिये आपने हमे दिये थे मैने उन हुक्मों पर अमल कर लिया है अब आप हमारा ये फलॉ काम बना दीजिये, इसकी ये दुआ अल्लाह के यहां काबिले कुबूल है। क्यों ? इसलिये कि इसने ** إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ** वाला रास्ता अख्तियार किया कि तेरा ही कहना मानते हैं और तुझी से जरूरत मांगते हैं।

ऐसा ही मामला कायनात के तमाम शोबों का है, दुकान तिजारत- नौकरी- मजदूरी- खेती और बागात, इन तमाम शोबों को अख्तियार करने का कुरआन और हदीस में कही भी हुक्म नही है पर इन शोबों को अख्तियार करना न मना है और न गुनाह है पर परवरिश का इन शोबों से कोई ताल्लुक नही है, परवरिश का ताल्लुक अल्लाह की जात से है और रास्ता नमाज है, नमाज मे रुकुऊ और सज्दा के अमल पर हक तआला अपनी कुदरत से परवरिश करते हैं, इसलिये हमे इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा करना सीखना है।

नमाज के अमल मे इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा करना

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अल्लाह जल्ला शानुहू उस नमाज की तरफ तवज्जो ही नही फरमाते जिस नमाज के अमल मे रुकूऊ और सज्दा इत्मिनान से न किया जाये।   (तर्गीब)

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज के तीन हिस्से है, पाकी हासिल करना तिहाई हिस्सा है, रुकूऊ तिहाई हिस्सा है और सज्दा तिहाई हिस्सा है। (बज्जार)

हजरत हुजैफा रजि0 फरमाते थे ! आदमी को चाहिये कि चाहे नमाज मे वो कियाम मुख्तसर करे लेकिन रुकूऊ और सज्दा इत्मिनान से अदा करे। (कंज जिल्द-4 सफा-235)

ईमान को ना सीखने को वजह से मुसलमान इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा करने का मतलब ये समझता है कि रुकुऊ मे तीन से लेकर तीन सौ बार " **سبحان رب العظيم** " और सज्दे मे तीन से लेकर तीन सौ बार "**سبحان رب الاعلى**" कह ले तो ये इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा हो गया हालाँकि इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा करने का मतलब " **سبحان رب العظيم** " और "**سبحان رب الاعلى**" कहते वक्त इसके मफहूम से दिल को इत्मिनान हो कि मेरी हर जरूरत को पूरा करने वाला अल्लाह शक्ल और सबब से पाक है और वो हमारी हर जरूरत को अपनी कुदरत से पूरा कर रहा है।

शक्ल से पाक होने का क्या मतलब है ?

शक्ल से पाक होने का मतलब ये है कि अल्लाह जल्ला शानुहू बगैर किसी जरिये के, बगैर किसी सबब के और बगैर किसी को शरीक किये हुए सिर्फ अपनी कुदरत से,

हमारी आंखों को रोशनी पहुंचा रहा है।

हमारे कानों में आवाज पहुंचा रहा है।

हमारे दिमाग में याद करा रहा है।

हमारी जुबान से बोल निकलवा रहा है।

हमारे दिल को धड़का रहा है।

हमारे हाथ-पैरों मे ताकत पहुँचा रहा है।

हमारे जिस्म के अन्दर खून को दौड़ा रहा है।

हमारे बाल उगा रहा है, ठीक उसी तरह हमारे पेट को रोटी, दाल, दूध, पानी और जिस्म को ढाकने के लिये कपड़े भी पहुँचा रहा है। जिस जुबान के बोल को एक मोबाईल से दूसरे मोबाईल पर भेजने के लिये मोबाईल की कम्पनियाँ पैसे लेती हैं जरा सोचो ! क्या कभी अल्लाह ने आसमानों के ऊपर से हमारी जुबान पर बोल भेजने के पैसे लिये है ? या

क्या कभी अल्लाह ने आसमानों के ऊपर से हमारी आंखों मे रोशनी भेजने के पैसे लिये है ? या

कभी अल्लाह ने आसमानों के ऊपर से हमारे कानों के अन्दर आवाज भेजने के पैसे लिये है ? या

कभी अल्लाह ने आसमानों के ऊपर से हमारे कानों के अन्दर आवाज भेजने के पैसे लिये है ? या

कभी अल्लाह ने आसमानों के ऊपर से हमारे हाथ पैर में ताकत पहुंचने के पैसे लिये है ?

इन बड़ी-बड़ी नेमतों के बदले हमारा रब हमसे कोई पैसे नही लेता, इन नेमतों के बारे मे उस शख्स से पूछो जिसके पास आंख हो पर उसमें रोशनी न हो,

कान हो पर अन्दर आवाज न जा रही हो,

जुबान हो पर मुंह से बोल न निकल पा रहे हो,

हाथ पैर हो पर फालिज की वजह से हाथ पैर हरकत न करते हों,

दिमाग हो पर सोचने और समझने की सलाहियत न हो,

हमारा इम्तेहान सिर्फ रोटी और दाल का, सहत और राहत का, इज्जत और सुकून का है।

अल्लाह जल्ला शानुहू का इर्शाद है मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो सिवाय उसके जिसे मैं हिदायत दूं लिहाजा मुझसे हिदायत मॉगो, मैं तुम्हे हिदायत दूॅंगा।

मेरे बन्दो ! तुम सब भूखे हो सिवाय उसके जिसको मैं खिलाऊॅं लिहाजा मुझसे खाना मॉगो, मैं तुम्हे खिलाऊॅंगा।

मेरे बन्दो ! तुम सब बरहना हो सिवाय उसके जिसको मैं पहनाऊॅं लिहाजा मुझसे लिबास मॉगो, मैं तुम्हे पहनाऊॅंगा।

(मुस्लिम-6572)

हजूरत उमर रजि0 ने फरमाया ! बन्दे के और उसकी रोजी के दरम्यान एक पर्दा पड़ा हुआ है अगर बन्दा सब्र से काम लेता है तो उसकी रोजी खुद उसके पास आ जाती है और अगर वो बे सोचे-समझे रोजी कमाने मे घुस जाता है तो वो उस पर्दे को फाड़ लेता है लेकिन अपने मुक़द्दर से ज्यादा नही पाता है। (कंज-8-210)

अल्लाह तआला ने मूसा अलै0 की तरफ वह्य भेजी कि ऐ मूसा ! फकीर वो है जो मुझे अपना क़फील और कारसाज न समझे और मरीज़ वो है जो मुझे तबीब न समझे और गरीब वो है जो मुझे देने वाला और हमदर्द न समझे। (जवाहिरू सुन्ना-61)

हमारी सोच और यकीन ये है कि माल और चीजों के बगैर ये नेमतें कैसे मिल जायेगीं हालॉकि इन्ही चीजों को हासिल करने के लिये अल्लाह जल्ला शानुहू ने नमाज दी थी। क्या हमे नमाज से इन चीजों के मिलने का इत्मिनान है ? बस यही इत्मिनान रुकुऊ और सज्दा मे चाहिये कि जब हम سبحان رب العظيم " और "سبحان رب الاعلى " कहे तो तो हमे रोटी और दाल का, सेहत और राहत का, इज्जत और सुकून का रुकुऊ और सज्दे के अमल पर मिलने का इत्मिनान हो।

अब सोचो रोटी और दाल का मिलना कीमती हैं ? या

आंखों को रोशनी का मिलना कीमती हैं ? या

कानों के अन्दर आवाज का जाना कीमती हैं ? या

जुबान से बोल का निकलना कीमती हैं ? या

दिमाग का सोचना कीमती हैं ? या

हाथ पैर में ताकत का पहुंचना कीमती हैं ?

जिस तरह अल्लाह जल्ला शानुहू अपनी कुदरत से इन नेमतो को हम तक पहॅुंचा रहे है, अल्लाह की कसम ! रोटी और दाल, सेहत और राहत, इज्जत और सुकून वगैरह भी अपनी कुदरत से हम तक पहॅुंचा रहे है पर हमारे इम्तेहान के लिये इन्हे चीजों से होता दिखला रहे है, ईमान को न सीखने की वजह से हमे इन नेमतों को माल और चीजों से लेने की आदत पड़ी गयी हालॉकि चीजों के रास्ते से इन नेमतो को हासिल करना शिर्क का रास्ता है और नमाज के रास्ते से इन नेमतो हासिल करना ईमान का रास्ता है लेकिन नमाज के रास्ते से परवरिश के लिये हमे इत्मिनान से रुकुऊ और सज्दा करना होगा। नमाज के अमल मे रुकूऊ तिहाई हिस्सा है और सज्दा तिहाई हिस्सा है समझने वाली बात ये है कि न सूरः फातिहा के बगैर नमाज होगी

और न अत्ताहियात के बगैर इसलिये कि कयाम और कायदा दोनो जरूरी हैं लेकिन नमाज के तीनों हिस्से मे न कयाम है और न कायदा है, एक बार ये हदीस फिर सामने आ जाये कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! नमाज के तीन हिस्से है, पाकी हासिल करना तिहाई हिस्सा है, रुकूऊ तिहाई हिस्सा है और सज्दा तिहाई हिस्सा है फिर कयाम और कायदा क्यों जरूरी हैं ?

कयाम इसलिये जरूरी हैं कि कयाम सूरः फातिहा के लिये है इसलिये कि सूरः फातिहा के बगैर रुकुऊ और सज्दे मे इत्मिनान ही हासिल न होगा क्यों कि रुकूऊ मे जबान से "سبحان رب العظيم" की तस्बीह कहते वक्त दिमाग और जबान को इक्टठा रखना कि हमारा रब हर सबब, हर शक्ल और हर हाजत से पाक है, हमारी हर जरूरत को बगैर किसी सबब के पूरा कर रहा है और पूरा करेगा वो इसीलिये बड़ा है और फिर "سبحان رب الاعلى" कि "हमारा रब हमारी हर जरूरत को बगैर किसी सबब के पूरा कर रहा है और पूरा करेगा इसलिये कि वो हर सबब और हर शक्ल से पाक है, इसीलिये वो निराला है। अल्लाह ने अपनी रूबूबियत की सिफत सूरः फातिहा मे बतलायी है और अत्ताहियात को कायदा मे अदब के साथ बैठाकर कहलाया ताकि हुजूर सल्ल0 के एहसान हमे याद आयें अगर आप सल्ल0 हम रब के बारे मे न बतलाते तो हमे कैसे पता चलता कि हम सब के रब अल्लाह हैं, सारे इन्सान ऑखों के इस धोखे मे मर जाते कि हमारी परवरिश चीजों से हो रही है। ये बात नीचे लिखी जा रही हदीस से पता चलेगी कि हमारी परवरिश जिन चीजो से होती हुई नजर आ रही है ये ऑखों का धोखा ह, ये चीजों से होता हुआ नजर आना इन्सान का इम्तेहान है।

हुजूर सल्ल0 ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि0 से इर्शाद फरमाया ऐ ज़ुबैर ! अल्लाह जल्ले-शानुहू ने जब अपने अर्श पर जल्वा फरमाया तो अपने बन्दों की तरफ (करम की नज़र डाली) और इर्शाद फरमाया कि मेरे बन्दों ! तुम मेरी मख्लूक हो और मैं तुम्हारा परवरदिगार (जरूरतों को पूरा करने वाला) हूँ। तुम्हारी रोज़ियाँ हमारे कब्ज़े में हैं लिहाज़ा तुम अपने आप को ऐसी मेंहनतों में न फंसाओ जिसका ज़िम्मा मैने ले रखा है, तुम लोग अपनी रोज़ियाँ मुझसे मांगो क्यो कि रिज्क का दरवाज़ा सातों आसमानों के ऊपर से खुला हुआ है, जो खजाना अर्श से मिला हुआ है, उसका दरवाज़ा न रात में बन्द होता है न दिन में अल्लाह जल्ले शानुहू उस दरवाजे से हर शख्स पर रोज़ी उतारता रहता है, लोगो के गुमान के बकद्र, उनकी अता के बकद्र, उनके सदके के बकद्र और उनके खर्च के बकद्र, जो शख्स कम खर्च करता है उसके लिए कम उतारा जाता है और जो शख्स ज्यादा खर्च करता है उसके लिए ज्यादा उतारा जाता है। (दुर्रे मंसूर)

हुजूर सल्ल0 की ये खबर जो ऊपर लिखी गयी है कि हम मे से हर एक की परवरिश अल्लाह की कुदरत से हो रही है और इतना ही नही कि आपने ये बात इन्सानों को सिर्फ बतलायी हो बल्कि आप सल्ल0 ने नबूवत मिलने के बाद से दुनियॉ से जाने तक अपनी हर जरूरत को नमाज को कायम करके अल्लाह से पूरा कराया है ताकि कयामत तक कोई मुसलमान नमाज से मायूस और नाउम्मीद न हो, हुजूर सल्ल0 का मुसलमानो पर नमाज से परवरिश लेकर दिखलाना ही एहसान है अगर आप नमाज से परवरिश लेकर न दिखलाते तो गैरों की तरह हम भी शिर्क के साथ मर जाते। अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अम्बिया अलै0 के जरिये सबसे पहले لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰه समझाया और हर नबी की तरह हुजूर सल्ल0 ने भी मक्का वालों को सबसे पहले لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰه को ही समझाया, जिसकी ये बुनियाद सही हो गयी वो सबब मे हुजूर सल्ल0 वाले अमल से कुदरत को अपने साथ करके खुदा तक पहुँच जायेगा, यहॉ ये याद रखना कि जब لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को समझाया जा रहा होगा तो मुखालिफत शुरू होगी, लोग कहेगें कि

करने वाला तो अल्लाह है मगर दुकान भी होनी चाहिये,
करने वाला तो अल्लाह है मगर दवा और डाक्टर भी होना चाहिये,
करने वाला तो अल्लाह है मगर बारिश के लिये बादल भी होना चाहिये,
जब तक मुखालिफत नही होगी तब तक हक गालिब नही आयेगा कि

सूरज ना निकलेगा तो रौशनी कैसे जाहिर होगी ?
रात नही होगी तो अन्धेरा कैसे जाहिर होगा ?
बातिल नही आयेगा तो हक कैसे जाहिर होगा ?
कुरआन उठाकर देखो कि किस नबी की لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ के समझाने पर मुखालिफत नही हुई ह और किस नबी की कुदरत से मदद नही हुई है, आदम अलै0 से लेकर हुजूर सल्ल0 तक किसी नबी की सबब से मदद नही हुई है बल्कि कुदरत से मदद हुई है और कयामत तक

لَا إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّٰهُ مُحَمَّدًا رَسُولُ ٱللَّٰهِ

के समझाने वालों की खुदा की कुदरत से मदद होगी क्यो कि कलिमे को समझाना खुदा का बतलाया हुआ काम है और नबियों ने जब खुदा के बतलाये हुए इस काम को करते हुए नमाज को कायम किया तो खुदा ने उनकी मदद कुदरत से की, इसके लिये नबियों के हालात देखो कि उनको तकलीफ मे डाल डालकर कुदरत दिखलायी है अगर यूनूस अलै0 को मछली के पेट मे नही डालते तो मछली और दरिया कैसे समझ मे आता ? कि मछली पानी के अन्दर और यूनूस अलै0 मछली के अन्दर, वहॉ खाना मिल रहा है, हिफाजत हो रही है, उन्हे वहॉ कोई खतरा नही कि हम जमीन के ऊपर भी पालना जानते हैं और मछली के अन्दर भी पालना जानते हैं, हम रब हैं हम जो चाहें जहॉ करें। इसलिये सबसे पहले कुदरत को समझो कि जब हमे कुदरत ही समझ मे नही आयेगी तो नबियों वाली मेहनत कैसे करेगें ? इसलिये कि कलिमे को समझाना कुदरत की बुनियाद पर है, इसके लिये ना मुल्क की जरूरत है, ना माल की जरूरत है और ना ही किसी सामान की जरूरत है जैसे
दुकान के लिये दुकानदार चाहिये,
जमीन के लिये काश्तकार चाहिये,
मुल्क के लिये वजीर और सदर चाहिये कि हर सबब के लिये सबब चाहिये पर अल्लाह स लेने के लिये सबब की नही बल्कि अल्लाह की जरूरत है और अल्लाह नमाज कायम करने वालों के काम कुदरत से करते है, इसलिये हमे अपने साथ कुदरत चाहिये हम किसी सबब के मोहताज नही।
इब्राहीम अलै0 को जब आग मे डाला गया तो जिब्रील अलै0 से बड़ा दुनियॉ मे कौन सा सबब हो सकता ह ? जिब्रील अलै0 अल्लाह से इजाजत लेकर आये, पानी का भी फरिश्ता साथ लेकर आये और हवा का भी फरिश्ता साथ लेकर आये पर अल्लाह ने जिब्रील अलै0 से कह रखा था कि इब्राहीम अगर तुम्हारी मदद ले तो मदद करना वरना उनकी मदद ना करना।
इब्राहीम अलै0 ने जिब्रील अलै0 से कहा कि मैं जानता हूॅ वो रब है और वो जानता है कि मैं बन्दा हूॅ तो फिर मुझे तुम्हारी मदद की क्या जरूरत है ? जिब्रील तुम्हारी मदद लेने से मेरा आग मे जलना अच्छा है क्यों कि तुम मख्लूक हो और मैं रब की मदद चाहता हूॅ उसके गैर की मदद नही चाहता। इब्राहीम अलै0 ने जब जिब्रील अलै0 की मदद का इन्कार कर दिया तो खुदा ने आग को अपने हुक्म से खत्म किया है, खुदा ने किसी को भी इस्तेमाल नही किया बस अपनी कुदरत का इस्तेमाल किया है। अल्लाह नबियों के लिये कुदरत का इस्तेमाल करते रहे हैं और कयामत तक नमाज को कायम करने वालों के लिये कुदरत का इस्तेमाल करते रहेगें, सहाबा के साथ देखो कैसे कैसे कुदरत का इस्तेमाल किया है,
जेल मे पानी की हाजत पर कोठरी मे बादल आकर बरसा,
कैद मे खाने की जरूरत पर कोठरी मे अंगूर आये,
भूख की हाजत मे चक्की से आटा निकला,
फाका आने पर चूहा दीनार लेकर आया,
रौशनी की जरूरत पर झड़ी से रौशनी निकली,
खर्च करने के लिये चादर के नीचे दीनार निकले,
बन्दा जब सबब से ना उम्मीद होकर नमाज को कायम करता है तो फिर खुदा उसके लिये कुदरत का इस्तेमाल करते है कि जेल मे पानी बाल्टी मे नही भेजा बल्कि बरसने के लिये बादल को भेजा, नबियों के काम पर सारी मदद कुदरत से है। इबादत

तो आदमी की जिन्दगी की लाईन है ये जिस्म से तआल्लुक रखती है और जिस्म को खुदा ने अपने हुक्मों को पूरा करने के लिये दिया है, इस जिस्म को खुदा ने ना खेत के लिये दिया है, ना दुकान के लिये दिया है, ना मुलाजिमत के लिये दिया है, ना हुकूमत के लिये दिया है कि जिस्म भी हमारा है और हुक्म भी हमारा है कि तुम हमारा हुक्म पूरा कर दोगे हम तुम्हारी हाजत पूरी कर देगें, हम तुम्हे सबब के हवाले ही नही करेगें कि हर सबब हमारा मोहताज है हम तुझे सबब का मोहताज नही बनायेगें कि इबादत हमारी करे और मोहताजी सबब की करे, नही, हम तुझे सबब का मोहताज नही बनायेगें अपनी कुदरत तेरे साथ करेगें।

असहाब ए कहफ के साथ हमने कुदरत से मदद की है कि ना ये नबियों की जमात थी, ना ये सहाबा की जमात थी, ना ये औलिया की जमात थी और ना ये ईमान को समझाने के लिये निकले थे बल्कि ये जमात अपने ईमान को बचाने के लिये निकली थी तो जब ईमान को बचाने वालों के साथ खुदा ने ऐसी मदद थी तो दूसरों को ईमान समझाने वालों के साथ कैसी मदद होगी ? असहाब ए कहफ के लिये सूरज चक्कर काट कर जाता है कि हमारी वजह स इनकी नींद मे तकलीफ ना पहुचे तो खुदा ने सूरज को भी चक्कर काटकर जाने का हुक्म दिया तो जब ईमान को बचाने वालों का ऐसा इक्राम होगा फिर दूसरों को ईमान समझाने वालों के साथ कैसा मामला होगा ?

हजरत हन्जला गुस्ल की हाजत के साथ शहीद हुए तो खुदा ने उन्हे फरिश्तों से आसमान पर उठवाकर गुस्ल दिलवाया फिर जमीन पर वापस भिजवाया तो गुस्ल का पानी उनके बालों से टपक रहा था, कौन सी मदद सहाबा की नही हुई है ? आज खुदा इस मेहनत को हमसे करवाकर अपनी कुदरत हमारे साथ जाहिर करना चाहते हैं ताकि लोग खुदा को जाने की करने वाली जात अल्लाह की है और वो सबब का मोहताज नही है, सबब तो हमारे इम्तेहान के लिये बनाया है ताकि सबब से जाहिर होन वाली कुदरत को समझकर हम अल्लाह तक पहुचें, खुदा हमारी मेहनत का भी मोहताज नही है कि जब वो नबियों को बगैर नबी के अपनी कुदरत से नबी बना सकता है तो नमाज को कायम करने पर वो हमारे काम कुदरत से नही बना सकता है ? खुदा ने नमाज को कायम करने वालों के काम हमेशा अपनी कुदरत से बनाये है।

अब बताओ ! ये नबियों और सहाबा के किस्से सुनने के लिये हैं या करने के लिये हैं ? ये कलिमा नमाज की मेहनत अपने अन्दर का यकीन और अपने अमल के दुरूस्त करने की मेहनत है, इस पर अल्लाह की तरफ से मदद जरूरी है, एक नही हजारों मर्तबा सहाबा की मददें जाहिर हुई हैं और आम तौर से लोग कुदरत के जाहिर होने पर इस्लाम मे आयें है।

हजरत खुबैब को मक्का के एक मकान मे कैद करके रखा गया और उनका खाना पीना सब बन्द कर दिया कि अब कहॉ से खायेगा ? पर दरवाजे से झॉक झॉक देखते रहे, तीसरे या चौथे दिन देखा कि हजरत खुबैब के हाथों मे आदमी के सर के जितना अंगूर का गुच्छा है और खुबैब उसमे से अंगूर तोड़ तोड़कर खा रहे हैं, ये देखने वाले जब मुसलमान हो गये तो खुद ही बताते थे कि अरब मे उस वक्त अंगूरों का मौसम भी नही था पर खुबैब बन्द मकान मे अंगूर खा रहे थं तो उस दिन हम लोगों की समझ मे बात आ गयी कि खुबैब के साथ सबब का नही बल्कि कुदरत का निजाम है, क्योंकि सबब होता तो अंगूर को बाजार से लाया जाता या सबब होता तो कोई आदमी इन्हे अंगूर दे जाता पर ऐसा नही था बल्कि कुदरत साथ थी, इसी अंगूर के खोशे को देखकर ये सब मुसलमान हो गये। सारे नबियों ने जो कुछ किया है वो सारा का सारा किया अल्लाह ने है पर नाम नबियों का हुआ, किसी नबी मे बगैर खुदा के कुछ करने की कोई ताकत नही कि हुजूर सल्ल0 ने अपने चचा के लिये हिदायत चाही पर अल्लाह ने उन्हे हिदायत नही दी ओर दूसरे चचा हजरत हमजा के कातिल वहशी को कत्ल कराना चाहा पर अल्लाह ने वहशी को हिदायत दे दी। इसलिये जब तक हम अल्लाह को रब नही समझेगें तो निजाम ए कुदरत से फायदा कैसे उठायेगें ?

आज दुकानों से और खेतों से गंगा राम और सीता राम भी फायदा उठा रहे है ओर उन्ही दुकानों और खेतों से हम भी फायदा उठा रहे है तो इसमे हमारी फजीलत कैसे हो गयी ? मुल्कों को वो भी चला रहे हैं और हम भी चला रहे हैं तो हमारी इसमे कौन सी फजीलत हो गयी ?

सोचो तो फजीलत कैसे हासिल होती है ? ये मुल्कों का मिल जाना, गाडियों का मिल जाना, ओहदों का मिल जाना, कोठियों का मिल जाना, ये कोई फजीलत की चीज नही है बल्कि फजीलत की चीज ईमान और आमाल ए सालिहा है।
ताजिर को तिजारत समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी तिजारत मे लगा रहा है,
किसान को खेती समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी खेती मे लगा रहा है,
मुलाजिम को मुलाजिमत समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी मुलाजिमत मे लगा रहा है,
मजदूर को मजदूरी समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी मजदूरी मे लगा रहा है,
दुकानदार को दुकान समझ मे आयी है तो सारी जिन्दगी दुकान मे लगा रहा है,
खुदा करे खुदा करे कि हमे ईमान और आमाल ए सालिहा समझ मे आ जाये तो सारी जिन्दगी ईमान और आमाल ए सालिहा मे लगा देता क्यों कि करने वाला तो अल्लाह है, ये याद रखना कि हाजत हाजत वालों के हाथ मे नही है बल्कि हाजत हाजत भेजने वाले के हाथ मे है, खुदा हमारे ऊपर हाजत भेजते है और हाजत को पूरा भी खुद करते हैं कि जब हाजत हम भेजेगें तो पूरी कौन करेगा ? कि हम ही हाजत को पूरा करेगें, हमारे अलावा कोई हमारी भेजी हुई हाजत को पूरा नही कर सकता।
हमने ऑख बनायी है हमारे अलावा ऑखो मे रौशनी कोई नही दे सकता,
हमने कान बनाया है हमारे अलावा कानो मे आवाज कोई नही पहुॅचा सकता,
हमने जबान बनाया है हमारे अलावा जबान मे वोल कोई नही दे सकता,
हमने दिमाग बनाया है हमारे अलावा दिमाग मे सोचने की कूवत कोई नही दे सकता,
हमने हाथ बनाया है हमारे अलावा हाथ मे पकड़ने की ताकत कोई नही दे सकता,
हमने पैर बनाया है हमारे अलावा पैर मे चलने की ताकत कोई नही दे सकता,
खुदा के बगैर जब कोई रौशनी नही दे सकता, कोई आवाज नही दे सकता, कोई वोल नही दे सकता, कोई सोचने की कूवत नही दे सकात, हाथ पैर मे ताकत नही दे सकता तो हमने जो पेट बनाया है हमारे अलावा उसको रोटी कौन दे सकता है ? कि ऑख मे रौशनी तो अल्लाह दे और रोटी जमीन दे ? कि मैं ऑख से रौशनी वापस ले लूॅ तो रौशनी कोई नही दे सकता, मैं कान से आवाज वापस ले लूॅ तो आवाज कोई नही दे सकता, मैं जबान से बोल वापस ले लूॅ तो कोई बोल नही दे सकता, मैं दिमाग से सोचने की सलाहियत वापस ले लूॅ तो कोई अक्ल नही दे सकता, मैं हाथ पैर मे ताकत वापस ले लूॅ तो कोई ताकत नही दे सकता कि मेरी दी हुई कोई ले नही सकता और मेरी ली हुई को कोई द नही सकता। सारा निजाम मेरे हाथ मे है तो जो खुदा इतनी इतनी कीमती चीजें दे रहा है क्या उसके अलावा कोई और है जो हमे रोटी दे रहा है पर हम इस छोटे से मसले मे अटक गये कि हम रोटी कहॉ से खायेगें और कपड़ा कहॉ से पहनेगें ? आज हम इसमे अटक गये, अर !
फरिश्तों के रब हम हैं फरिश्तों की हाजत हम पूरी करते है,
जानवरों के रब हम हैं जानवरों की हाजत हम पूरी करते है,
परिन्दों के रब हम हैं परिन्दों की हाजत हम पूरी करते है,
जिन्नातों के रब हम हैं जिन्नातों की हाजत हम पूरी करते है,
आदम के रब हम हैं इन्सानों की हाजत हम पूरी करते है,
ऐ इन्सानों तुम तो ख्वामखाह परेशान हो रहे हो, रब तो हम हैं हाजत तो हम पूरी करते है, जब तुम्हारी मॉ के पेट मे तुम्हारी हाजत हम पूरी कर सकते है तो जमीन पर आकर तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? और जमीन के बाद कब्र मे तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? मैदान ए हश्र मे तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? जन्नत मे तुम्हारी हाजत कौन पूरी करेगा ? मेरे बगैर तुम्हे जन्नत मे कौन दाखिल करेगा ? मेरे बगैर तुम्हे जहन्नम से कौन बचायेगा ? मेरे बगैर तुम्हे पुल सिरात से कौन गुजारेगा ? ऐ मेरे बन्दे ! जब तेरो आखिरत की सारी हाजत पूरा करना मेरा काम है तो मॉ के पेट से लेकर कब्र तक तेरी सारी हाजत मैं ही पूरी करता हूॅ कोई दूसरा तेरी हाजत नही पूरी करता, हॉ तेरे इम्तेहान क लिये हाजत मैं पूरी करता हूॅ और दिखलाता हूॅ सबब से पर ये बात ईमान से तआल्लुक रखती मालूमात से नही, अब खुद बतलाओ,

समन्दर मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
जंगल मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
रेगिस्तान मे किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
गॉव या शहर मे इन्सान के अलावा किस मख्लूक की हाजत पूरी नही हो रही है ?
एक अकेला इन्सान ही बचा है जिसकी हाजत दुकान के बगैर, खेत के बगैर, मजदूरी के बगैर, नौकरी के बगैर खुदा नही पूरी कर सकता ? हमें खुदा अपनी रूबूबियत समझा रहा है कि समन्दर का भी रब मैं हूँ, जंगल का भी रब मैं हूँ, आसमानों के ऊपर का भी रब मैं हूँ, जमीन क कीड़ो का भी रब मैं हूँ, इन्सानों का भी रब मैं हूँ, मेरे सिवा कोई रब नही है और मेरी रूबूबियत मे कोई शरीक नही, अकेला मैं रब हूँ। बस बात इतनी है कि अल्लाह ने जो करने का जाब्ता बनाया है वो मुहम्मद सल्ल0 के आमाल है जिन्हे रोजाना असर और फज्र मे किरामन और कातबीन आसमानों के ऊपर ले जाते हैं चूँकि मुकददर मैने लिख दिया इसलिये मेरे बन्दे मेरी मानेगें तब भी देगें और नही मानेगें तब भी देगें, हमने अपने को रब होने का ऐलान किया है اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ अब अगर हम नही देगें तो मेरी मख्लूक को और कौन देगा ?
मेरी क़दरत को साथ लेने के लिये मुहम्मद सल्ल0 के आमाल को अपनी परवरिश का सबब बनाओ और मुहम्मद सल्ल0 के आमाल से परवरिश लेने के लिये सबसे पहले नमाज को कायम करो।
बेशक नमाज से परवरिश लेना दुश्वार है मगर जिनके दिलों मे खुशुऊ है उनके लिये नमाज से परवरिश लेना आसान है क्यों कि इन्हे इस बात का ख्याल है कि बिलाशुब्हा वो कयामत के दिन अपने रब से मुलाकात करने वाले है, रब से मुलाकात उसी की होगी जो शिर्क से पाक होगा और शिर्क से पाक होने के लिये नमाज से परवरिश लो।
इसीलिये हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! आदमी और शिर्क के दरम्यान नमाज हायल है। (तबरानी) लेकिन नमाज से परवरिश उन्हे हासिल होगीं जो नमाज को कायम करेगें,

हजरत अबुदर्दा रजि0 ने हम लोगों के बारे में फरमाया ! “तुम लोग बातिन की गन्दगियों पर जाहिर के चमन खिला रहे हो हांलाकि तुम लोग बेवकूफ नही हो क्योकि दुनिया के बारे में तो बड़ी अकलमन्दी से काम करते हो तो बेवकूफ कहां हो” यानी दुकान पर बैठ कर, आफिस में बैठकर, पार्क में बैठकर, मोबाईल से खाना मंगा लेते हो, पैसे मंगा लेते हो, सवारी मंगा लेते हो और कपड़े मगा लेते हो पर नमाज से जब खाना लेने की, पैसे लेने की, सवारी लेने की और कपड़ लेने की बात कही जाती है तो कहते हो कि नमाज से ये चीजें कैसे मिल जायेगीं हालॉकि इस ज़माने मे ये बात मोबाईल और कम्पयूटर से समझी जा सकती है कि आपके मोबाईल या कम्पयूटर से किसी किताब को, किसी बयान को या किसी और चीज़ को डाऊनलोड करना हर एक की समझ मे आता है पर नमाज के अमल से खाना, पैसे, सवारी और कपड़े डाऊनलोड करने की बात समझ मे नही आती जब कि सहाबा के और औलिया के ज़माने मे नमाज के अमल से खाना, पैसे, सवारी और कपड़े डाऊनलोड करना आम बात थी अगर आज हमे हिन्दुस्तान मे रहकर 2000 रूपये के नोट से एक किलो आलू नही मिल रहा है तो अमरीका या इंग्लैंड मे इस नोट के बदले डालर या यूरो कैसे मिल जायेगा ? और बगैर डालर या यूरो के हमे आलू कैसे मिल जायेगा ? इस 2000 रूपये के नोट से एक किलो आलू क्यों नही मिल रहा है इसकी वजह ये है कि हमारा ये नोट नकली है, यही हाल हमारी नमाजों का है कि जब इस 2000 रूपये के नोट से हम आलू नही मिल रहा है तो मरने के बाद आखिरत मे इन नमाजों के बदले क्या मिलेगा ? अब अगर हम नमाज के अमल से खाना, पैसे, सवारी और कपड़े डाऊनलोड करने की कोशिश भी करते हैं तो खाना, पैसे, सवारी और कपड़े डाऊनलोड नही होते, क्यों ? इसलिये कि हमारा आसमानों के ऊपर से नेटवर्क नही है तो जब नेटवर्क ही नही है फिर हमारे तुम्हारे हलो-हलो कहने से क्या हासिल होने वाला है। इसलिये अल्लाह जल्ला शानुहू के नेटवर्क मे आओ, हमारा नेटवर्क अगर अर्श वाले से जुड़ जाये तो सहाबा और औलिया की तरह फिर जो चाहेगें वो डाऊनलोड हो जायेगा।

अल्लाह जल्ला शानुहू के नेटवर्क मे आने के लिये हमे नमाज को कायम करना पड़ेगा, नमाज को कायम करन पर अल्लाह तआला के खास इनामात होगें, अल्लाह पाक़ गैब से मसले हल करेगें और हमारे लिये बरकतों के दरवाजे खोलेगें। अल्लाह पाक की तरफ से नमाज को कायम करने पर जो इनामात इस दुनियॉ मे होते है और इसके कायम करने वालो के जो मसले हल किये जाते है उनकी शक्ले मुख्तलिफ होती है। अक्सर तो ऐसा होता है कि इसे किसी चीज की जरूरत पेश आयी तो अल्लाह पाक ने अपने किसी बन्दे के दिल मे डाला और इसने वही चीज हदिये के तौर पर पेश कर दी, ये बहुत आम और पहचाना हुआ तरीका है और कभी किसी चीज की जरूरत पेश आने पर इन्सान के अलावा किसी मख्लूक से जरूरत पूरी कराते हैं और कभी इसे किसी चीज की जरूरत पेश आने पर बरायेरास्त मदद फरमाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि जरूरत पेश आयी और अल्लाह पाक ने बगैर किसी वास्ते से अपने फज्ल से इसको हल फरमा दिया मसलन एक बन्दा बीमार हुआ इसे बीमारो की तकलीफ शुरू हुई इसने अल्लाह से शिफा की दुआ की, अल्लाह पाक ने बगैर हकीम, डाक्टर और दवा के शिफा अता फरमा दी जिस तरह अययूब अलै0 के साथ किया और कभी ऐसा भी करते हैं कि किसी बन्दे की जरूरत के बारे मे अल्लाह पाक अपने किसी दूसरे बन्दे को ख्वाब मे भी इत्तला फरमाते है।

हसन बिन सुफियान रह0 का किस्सा किताबों में लिखा है कि वो और उनके दो साथी ईमान-इल्म और अमल सीखने के लिये निकले, एक शहर की मस्जिद मे कयाम किया, इनके पास जा थोड़ा बहुत खाने का सामान था वो सब खत्म हो गया। इसके बाद जब फाकों पर फाके होने लगे तो उन्होनें तय किया कि हम ऐसी हालत मे है कि अब हमारे लिये सवाल जायज है, मश्विरे से तय हुआ कि हसन बिन सुफियान रह0 जाये और किसी से कुछ मॉग कर लायें। ये बेचारे निकले लेकिन उन्हे शर्म आयी कि किसी मख्लूक से सवाल करे, इन्होने तन्हाई का गोशा तलाश किया और सलातुल हाजत पढ़कर अल्लाह से दुआ की फिर वापस आ गये और साथियों से कहा कि मै तो किसी से सवाल नही कर सका मैने नमाज का अमल करके अल्लाह से दुआ की है और तुम लोग भी बस यही करो, उन लोगों ने भी नमाज का अमल करके अल्लाह से दुआ की और सो गये।

उस शहर के गर्वनर ने रात में ख्वाब देखा कि कोई शख्स आसमान की तरफ से बड़े गुस्से के अन्दाज मे उसको पुकार रहा है, निगॉह उठा कर देखा तो एक शख्स नेजा हाथ मे लिये गुस्से मे भरा हुआ नजर आया, वो नेजे का रूख गर्वनर की तरफ कर के डॉट कर कह रहा था कि हसन बिन सुफियान और उनके साथियों की खबर ले कब्ल इसके कि उन बेचारो की फाके से मौत हो जाये। ख्वाब ही मे ये भी इशारा किया कि वो शहर की किसी मस्जिद मे है, गर्वनर ने उठते ही शहर मे उनकी तलाश शुरू करायी और जब हुकूमत के बाज कारकुनो ने उन लोगों को तलाश कर लिया और पा लिया तो गर्वनर की तरफ से उनको खाने का सामान और कुछ दीनार दिये फिर उनसे कहा कि गर्वनर साहब आपसे मिलना चाहते है तो यह अल्लाह के बन्दे खामोशी के साथ गायब हो गये ताकि लोगो पर उनका राज न खुले अल्लाह पाक कभी इस तरह भी मसले हल करता है।

हदीस की किताबों मे हज़रत मिक्दाद रज़ि0 का वाकिया दर्ज है कि एक दिन वो जरूरत पूरी करने के लिए अपने घर से चले और एक बेआबाद जगह पर जरूरत पूरी करने के लिए बैठ गये, इतने में बड़ा सा एक चूहा अपने मुँह में दीनार दाबे हुए आया और इनके सामने उसे डालकर वापस चला गया, एक-एक करके उस चूहे ने सत्तरह दीनार इनके सामने लाकर रखे।

हज़रत मिक्दाद रज़ि0 वो दीनार लेकर हुजूर सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक्या बताया।

हुजूर सल्ल0 न इनसे पूछा ! तुमने चूहे के बिल में अपना हाथ तो नहीं डाला था ?

हज़रत मिक्दाद रजि0 ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह ! हमने उसके बिल में अपना हाथ नहीं डाला था।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! इसे ले लो, ये अल्लाह की तरफ से तुम्हें रोज़ी भेजी गई है जिसका तुमसें वादा किया गया है कि तुम्हे ऐसी जगह से रोज़ी दूंगा जहाँ से तुम्हे गुमान भी ना होगा।

इनकी बीबी हज़रत जुबाआ रज़ि0 कहती हैं कि अल्लाह तआला ने उन दीनारों में बहुत बरकत अता फरमाई, ये उस वक्त तक खत्म नही हुए जब तक की हमारे घर में चाँदी के दिरहम बोरियों में भरकर नहीं रखें जाने लगें। (दलाइल-165)

तो कभी ऐसे गैर मामूली और हैरत अगेंज तरीके से भी मदद की जाती है और या कभी बरायरास्त आसमानो के ऊपर से मदद उतारते है जैसे- हजरत उम्मे शुरैक दौसिया रजि0 का हिजरत के रास्ते मे एक यहूदी का साथ हो गया, ये रोजे से थीं और शाम हो चुकी थीं पर इनके पास खाने-पीने को कछ न था, इनका हाल देखकर उस यहूदी ने अपनी बीबी से कहा ! तुम इस मुसलमान को खाना पानी न देना वरना तुम्हारी खैरियत नही। उम्मे शुरैक रजि0 प्यासी ही सो गयी, तहज्जुद के वक्त अल्लाह तआला ने एक पानी से भरा डोल और खजूर से भरा थैला आसमान से उतरा जिस डोल से इन्होने खूब पानी पिया।

(इब्ने साद-8-157)

उम्मे ऐमन रज़ि0 फरमाती है मै हिजरत करके मदीना जा रही थी मुन्सर्फ नाम की जगह पर पहुँचीं तो शाम हो गयी थी और मैं रोज़े से थीं लेकिन हमारे पास पानी नही था और प्यास के मारे बुरा हाल था तो आसमान से सफेद रस्सी में पानी से भरा हुआ डोल उतरा। उम्मे ऐमन रज़ि0 कहती ह कि मैंने उस डोल से खूब पानी पिया फिर उस दिन के बाद से मुझे कभी प्यास नहीं लगी हांलाकि मैं कड़ी गरमियों में रोज़े रखतो थी ताकि मुझे प्यास लगे लेकिन मुझे प्यास नही लगती थी।

(इसाबा-4-432-इब्ने साद-8-224)

हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ि0 को एक बार गुस्ल की हाजत हुई, उस वक्त वह एक कोठरी में कैद थे, जो आदमी इनकी निगरानी में लगाया गया था, उससे इन्होने गुस्ल के लिए पानी मांगा तो उसने पानी देने से इन्कार कर दिया। फिर इन्होने आसमान की तरफ देखकर अल्लाह से पानी मांगा, उसी वक्त एक बादल आया और कोठरी के अन्दर घुस कर बरसने लगा, इन्होने उससे गुस्ल किया और जरूरत भर का पानी भी भर लिया। (इब्ने साद-7-21)

हुजैर बिन अबी इहाब कि बांदी माविया कहती है कि हज़रत खुबैब रज़ि0 को मेरे घर की एक कोठरी मे कैद करके रखा गया था। एक बार मैंनें दरवाज़े की दराज़ से झाँका तो उनके. हाथ मे आदमी के सर के बराबर अंगूरो का एक गुच्छा था। जिसमें से वो अगूंर तोड़ कर खा रहे थें। जब कि उस वक्त पूरे अरब में कहीं अगूंर नहीं थे। यह देख कर मैने अपना जुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गयी कि बेशक अल्लाह तआला ज़रूरतो के पूरा करने में किसी को शरीक नहीं करते।

(इसाबा-1-419)

हकीकत ये है कि अल्लाह के फज्ल के तरीके बेशुमार है जिन्हे अल्लाह के सिवा कोई नही जानता, आज दुनियॉ ने सिर्फ माल और चीजों पर मेहनत का रिवाज है, नमाज को कायम करके अल्लाह पाक के फज्ल व करम से लेने का रास्ता लोग बिल्कुल भूल गयें है हालॉकि यही वो रास्ता है जिसकी दुआ नमाज की हर रकआत में की जाती है, हर रकआत में ‘‘ सूर फातिहा ‘‘ पढ़ी जाती है, इसमे सबसे पहले इस यकीन को ताजा किया जाता है कि

‘‘ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ^^

अल्लाह जल्ला शानुहू सबका परवरदिगार है, वो रहमान और रहीम है, दुनियॉ के अलावा आलमे-आखिरत का मालिक भी वही है और उसकी जात व सिफात से और उसकी रूबूबियत औार रहमत से फायदा उठाने का तरीका ये है कि बस उसकी इबादत हो और उसी से दुआ हो, यही सिरातल मुस्तकीम है, जो अम्बिया, शोहदा, सालिहीन और सिददीकीन का रास्ता है।

हजरत नूह अलै0 ने अपने दुश्मनो की बेपनाह अकसरियत के मुकाबले मे जा कामयाबी हासिल की इसी रास्ते से हासिल की।

हजरत इब्राहिम अलै0 को जो कामयाबी नमरूद की हुकूमत के मुकाबले मे हासिल हुई इसी रास्ते से हासिल हुई।

हजरत मूसा अलै0 और इनकी कौम को फ़िऔन और उसकी फौज के मक़ाबले मे जो कामयाबी हासिल हुई वो इसी

'' إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ^^ के रास्ते से हासिल हुई।

हजरत मुहम्मद सल्ल0 और आपके सहाबा का रास्ता भी यही था इसी रास्ते पर चलने की दुआ हर नमाज की हर रकआत मे इसी तरह की जाती है

" اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ''

बहरहाल अल्लाह पाक के सारे नबियों, रसूलो और उनकी राह पर चलने वाले सब मकबूल बन्दो का रास्ता यही है और इसके बरअक्स जो लोग अल्लाह को पहचानने स महरूम है और माल व सामान ही को अपना माबूद बनाये हुए है उनका रास्ता ये है कि वो लोग अल्लाह की जात व सिफात के यकीन और नमाज को कायम करने से बिल्कुल बेपरवाह और बेफिक्र हो कर सिर्फ माल और कायनाती असबाब पर मेहनत करते है, नमाज को कायम करने मे जो चीज मकसूद है वो खुशुऊ है।

खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करना

खुशुऊ किसको कहते हैं ? हुजूर सल्ल0 के अन्दर वाली कैफियत को खुशुऊ और बाहर वाली सूरत को खुजुऊ कहते हैं या यूँ कह लो कि अन्दर वाली सीरत को खुशुऊ और बाहर वाली शक्ल को खुजुऊ कहते हैं।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अल्लाह तआला की ऐसी इबादत करो गोया कि तुम उनको देख रहे हो और अगर ये कैफियत नसीब न हो तो यह ध्यान रखो कि अल्लाह तआला तुम्हे देख रहे हैं। (तबरानी)

जिस तरह दुकान के बाहर वाली शक्ल को (सूरत को) खुजुऊ कहते हैं और अन्दर वाले सामान को खुशुऊ कहते हैं, इन्सान की परवरिश बाहर वाली शक्ल से (सूरत से) नही होती बल्कि अन्दर वाले सामान से होती है अगर बाहर वाली शक्ल से (सूरत से) परवरिश होती तो कोई शख्स अपनी दुकान को किराये पर नही देता या कोई शख्स काम्पलेक्स बनाकर उसकी दुकान न बेचता। ठीक इसी तरह मुसलमान की परवरिश नमाज के खुजुऊ से नही होगी बल्कि परवरिश का तआल्लुक नमाज के खुशुऊ से है, आज हम मुसलमानो के पास नमाज का खुजुऊ तो है पर नमाज के अमल मे खुशुऊ नही है, जिस तरह मुनाफिकों के पास नमाज का खुजुऊ तो था पर नमाज के अमल मे खुशुऊ नही था। ऐसे लोग जो नमाज के अमल मे खुशुऊ की परवाह नही करते बस नमाज का अमल करके खुश हो जाते हैं ऐसों के लिये, अल्लाह ने फरमाया ! बड़ी खराबी है उन लोगों के लिये जो अपनी नमाज से बेखबर हैं (खुशुऊ से) पर लोग इन्हें नमाजी समझते हैं।

इसीलिय हजरत उमर रजि0 फरमाते थे ! ऐ लोगों तुम अपने अन्दर खुशुऊ पैदा कर लो तुम्हारा जाहिर खुद ठीक हो जायेगा और अमल अपनी आखिरत के लिये करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ से खुद ब खुद हो जायेंगें।

(बिदाया-7-56)

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! (ईमान को ना सीखने की वजह से) दुनियॉ से सबसे पहले नमाज का खुशुऊ उठाया जायेगा, तू देखेगा कि भरी मस्जिद मे एक शख्स भी खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करने वाला ना मिलेगा। (तबरानी)

हजरत अली रजि0 से किसी ने पूछा खुशुऊ क्या चीज है ? फरमाया ! खुशुऊ दिल मे होता है और इसमे ये भी दाखिल है कि किसी तरफ तवज्जोह ना हो। (तर्गीब)

अबु दर्दा रजि0 ने फरमाया ! जिसकी नमाज के अमल मे खुशुऊ नही होता उसकी नमाज उसे बददुआ करती है।

अल्लाह ने फरमाया ! बेशक कामयाबी और फलाह को पहुँच गये वो मोमिन जो खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करने वाले हैं, खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करने वालों के साथ अल्लाह तआला इकराम का मामला करते है।

1 उनकी रिज़्क़ की तंगी हटा दी जाती है।

2 उनके चेहरे पर रौनक़ कर दी जाती है।

3 उनके बदन को राहत और तन्दरुस्ती दी जाती है।

4 उनके दिल को नूरानी बना दिया जाता है।

5 उनकी फरिश्तों से हिफाज़त करायी जाती है।

6 उनके घर में बरकत उतारी जाती है।

7 उनको बीमारी में शिफा दी जाती है।

8 उनकी अजाबे इलाही स हिफाजत की जाती है।

9 उनके बदन के आज़ा में निशात पैदा कर दी जाती है।

10 उनकी बीमारियों को रफाकर दिया जाता है।

11 उनकी ज़िन्दगी में बरकत कर दी जाती है।

12 उनको नेक कामों मे अज्र मिलने लगता है।

13 उनकी दुआऐं कुबूल की जाती है।

14 उनका नेक लोगो की भी दुआओं में हिस्सा हो जाता है।

15 उनकी रोज़ी खिंच कर आती है।

16 फज्र की नमाज़ इख्तियार करने से उनके चेहरों पर सुलहा का नूर कर दिया जाता है।

17 उनके जोहर की नमाज़ इख्तियार करने से रिज़्क़ में बरकत उतारी जाती है।

18 उनके अस्र की नमाज़ इख्तियार करने से जिस्म में कुव्वत दी जाती है।

19 उनके मग्रिब की नमाज़ इख्तियार करने पर औलाद के ज़रिये से मदद की जाती है।

20 उनके इशा की नमाज़ इख्तियार करने से नींद में राहत दी जाती है।

21 उनके इशराक़ की नमाज़ अदा करने से दिन भर के काम बना दिये जाते हैं।

22 उनके चाश्त की नमाज़ अदा करने से रोज़ी में बरकत कर दी जाती है।

23 उनके तहज्जुद की नमाज़ अदा करने पर मसाइल दूर किये जाते हैं वगैरह

अगर ये वादे हमारे साथ पूरे नही हो रहे हैं तो इसकी वजह ये होगी कि हमारी नमाज का अमल अल्लाह के ध्यान से खाली है, जिस तरह हमारे पास 500 रूपये का नोट होने पर भी दुकानदार सामना नही दे रहा है तो सामना न देने की वजह हमारा 500 रूपये का नोट जाली है वरना आटा, चावल, तेल और दाल हमे मिलना चाहिये था। इसी तरह अगर नमाज के अमल से ये वादे हमारे साथ पूरे नही हो रहे हैं तो इसकी वजह यही है कि हमारी नमाज का अमल अल्लाह के ध्यान से खाली है,

नमाज के अमल मे खुशुऊ का मतलब ही अल्लाह को देखना है चूँकि हुजूर सल्ल0 ने मेराज मे अर्श पर पहुँच कर डेढ़ कमान के फासले से अल्लाह का दीदार किया और हम कलाम हुए है, अब कयामत तक जिस मुसलमान की नमाज का अमल हुजूर सल्ल0 वाली कैफियत के साथ होगा वही नमाज खुशुऊ वाली होगी।

अल्लाह जल्ला शानुहू ने नमाज को अपने दीदार ही के लिये दिया है, أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ऐ मूसा, मरे ध्यान के लिये नमाज कायम करो अगर मुसलमान कायनात की हर छोटी बड़ी शक्ल से मायूस आर नाउम्मीद होकरالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ कह रहा है तो इसकी रूह को अल्लाह की जात का दीदार होगा इसलिये कि नमाज के लिये आसमानों के दरवाजे खुल जाते हैं, अल्लाह जल्ला शानुहू और नमाजी के दरमियान के पर्दे हट जाते हैं। अल्लाह जल्ला शानुहू की जात सरापा नूर है उसके नूर से इसकी रूह, इसका चेहरा और नमाज भी नूरानी हो जायेगी, अब यही नमाज रोशन और चमकदार होकर दुआ देती हुई आसमानों के ऊपर चली जाती है। जैसे- टियूबलाईट के सामने अगर रेडियम की तस्बीह हो तो टियूबलाईट की रोशनी तस्बीह में समा जाती है, जज्ब हो जाती है। अब अगर टियूबलाईट को बन्द कर दो तो तुम्हे तस्बीह के दाने रोशन और चमकदार नजर आयेगें, नमाज का अमल तो अपने को नूरानी बनाने के लिये ही मिला है।

ये बात हमेशा याद रखना कि अल्लाह का ध्यान वो नमाजी नही पा सकता जो अल्लाह की मख्लूक के साथ खास तौर से अल्लाह के बन्दों का हक मारे इसलिए कि मख्लूक तो सारी की सारी अल्लाह की अयाल हैं, अल्लाह का परिवार और उसका कुन्बा है इसलिए उसकी मख़्लूक़ के साथः

शफक़त का, करम का, माफी का, बिन मांगें अता करने का, बुर्दबारी का, हक़ वालों के हक़ अदा करने का, पर्दा पोशी का, मेहरबानी का, मोहब्बत का, निगरानी का, सरपरस्ती का, नफा पहुंचाने का और बेनियाज़ी का मामला करे अगर कोई ऐसा न करके उसकी मख़्लूक़ को तकलीफ पहुंचाये और उम्मीद ये करें कि अल्लाह हमें नमाज में अपना ध्यान दे दे तो ये नही हो सकता। इसलिए कि अल्लाह का ध्यान ही ऐसी चीज है जिसे अगर अल्लाह न दे तो ये कही से भी इसे नही पा सकता इसलिये कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के सिवा उस जात को यानी खालिके कायनात को किसी ने नही देखा। हां अब्बा जिनके इन्तिकाल को 10 साल हो गये हैं देखा था आज जैसे ही अब्बा का नाम जुबान से निकलता है उनका ध्यान आ जाता हे पर जब हम अपने खालिक, मालिक और राजिक का नाम ''अल्लाह'' अपनी जुबान से लेते हैं तो हमारा क्या हाल होता है ?

इसकी खबर अपने आपसे लो इसमे किसी मुफती साहब से फत्वा लेने की जरूरत नही है कि हमारे अन्दर का ये हाल है इसलिये कि बातिन (अन्दर) की गन्दगियों मे जब जाहिर का चमन खिलाया जाता है तो यही हाल होता है जो आज हमारा है। आईने पर जब धूल की परत जम जाती है तो सामने वाले को आईने में सिवाये धूल के और कुछ नजर नही आता, यही हाल हमारे दिलों का है कि अल्लाह के गैर से उम्मीदों की गन्दगियों की दिलों पर परत जमी हुई है तो ''अल्लाह की जात का नूर हमें कैसे नजर आये'' दिल तो आईना है ईमान का।

हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! अल्लाह तआला की ऐसी इबादत करो गोया कि तुम उनको देख रहे हो और अगर ये कैफियत नसीब न हो तो यह ध्यान रखो कि अल्लाह तआला तुम्हे देख रहे हैं। (तबरानी)

अल्लाह तआला को देखना या अल्लाह तआला का ध्यान रखना ये दौलत तो उस वक्त हासिल होगी जब हम अपने कन्धों पर बैठे हुए फरिश्ते किरामन और कातबीन का ध्यान रखे, जिस नमाज के अमल मे हमे अल्लाह का दीदार होने वाला है, क्या सारी जिन्दगी की नमाजों के अमल मे कोई एक रकआत भी ऐसी है जो इन फरिश्तों के ध्यान के साथ अमल मे आयी हो ? फरिश्तों को छोड़ो खुद हमारी रूह जिसे अल्लाह का दीदार होने वाला है क्या खुद अपनी रूह का हमे ख्याल आया है ?

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने फरमाया ! गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दायें-बायें के फरिश्तों से शर्म न आयी तो ये उस किये हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।

(कंज-8-224)

इसीलिये अल्लाह तआला ने हुजूर सल्ल0 के जमाने को और हुजूर सल्ल0 वाले अमल करने वाले इन्सानो को दो किस्मों मे तक्सीम किया है जो कयामत तक हुजूर सल्ल0 वाले अमल करने वाले इन्सानों के लिये नमूना है,

1- सहाबा किराम रजि0 2- मुनाफिकीन

अल्लाह जल्लाशानुहु ही इन दोनो किस्म के लोगों को नमाज का अमल करने की तौफीक देते थे मिसाल के तौर पर फज्र की नमाज के लिये नीद से जगाया, वुजु कराया, मस्जिद की तरफ चलाया, पहली सफ या दूसरी, तीसरी सफ में खड़ा कराया, तक्बीरे तहरीमा कहलाकर हाथ बंधने तक सारा का सारा अमल अल्लाह से मिली हुई तौफीक से हुआ यानी अमल की इब्तिदा तक हर तैयारी कराना अल्लाह तआला के चाहने से होता है। अब अमल को शुरू करके उसके खत्म तक बन्दे ने अमल अच्छा या बुरा किया, ये बन्दे के जिम्मे है, नियत करके हाथ बांधने से लेकर सलाम के फेरने तक हमने नमाज के साथ क्या मामला किया है ? इसका नतीजा सलाम के फेरते ही हमे मिल जायेगा कि या तो नमाज नमाजी को दुआ देगी और या तो बददुआ, बीच का या तीसरा कोई रास्ता नही या दुआ या बददुआ। हमारे सामने तो सिर्फ इतनी बात है कि अल्लाह तआला जब किसी का अमल कुबूल कर लेते हैं तब ही उसे दोबारा उस अमल को करने की तौफीक देते है तो क्या मुनाफिकों की भी नमाज का अमल कुबूल होता था ? इसलिये कि उनकी भी इशा और फज्र की नमाज जमाअत के साथ होती थी हत्ता कि वो तहज्जुद का भी एहतमाम करते थे पर इतना सब कुछ करने के बाद भी वो हमेशा के लिये जहन्नम में काफिर और मुश्रिक से नीचे दर्जे में डाले जायेगें।

गौर करो अमल सहाबा किराम भी करते थे और मुनाफिक भी करते थे वो भी रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ पर सहाबा को कामयाबी में नमूना बनाया और मुनाफिकों को नाकामी में नमूना बनाया, अमल दोनो करते थे पर सहाबा अमल की शर्तों को पूरा करते थे और मुनाफिकिन ने शर्तों की परवाह नही की सिर्फ अमल को असल समझा। मुनाफिकिन न बुतों के सामने सर झ़काते थे, न चॉद, सूरज और सितारों की पूजा करते थे, न नमाज छोड़ते थे, न रोजा छोड़ते थे, न तस्बीह तिलावत छोड़ते थे, सौ फीसद हुजूर सल्ल0 की सुन्नतो के पाबन्द थे, खुलासा ये कि मुनाफिकिन किसी भी जाहिरी शिर्क मे मुब्तिला नही थे जिस तरह हम लोग भी आज किसी जाहिरी शिर्क मे मुब्तिला नही हैं पर नमाज का अमल वो भी असबाब के यकीन के साथ करते थे और हम भी नमाज का अमल असबाब के यकीन के साथ कर रहे हैं। हॉलाकि अमल की शरायत हर एक के लिये जरूरी हैं, अमल और सबब का एक ही मामला है, जैसे कोई आदमी मोबाईल से फायदा हासिल करना चाहे तो मोबाईल से फायदा हासिल करने की शर्त सिम कार्ड है, इसी तरह मोटर साईकिल या कार से फायदा हासिल करने की शर्त पेट्रौल या बैटरी है। गर्ज ये कि हर सबब से फायदा हासिल करने के लिये हर सबब के साथ कोई न कोई शर्त होती है, जब शर्त पूरी की जातो है तब ही फायदा हासिल होता है ठीक इसी तरह हर अमल के साथ भी शर्त जुडी है, बस अमल और सबब मे फर्क सिर्फ इतना है कि हर अमल के साथ अल्लाह का ध्यान शर्त है पर सबब मे अलग-अलग शर्ते होती हैं। मोबाईल से सिमकार्ड के बगैर फायदा हासिल न होगा और मोटर साईकिल या कार से पेट्रौल या बैटरी के बगैर फायदा हासिल न होगा, इसी तरह अगर अमल अल्लाह के ध्यान के बगैर ह तो कोई फायदा हासिल न होगा बल्कि इसका ये अमल इसे अल्लाह से और दूर कर देगा। इसलिये हुजूर सल्ल0 वाले अमल करना कोई बड़ी बात नही है मुनाफिक करते थे लेकिन शर्तों को पूरा करते हुए अमल करना कमाल की बात है और इसके लिये सहाबा किराम रजि0 कयामत तक के लिये नमूना है,

हमे तुम्हे भी नमाज का अमल अल्लाह से पूरे इस्लाम पर चलने की तौफीक लेने के लिये करना है कि जिस तरह नियत बांधने से लेकर सलाम के फेरने तक हमने अपनी आंख, कान, जुबान, दिमाग, हाथ और पैरों को अल्लाह के हुक्मों पर जिस तरीके

से रसूलुल्लह सल्ल0 ने इस्तेमाल बतलाया था वैसे ही अमल किया हैं, उसी तरह नमाज के अमल मे सलाम फेरने के बाद से अगली नमाज तक हमारे ये जिस्म के आजा अल्लाह की मंशा और मर्जी पर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जैसे इस्तेमाल किया था उसी तरह अल्लाह के ध्यान के साथ इस्तेमाल हों, इस इस्तेमाल को इबादत कहते है। इबादत मे सबसे बड़ा अमल नमाज का है इसलिये कि नमाज ही ऐसा अमल है जिसमे अल्लाह तआला अपना ध्यान देते है अगर नमाज में इसे अल्लाह का ध्यान ना हासिल हुआ तो किसी भी अमल में अल्लाह का ध्यान नही आयेगा।

हमें कैसे पता चलेगा कि अल्लाह का ध्यान हासिल हुआ या नही ? दो चीजों से इसका पता चलेगा पहला ये कि जब हमारे सामने अल्लाह का नाम लिया जायेगा तो अल्लाह की अज्मत से हमारा दिल डर जायेगा जिस तरह चोर के कानों मे पुलिस का नाम पहुचते ही चोर का दिल डर जाता है और दूसरा ये कि जब हमारे जिस्म का कोई आजा अल्लाह के हुक्म के खिलाफ इस्तेमाल होगा तो हमे खटका हो जायेगा कि हाय ! ये क्या हुआ फिर जब तक अपने इस अमल की अल्लाह से माफी न मांग ले हमे चैन न आये। अल्लाह के गैर से नाउम्मीदी और मायूसी पर ही नमाज हमारी मेराज बनेगी वरना चार रकअत की नमाज के अमल में शैतान हमे चार जगह ले जायेगा कि कभी खोयी हुई चीजें याद दिलायेगा और कभी बाजार मे ले जायेगा, कभी पैसें याद दिलायेगा तो कभी दुकान मे ले जायेगा और हम मुतमईन रहेंगें कि हम नमाजों की पाबन्दी करते हैं हांलाकि हम शैतान के चुंगुल में फंसे है पर नमाज के अमल को हम नमाज समझ कर पढ़े जा रहे हैं, ऐसी नमाज बजाय अल्लाह के करीब करने के अल्लाह से दूर करती है।

शैतान नमाजी को नमाज में उचक ले जाता है और इसके उचक ले जाने की वजह गफलत है और गफलत की वजह मख्लूक की हैसियत का हमारे दिलों में असर है हालांकि अल्लाह तआला ने इंसान का दिल सिर्फ इसलिए बनाया था कि इस दिल पर अल्लाह की हैसियत का असर रहे ताकि जिस्म के सारे आजा उसकी इताअत और फरमाबरदारी करें अगर आप किसी वजीर के घर जाओ तो उस वजीर की हैसियत का असर आप अपने दिल पर खुद महसूस करते हो, पुलिस स्टेशन पर जाओ तो पुलिस वालों का अलग और पुलिस के अफसर का असर आप खुद महसूस करते हो, सापॅ का असर, शेर का असर यानी हर चीज की हैसियत का असर आपको खुद महसूस होता है पर अल्लाह के घर मस्जिद मे पहुँच कर क्या कभी अपने दिल पर अल्लाह की हैसियत का असर महसूस किया है ? तो जवाब मिलेगा कि इस पर कभी गौर ही नही किया, इस हाल मे आप अब खुद फैसला करो कि क्या हम नमाज से परवरिश पा लेंगें ?

आज बेनमाजी से ज्यादा नमाजी परेशान मिलेंगे, वजह ? इसकी वजह ये है कि बेध्यानी वाली नमाजें नमाजियों को बददुआ कर रही है कि ऐ अल्लाह ! इसने हमारा हक अदा नही किया है कि नमाज हो और अल्लाह का ध्यान न हो, ये कैसे हो सकता है कि सूरज हो और राशनी न हो ये कैसे हो सकता है, जो चीज जिस लिये बनायी गयी है वही न हो ? याद रखना शैतान मुसलमान को अल्लाह के ध्यान के मामले मे धोखा नही दे सकता, हॉ ईमान मे धोखा दे सकता है, देता है और दे रहा ह इसलिये कि शैतान मुसलमान की जुबान से निकले हुए ईमान के बोल पर मुतमईन रखता है हालॉकि इसका दिल अल्लाह के अलावा की उम्मीदों से भरा रहता है।

कोई नबी से उम्मीद लगाये है,

कोई वली से उम्मीद लगाये है,

कोई बाप से उम्मीद लगाये है,

कोई औलाद से उम्मीद लगाये है,

कोई माल से उम्मीद लगाये है,

कोई दुकान से उम्मीद लगाये है,

कोई चीजों से उम्मीद लगाये है,

शैतान मुसलमान को इस शिर्क मे फंसाकर जबान के बोल पर मुतमईन रखता है कि ईमान तो है ही, मुसलमान को शैतान अल्लाह के ध्यान मे धोखा न दे सके इसके लिय अल्लाह तआला ने नमाज भेजी है। अल्लाह पर ईमान और अल्लाह का ध्यान ये दोनो एक ही चीज है और इसको जाहिर करने के लिये अल्लाह ने नमाज दी है अगर मुसलमान के अन्दर ईमान है तो अल्लाह तआला नमाज के अमल मे इसे अपना ध्यान देगें। जैसे-किसी मशहूर डाक्टर ने आपको शूगर का मर्ज बतलाया अगर आपका डाक्टर की बात पर ईमान है तो हर वक्त आपको शूगर का ध्यान रहेगा, चाहे आप दस्तरखवान पर हों या पाखाने मे हों, बिस्तर पर हों या दुकान पर हों, घर पर हों या सफर मे हों, शादी मे हों या गमी मे हों, आप अपनी जिन्दगी को हर वक्त शूगर के ध्यान के साथ गुजारेगें कि क्या खाना है और क्या पीना है, कैसे बैठना है और कैसे लेटना है, हर हाल मे आपको शूगर का ध्यान रहेगा। क्यों ? क्योंकि जिस चीज पर आप ईमान लाये हो उसका ध्यान उस चीज से जुड़ा हुआ है कि ईमान और उसका ध्यान ये एक ही चीज है। यहाँ एक बात और याद रखना कि जिसे नमाज के अमल मे अल्लाह का ध्यान मिल गया उसके जिस्म की हर हरकत यानी उसका हर अमल अल्लाह के ध्यान के साथ होगा और जिसे नमाज के अमल मे अल्लाह का ध्यान हासिल न हुआ तो उसके किसी अमल मे अल्लाह का ध्यान न होगा।

नमाज के अमल मे अल्लाह का ध्यान न होना ये ईमान न होने की अलामत है, इसीलिये नमाज के अमल मे खुशुऊ फर्ज है अगर नमाज के अमल मे खुशुऊ नही है तो अल्लाह तआला की सबसे महबूब तरीन मख्लूक नमाज, अपना अमल करने वाले नमाजी को बददुआ देकर हलाक करायेगी, क्यों ? क्यों कि दुनियाँ वालों को तूने मुनाफिकों की तरह धोखे मे डाल रखा है वो बेचारे तुझे नमाजी समझते हैं पर तू नमाजी नही है, नमाजी वो है जिसे नमाज के अमल मे अल्लाह का दीदार हो। जिसे नमाज के अमल मे अल्लाह का दीदार होगा अल्लाह तआला अपनी कुदरत उसके साथ कर देगें फिर उसकी हर जरूरत को अल्लाह तआला नमाज के अमल पर पूरा करेगें इसलिये कि नमाज ने इस नमाजी की अल्लाह से सिफारिश की है, अब इसके नमाज के अमल पर वो होगा जो अम्बिया, सहाबा और औलिया के साथ हुआ है जैसे-

हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ि0 फरमाते हैं कि मैने तायफ मे एक आदमी से किराये पर एक खच्चर लिया, खच्चर वाले ने एक शर्त लगायी कि रास्ते मे जिस मंजिल पर चाहेगा मुझे ठहरायेगा चुनांचे वो मुझे एक वीराने की तरफ लेकर चला और आगे पहुँच कर उसने मुझसे कहा ! यहाँ ठहरो।

मैं खच्चर से उतर गया तो देखा कि बहुत से लोग वहाँ कत्ल हुए पड़े थे, जब वो मुझे कत्ल करने के लिये आगे बढ़ा तो मैंने उससे कहा कि मुझे दो रकआत नमाज का अमल कर लेने दो।

उसने कहा ! ठीक है अमल कर लो क्योंकि तुमसे पहले उन लोगों ने भी नमाज का अमल किया था पर उनको नमाज से कोई फायदा न हुआ।

मैंने नमाज का अमल कर लिया तो वो मुझे कत्ल करने के लिये आगे बढ़ा तो मैंने कहा “ या अरहमर्राहीमीन” उसने एक आवाज सुनी कि इसे कत्ल न करो, वो एकदम डर गया और आवाज देने वाले को तलाश करने लगा पर उसे कोई न मिला, वो जब वापस मेरी तरफ आया तो मैंने ऊँची आवाज मे फिर “ या अरहमर्राहीमीन” कहा, इस तरह तीन बार हुआ फिर अचानक घोड़े पर एक सवार सामने आ गया। उसके हाथ मे लोहे का एक नेजा था जिसमे से आग निकल रही थी, उस सवार ने उस नेजे को इस जोर से मारा कि नेजा कमर के पार हो गया और वो जमीन पर गिरकर मर गया फिर वो सवार मुझसे कहने लगा कि जब तुमने पहली बार“ या अरहमर्राहीमीन” कह कर पुकारा था तो उस वक्त मैं सातवें आसमान पर था, जब दोबारा पुकारा तो मैं आसमाने दुनियाँ पर था, जब तीसरी बार पुकारा तो मैं आपके पास पहुँच गया।

(इस्तिआब जिल्द-1 सफा-548)

यहॉ पर एक सवाल फिर पैदा होता है कि लुटेरे ने हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ि0 से ये क्यूॅ कहा ! कि ठीक है तुम भी नमाज का अमल कर लो क्योंकि तुमसे पहले उन लोगों ने भी नमाज का अमल किया था पर उनको नमाज से कोई फायदा न हुआ। इस सवाल का जवाब ये है कि उन नमाज का अमल करनें वालों के अमल मे खुशुऊ नही था वरना उन लोंगो के साथ भी अल्लाह का वादा पूरा होकर रहता जिस तरह औरों के साथ हुआ है।

हज़रत अबुहुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं ! एक अंसारी सहाबी क घर में खाने पीने को कुछ नही था, उन्होंने घर के फक्र-फाके की हालत देखी तो लोगों से अपने फक्र और फाके को छुपाने के लिए जगंल की तरफ चले गये, उनकी बीबी ने घर मे नमाज का अमल किया, अमल करके चक्की के ऊपर वाले पत्थर को नीचे वाले पत्थर पर रख दिया फिर आकर तन्दूर में आग जला कर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! हमें रोज़ी अता फरमा तो उस औरत ने देखा चक्की अपने आप चलने लगी और उसमें से आटा निकलने लगा, वहॉ रखा प्याला भुनी हुई चापों से और तंदूर रोटियों से भरा हुआ है।

उसके शौहर ने जगंल से अपने घर से जब धुआँ निकलता हुआ देखा तो वो अपने घर वापस आ गया, घर के बाहर पहुँचने पर इन्हें अन्दर से चक्की चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। इन्हेंने आवाज़ दी तो इनकी बीबी आवाज़ सुनकर दरवाज़े पर आयीं, इन्होंने बीबी से पूछा की क्या पीस रही हो ? बीबी ने इनको सारी कारगुज़ारी सुनाई, ये अन्दर गये और इन्होंने चक्की से आटा निकलते देख कर, घर के सारे बरतनों को आटे से भर लिया फिर चक्की के ऊपर का पाट उठाया और उसको भी झाड़ कर फिर रख दिया लेकिन अब चक्की न चली तो फिर हुज़ूर सल्ल0 के पास जा कर ये सारा वाक्या सुनाया। हज़ूर सल्ल0 ने इनकी बात सुनकर फरमाया ! अगर तुम चक्की को उसी हालत में रहने देते तो क़यामत तक उस चक्की से आटा निकलता रहता। (अहमद-बिदाया-6-119)

नमाज के अमल मे अल्लाह का दीदार मुसलमान को कैसे हो इसके लिये अल्लाह जल्ला शानुहू ने रसूलूल्लाह सल्ल0 से सहाबा किराम रजि0 को नमाज से पहले के तीन काम बतलाये, सहाबा किराम रजि0 जब वो तीनों काम करने लगे तो अल्लाह जल्ला शानुहू ने रसूलुल्लाह सल्ल0 को आसमानो के ऊपर बुलाकर नमाज अता फरमायी, वो तीनों काम क्या हैं जो रसूलूल्लाह सल्ल0 ने सहाबा किराम रजि0 से करवाये ?

वो तीनाँ काम इल्म, ईमान और ध्यान है और काम करने की वजह हजरत इब्ने अब्बास रजि0 के नमाज को कायम करने के कौल मे मौजूद है कि

सहाबा किराम इल्म की वजह से हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहने वाले बने।

सहाबा किराम ईमान की वजह से इत्मिनान से रूकुउ और सज्दा करने वाले बने।

सहाबा किराम ध्यान की वजह से खुशुऊ के साथ नमाज का अमल करने वाले बने।

हजरत मुआज बिन जबल रजि0 फरमाते थे कि जो शख्स इल्म और ईमान को तलाश करेगा वो इन्हे जरूर पा लेगा इसलिये इल्म और ईमान को वहॉ तलाश करो जहॉ इब्राहिम अलै0 ने तलाश किया था,

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ،

इब्राहिम अलै0 ने कहा ! मैं अपने रब की तलाश मे हूॅ वही अपने तक पहॅुचने का रास्ता दिखायेगा।

हजरत जुन्दुब बिन अम्र बिन हुममा बिन औफ दौसी रजि0 जाहिलियत के जमाने मे कहा करते थे कि हमें और कायनात को बनाने वाला कोई है लेकिन वह कौन है ? ये मै नही जानता ? (इसाबा जिल्द 2/225)

यही सवाल हजरत इब्राहीम अलै0 के अन्दर पैदा हुआ कि हमारा बनाने वाला कौन है ?

हमारी जरूरतों को पूरा करने वाला कौन है ?

हमारी आंखों मे रोशनी पहुंचाने वाला कौन है ?

हमारे कानों में आवाज पहुंचाने वाला कौन है ?

हमारे दिमाग को याद करने और भूलने की सलाहियत देने वाला कौन है ?

हमारी जुबान से बोल निकलवाने वाला कौन है ?

हमारे दिल को धड़काने वाला कौन है ?

हमारे जिस्म के अन्दर खून को दौड़ाने वाला कौन है ?

हमारे बाल उगाने वाला कौन है ? वगैरह- वगैरह

ये बेकरारी, ये फिक्र और एक तलाश कि हमारा बनाने वाला कौन है ?

मां से पूछ रहें हैं कि अम्मा मेरा रब कौन है ? मां ने जवाब दिया " मै "।

जवाब सुनकर इब्राहीम अलै0 मॉ के बारे में गौर करने लगे तो नतीजा ये निकला कि अम्मा के भी मेरी तरह हाथ पैर आंख कान जुबान वगैरह की जरूरतें तो खुद कोई पूरी कर रहा है फिर ये हमारी जरूरतें कैसे पूरी करेगी ? ये तो खुद बनी हुई है फिर इन्होने मुझे कैसे बनाया होगा ? मां के जवाब से इन्ह इत्मिनान न हुआ तो फिर सवाल किया कि अम्मा तुम्हारा रब कौन है ? अम्मा ने जवाब दिया "तुम्हारे अब्बा"। अम्मा के इस जवाब से भी इन्हे इत्मिनान न हुआ तो फिर सवाल किया कि अब्बा का रब कौन है ? इनकी मां ने जवाब दिया "नमरूद" इब्राहीम अलै0 ने फिर पूछा कि अम्मा नमरूद का रब कौन है ? तो इनकी मां ने इनके मुँह पर हाथ रख दिया कि इब्राहीम इसके आगे कोई और सवाल न करे और कहा कि वही सबका रब है। आम तौर पर इन्सान रब का मतलब ये समझते हैं कि जो खाने पीने और पहनाने का इन्तिजाम करे, रोजी के मफहूम में लोग यही तीन चीजें समझते हैं हांलाकि रोटी और कपड़े से बड़ी नियामतें,

आंखों को रोशनी का मिलना

कानों के अन्दर आवाज का जाना

जुबान से बोल का निकलना

दिमाग का सोचना

हाथ पैर में ताकत का पहुंचना

अगर रोटी और बोटी कीमती हैं तो मैदाने तीह में 40 साल तक बनी इसराईल की रोटी-बोटी पानी और कपड़ों का किसने इन्तिजाम किया ?

इब्राहीम अलै0 की अम्मा के भी सामने यही तीन चीजें रोटी बोटी और कपड़ा कि रब उसी को कहते हैं जो इन तीन चीजों का इन्तिजाम करे जबकि इब्राहीम अलै0 के सामने ये सवाल कि

मेरे जिस्म को बनाने वाला कौन ?

मरी रूह को बनाने वाला कौन ?

मेरे जिस्म के आजा की जरूरतें पूरी करने वाला कौन ?

इन बातों को सामने रखकर इब्राहीम अलै0 ने मां से सवाल किया था "अम्मा मेरा रब कौन है" ?

बहरहाल जब इनकी मां ने इनके मुंह पर हाथ रख दिया ओर इनसे कहा कि हम सब का रब नमरूद ही है लेकिन इब्राहीम अलै0 को उनके सवाल का जवाब न मिला और ये रब की तलाश में लगे रहे।

आदमी जब मायूस हो जाता है तो वो ऊपर देखता है इब्राहीम अलै0 भी मायूस होकर ऊपर देखने लगे तो ऊपर तारे पर नजर पड़ी हालॉकि आसमान में तारों को वो पहले भी देखा करते थे पर आज रब को तलाश मे तारे को देखा और गौर से देखते ही रहे तो इस नतीजे पर पहुंचे कि हो न हो यही हमारा रब है कि ये बुलन्दी पर है चमक रहा है यही हमारा रब है।

अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक मे यही इर्शाद फरमाया है

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغاً قَالَ هَـذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لأكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَـذَا رَبِّي هَـذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفاً وَمَا أَنَاْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

फिर जब उस पर रात का अंधेरा छा गया तो उसने एक सितारा देखा तो फरमाया ! यह मेरा रब है सो जब वो छिप गया तो फरमाया मै छिप जाने वालों से मुहब्बत नही रखता फिर जब चांद को चमकता हुआ देखा तो फरमाया यह हमारा रब हे सो जब वो छुप गया तो आपने (इब्राहीम अलै0) फरमाया अगर हमारा रब मुझको हिदायत न करता तो मै गुमराह लोगों मे शामिल हो जाता फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो फरमाया यह मेरा रब हे ये तो सब से बड़ा है सो जब वह छुप गया तो फरमाया ऐ मेरी कौम बेशक मै तुम्हारे शिर्क से बेजार हूं। (सूरः अनआम-77-78-79)

हजरत इब्ने अब्बास रजि0 इसको हजरत इब्राहीम अलै0 का मकामे गौर व फिक्र करार देते हैं कि खुद उन्होने अपने रब को तलाश करने और पहचानने मे इस तरह गौर व फिक्र की हजरत इब्ने अब्बास रजि0 ने,

"मेरा रब ही अगर मुझको हिदायत न करता तो मै गुमराह हो जाता "

इस कौल से दलील दी है कि इब्राहीम अलै0 ने रब को जानने के लिए खुद गौर व फिक्र की है। (इब्ने कसीर जिल्द-1)

यहां पर इस हदीस का मफहूम भी सामने रहना चाहिए जो नीचे लिखी जा रही है,

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! दो चीजें ऐसी हैं जिन्हे कोई शख्स अगर हासिल करना चाहे तो अल्लाह तआला उसे जरूर देते हैं 1-ईमान 2-इल्म जैसे इब्राहीम अलै0 को अता किया कि इब्राहीम अलै0 न ईमान जानते थे और न इल्म जानते थे लेकिन जब उसकी तलाश में लगे तो अल्लाह ने उन्हें ये दोनो चीजें अता फरमा दी। (हुलिया जिल्द 1/523)

तो इब्राहीम अलै0 तारे को अपना रब समझ कर इत्मिनान पा गये हांलाकि ये इत्मिनान कुछ देर बाद चांद के नजर आने पर जाता रहा, अब फिर बेकरारी और उलझन कि ये चांद तो तारे से बड़ा है इसकी रोशनी सारे तारों से ज्यादा है कहीं ये तो रब नही है ? खुद ही तारे को रब करार दिया था ओर अब खुद इसका इन्कार कर रहे हैं कि तारा नही ये चांद हमारा रब है। अब सारी रात इत्मिनान से गुजार दी कि हमने अपने रब को जान लिया पर सूरज के नजर आते ही चांद को रब मानने से इनकार कर दिया कि चांद का, तारों का, अब्बा, अम्मा और नमरूद का, हमारा और सारे जहान का रब ये सूरज है पर शाम होते ही जब सूरज गुरूब हुआ तो एक बार और नाकामी कि अब उनका दिमाग सूरज को रब मानने से इन्कार कर गया

कि ये भी हमारा रब नही है पर आखिर हमारा रब कौन है ? इस नाकामी, इस बेकरारी और इस उलझन ने इन्हे हर तरफ से मायूस और नाउम्मीद कर दिया।

इब्राहिम अलै0 की ये मायूसी और नाउम्मीदी की मेहनत और जददोजहद रंग लायी कि जिब्रील अमीन रब के भेजने पर इब्राहीम अलै0 के सामने आये और रब के बारे में बतला दिया कि हम सबका रब अल्लाह है जो अर्श- ए- अजीम से सब कुछ देख ओर सुन रहा है।

أَوَ مَن كَانَ مَيْتاً فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُوراً يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ

فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُواْ يَعْمَلُونَ

ऐसा शख्स जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको जिन्दा बना दिया और हमने उसको एक ऐसा नूर अता कर दिया जिस नूर को लेकर वो हमारे बन्दों के बीच चलता फिरता है, क्या ये उस शख्स की तरह हो सकता है जिसकी हालत ये है कि वो अंधेरियों मे हो और उन अंधेरियों से निकलना ही नही चाहता ? (सूरः अनआम-123)

बाज उलमा कहते हैं ये आयत खास तौर पर हजरत उमर बिन खत्ताब रजि0 और यासिर बिन अम्मार रजि0 के बारे में है लेकिन अक्सर उलमा का इत्तेफाक है ये आयत आम है और इससे हर मोमिन और काफिर मुराद है।

इस तरह इब्राहिम अलै0 ने रब को जान लिया कि मेरा रब अल्लाह है पर अब जरूरत थी रब को पहचानने की, इसके लिये इन्होने दूसरों को अल्लाह के रब होने का बतलाना शुरू किया तो लोगों मे ये चर्चा आम हो गयी कि आजर का बेटा इब्राहिम अल्लाह को रब बतला रहा है, ये बात नमरूद तक पहुंची तो नमरूद ने लोगों में ऐलान करा दिया कि कोई शख्स इब्राहिम को खाने पीने का कोई सामान न दे, इस ऐलान के बाद लोगों ने घर से भी निकाल दिया।

ये अपनी बीवी हजरत सारा रजि0 के साथ एक जगह भूखे प्यासे रहने लगे, जब तीन दिन तक इन्हे खाने को कुछ न मिला तो चौथे दिन अपनी सवारी और एक खाली बोरी लेकर घर से निकले कि शायद कहीं से कुछ खाने का सामान मिल जाये। शाम तक यहां वहां जाते रहे पर खाने का कोई सामान न मिला, जब मायूस और नाउम्मीद होकर घर वापस होने लगे तो बोरी में मिटटी भर ली, मिटटी की बोरी घर पहुंच कर अन्दर रख ली। हजरत सारा रजि0 ने इनके चेहरे पर दिन भर की थकान का असर देखकर आराम करने के लिए कपड़ा बिछा दिया, हजरत इब्राहीम अलै0 आराम करने लगे। कुछ देर के बाद हजरत सारा रजि0 हाथ में रोटी लेकर आयी और हजरत इब्राहीम से कहा ! रोटी खा लीजिये, इब्राहीम अलै0 ने रोटी देखकर सवाल किया ये कहां से आयी ?

हजरत सारा रजि0 ने जवाब दिया कि जो आटा आप बोरी में लेकर आये है उसी की बनायी है। ये सुनकर हजरत इब्राहीम अलै0 ताज्जुब में पड़ गये कि बोरी में तो मिटटी थी पर सारा बतला रही है बोरी मे आटा है इब्राहीम अलै0 के लिये ये ताज्जुब की बात थी लेकिन ये बात उन्होने हजरत सारा रजि0 से उस दिन न बतलायी, अगले दिन से अल्लाह ही रब है के तज्किरे और ताकत के साथ शुरू कर दिये इसी बात पर इनको आग में डाला गया और आग मे जब आपने हवा और पानी के फरिश्तों की मदद लेने से इंकार किया तो जिब्रील अलै0 ने आपकी मदद के लिए अपने को पेश किया, इब्राहीम अलै0 ने उनसे भी कह दिया "अम्मा इलैका फला"

अल्लाह ही रब है इसको जानना और समझना ये हर इन्सान की सबसे पहली जरूरत है, रोटी-कपड़ा और मकान बहुत बाद की चीजें हैं, अम्बिया, सहाबा और औलिया की सीरत में यही मिलता है। रसूलूल्लाह सल्ल0 ने सहाबा किराम को अल्लाह की कुदरत का, उसकी रूबूबियत का, उसके गैबी निजाम का और जरूरतों के पूरा करवाने के रास्तों का इल्म सिखलाया था लेकिन आज ईमान को न सीखने की वजह से पढ़ने और पढ़ाने को इल्म का सीखना समझा जा रहा है।

इल्म का सीखना किसे कहते हैं ? इल्म का सीखना ये है कि इन्सान अल्लाह और रसूल की बातों को मोहताज बनकर सुने तो इसे इल्म का सीखना कहते हैं, रसूलूल्लाह सल्ल0 ने सहाबा किराम को इस तरह से इल्म सिखलाया था, इसमे सबसे पहले रब को जानना और रब की मंशा (मर्जी) को जानना कि मेरा रब मुझसे क्या चाहता है ? रब की मंशा (मर्जी) को जानकर रब के ध्यान के साथ उस पर अमल करना, सहाबा किराम ने रसूलूल्लाह सल्ल0 से इस तरह इल्म, ईमान, ध्यान और अमल को सीखा था, जो शख्स ऐसा न करे कुरआन और हदीस की रोशनी में वो जाहिल है, पढ़ा लिखा चाहे जितना हो पर अल्लाह के यहां ये शख्स जाहिलों में शुमार किया जाता है, इल्म किसी सनद और डिर्गी का नाम नही बल्कि अल्लाह से डरने का नाम इल्म है अगर ऐसा नही है तो ऐसा आदमी जाहिल है।

जाहिल किसे कहते हैं ? जाहिल अपने ऊपर जुल्म करने वाले को कहते हैं, इसलिये कि दूसरों पर जुल्म करने वाला इन्सान तो जालिम है पर अपने ऊपर जुल्म करने वाले को जाहिल कहते है कि हमे किसने बनाया ? कहां बनाया कैसे बनाया ? क्यों बनाया ? 100 साल पहले हम कहां थें ? 100 साल बाद हम कहां होंगे ? हमारी हर जरूरत को हर जगह कौन पूरी कर हरा है और कौन पूरी करेगा ?

इन सवाला से अन्जान बन कर जिन्दगी गुजारने वालों को ही जाहिल कहते है और जाहिल बनकर जिन्दगी गुजारना दुनिया और आखिरत दोनो जहांन को बरबाद करना है, अब इन सवालात की तरफ इन्सान कैसे मुतव्वज्जह हो ? इस कायनात मे ये सबसे बड़ा सवाल हैं। अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को इस तरफ मुतवज्जा कराने के लिये दुनियां में नबियों और रसूलों को भेजा, जिन्होने इन्सानो को आलम-ए-अर्वाह में अल्लाह के रब होने के इकरार को याद दिलाया, ये अम्बिया अलै0 की बेअसत का मकसद हुआ करता था कि لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه ऐ लोगों जहां-जहां से तुम्हारी जरूरतें पूरी होती हुईं नजर आ रही हैं जरूरते वहां से पूरी नही हो रही हे बल्कि अकेले अल्लाह जरूरतों को पूरा कर रहे है। हर नबी का ये सबसे पहला नारा और सबसे पहला काम था कि इन्सानों को कायनात की हर छोटी-बड़ी शक्ल स मायूस और नाउम्मीद कराये, इन्सान किसी चीज से मायूस और नाउम्मीद उसी वक्त होता है जब उसे उस चीज की हकीकत समझायी जाये, उसकी इब्तदा और इन्तेहा को बतलाया जाये, इन्सानों को जाहिरी निजाम से नाउम्मीद और मायूस कराया जाये क्यों कि जाहिरी निजाम से नाउम्मीद और मायूस हुए बगैर गैबी निजाम किसी की हिमायत में नही आयेगा हालॉकि असल गैब का निजाम है, गैब मे इन्सानों की रूहों को कैसे और कहॉ पैदा किया गया ? इसकी खबर कुरआन दे रहा है,

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُواْ بَلَى شَهِدْنَا أَن تَقُولُواْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है ! जब आपके रब ने आदम (अलै0) की पीठ से उनकी औलादों को पैदा किया फिर उनसे सवाल किया ! क्या मै तुम्हारा रब नही हूँ ? सबने जवाब दिया बेशक। फिर हमने गवाह बनाया (फरिश्तों को) हमने ये इकरार इसलिये कराया कि कयामत के दिन ये न कहने लगो कि हमे पता नही था (आप हमारे रब हैं) (सूर.आराफ.172)

अब इस आयत की तफसीर पर भी गौर किया जाये,

हज़रत उबई बिन क़ाब रज़ि0 बयान फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने जब आदम अलै0 की पीठ से इन्सानों की रूहों को निकाला और उन्हे एक जगह जमा किया फिर उन्हे जोड़ा-जोड़ा बनाया, उनकी शक्लें बनायीं, उन्हे बोलने की ताकत दी फिर सबसे सवाल किया कि क्या मै तुम्हारा रब नही हूॅ ?

सबने जवाब दिया, बेशक ! आप ही रब हो।

इस इकरार पर अल्लाह तआ़ला ने फरिश्तों को गवाह बनाया ताकि कयामत दिन इनमे से कोई ये न कहे कि हमे पता नही था। यकीन मानो ‘‘मेरे सिवा कोई माबूद और रब नही है’’ इसलिये मेरी रूबूबियत मे किसी चीज को शरीक न करना। मैं

तुम्हारे पास नबी और रसूल भेजता रहूँगा, जो तुम्हे ये अहद और पैमान याद दिलायेगें आर तुम पर अपनी किताबें उतारूगां तो सबने जवाब दिया कि हम इकरार कर चुके हैं कि आप ही हमारे रब हैं, आपके सिवा हमारा कोई रब नही है।

(मुस्नद अहमद)

क़रआन की बात और तफसीर की रोशनी मे हमे पता ये चला कि रूह और जिस्म को बनाने वाले अल्लाह है, रूह को आदम अलै0 की पुश्त से पैदा किया फिर उसे जिस्म दिया और जिस्म के सारे आजा की जरूरतों को आसमानों के ऊपर पूरा किया कि (जिस तरह हजरत ईसा अलै0 के जिस्म के आजा की सारी जरूरतों को दूसरे आसमान पर लगभीग 2000 साल से पूरा कर रहे हैं)

आंखों को रोशनी का दी।

कानों के अन्दर आवाज पहुचॅायी।

जुबान से बोल को निकलवाया।

दिमाग को सोचना की सलाहियत दी।

हाथ पैर में ताकत पहुंचायी।

जिस्म के अन्दर खून पहुंचाया वगैरह- वगैरह फिर सारे इन्सानों से आसमानों के ऊपर ही सवाल किया कि क्या मैं तुम्हारी जरूरतों को पूरा करने वाली नही हूँ ? ‘‘अलस्तु बिरब्बिकुम’’

सारे इन्सानों ने जवाब दिया बेशक आप ही हमारी जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। ‘‘कालू बला’’

अल्लाह ने पहले जरूरतों को पूरा किया फिर सवाल किया इसके बाद इन्सानों का दुनियॅा मे भेजा जाना शुरू किया, कयामत तक दुनियॅा में आने वाले हर इन्सान की रूह इस वक्त आसमानों क ऊपर आलम-ए-अर्वाह में मौजूद हैं। आसमानों के ऊपर से हमारा तुम्हारा इम्तेहान के लिए दुनिया में आना हो चुका है और इस वक्त हम सब आलम-ए-दुनिया में मौजूद है। अब यहॅा पर एक सवाल पैदा होता है कि हमे दुनिया में किस इम्तेहान के लिए भेजा है ? इम्तेहान सिर्फ इतना है कि हम अपनी जरूरतों को किस तरह पूरा कर रहे है ? इस सवाल का जवाब जानने से पहले इस दुनियॅा मे हम किस तरह आये, इसको कुरआन और हदीस की रोशनी मे समझें,

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئاً مَّذْكُوراًإِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعاً بَصِيراً

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है ! बेशक इन्सान पर ज़माने मे एक ऐसा वक्त आ चुका है कि वो कुछ भी काबिले ज़िक्र न था कि उससे पहले मनी था और उससे पहले वो भी न था, हमने उसको नुत्फा ए मख़्लूत से पैदा किया ताकि हम उसका इम्तेहान लें इसके लिये हमने उसे सुनता-देखता बनाया। (सूर दहर-1-2)

अल्लाह तआ़ला जब किसी इन्सान को इम्तेहान के लिये आलम-ए-अर्वाह से इस दुनियॅा मे मुन्तकिल करना चाहते हैं तो मुन्तकिल करने से चार महीने पहले एक मख़्सूस तरीके पर मॅा के पेट मे इसका जिस्म बनाना शुरू करते हैं।

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُمِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُمُّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُمُّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ

हमने इन्सान के जिस्म को किस चीज से बनाया ? मनी की एक बूंद से एक ख़ास अन्दाज मे फिर उसके लिये रास्ता आसान कर दिया फिर उसे मौत देकर बर्ज़ख मे पहुंचा दिया। (सूर. अबस. 18.21)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

हमने इन्सान को बहुत खूबसूरत अन्दाज मे बनाया है।

(सूर. तीन.4)

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى

इसी मिटटी से जिस्म बनाकर हमने तुम्हे (दुनियॉ) मे जाहिर किया और फिर इसी मे लौटायेगें और मिटटी से ही दूसरी बार ज़ाहिर करेंगें। (सूर.ताहा. 55)

अल्लाह तआ़ला जिस मिटटी से इसका जिस्म बनाते हैं, उस मिटटी के ज़र्रात जमीन से लेकर आसमान तक फैले हुए होते हैं, अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से उन ज़र्रात को इक्टठा करके मां-बाप की ग़िज़ा के साथ उनके पेट मे पहॅुचाते हैं। मॉ-बाप के जिस्म मे पहुंच चुके इन ज़र्रात को फिर खून मे पहॅुचाते हैं, खून से मनी मे मुन्तकिल करते हैं फिर मनो की इस बूॅद को मां के पेट मे मौजूद बच्चेदानी मे पहॅुचाते हैं।

فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ خُلِقَ مِن مَّاء دَافِقٍ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ

इन्सान को देखना (सोचना) चाहिये कि उसका जिस्म किस चीज से बना है ? इसका जिस्म उछलते हुए पानी से बना है जो पीठ और सीने के बीच से निकलता है। (सूर. तारिक.5.7)

أَفَرَأَيْتُم مَّا تُمْنُونَ أَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है ! अच्छा ये तो बताओ कि जो मनी तुम औरतों के रहम मे पहुचाते हो, उस मनी से इन्सान का जिस्म क्या तुम बनाते हो या उस जिस्म को बनाने वाले हम ह ? (सूर.वाकिआ.58.59)

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! नुत्फा (मनी की बूँद) चालीस दिन तक रहम मे अपनी हालत पर रहता है, जब चालीस दिन पूरे हो जाते ह तो वो जमा हुआ खून बन जाता है फिर इसी तरह चालीस दिन के बाद गोश्त की बोटी मे तब्दील हो जाता फिर उसमे हड्डियॉं पैदा होती हैं, फिर अल्लाह तआ़ला जिस्म के सारे आज़ा बना देते हैं। (मुस्नद अहमद)

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ وَلِسَاناً وَشَفَتَيْنِ

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है ! भला हमने उसको दो ऑखें नही दी ? और जुबान और दो होठ नही दिये ?

(सूर. बलद.8.9)

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है ! कोई इन्सानी जिस्म ऐसा नही है जिस पर हमने निगरानी करने वाले (फरिश्ते) मुकर्रर न कर रखे हो। (सूर. तारिक.4)

हजरत अनस रजि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया ! अल्लाह तआला ने औरत की बच्चेदानी पर एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा है, जो बच्चे के जिस्म के बनने की मुखतलिफ शक्ले अल्लाह तआला से बताता रहता है। कि''ऐ अल्लाह अब ये नुत्फा है,''ऐ अल्लाह अब ये जमा हुआ खून है और ''ऐ अल्लाह अब ये गोश्त का लोथड़ा है।'' फिर जब अल्लाह तआला उस बच्चे को पैदा करना चाहते हैं तो फरिश्ता पूछता है कि ''ऐ अल्लाह ! इसके बारे में क्या लिखूं ? लडका या लड़की ? बदबख्त या नेकबख्त ? रोजी कितनी और उम्र कितनी यानी ये रूह इस जिस्म मे कितने दिन रहेगी ? (बुख़ारी.6595)

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 फरमाते हैं कि औरत की बच्चेदानी पर मुकर्रर फरिश्ते का यह काम होता है कि जब बच्चे की माँ सोती या लेटती है तो ये फरिश्ता उस बच्चे का सर ऊपर उठा देता है अगर वो ऐसा न करे तो बच्चा खून मे ग़र्क हो जाये। (अबुश्शैख)

हजरत अनस रजि0 फरमाते हैं हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! जब लड़की पैदा होती है तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फरिश्ता भेजता है, जो उस पर बहुत ज्यादा बरकत उतारता है और कहता हे, तू कमजोर है क्यों कि कमजोर से पैदा हुई है, उस लड़की की किफालत करने वाले की कयामत तक मदद की जाती है और जब लड़का पैदा होता है तो अल्लाह तआला उसके पास भी एक फरिश्ता भेजते है, जो उसकी आंखों के बीच बोसा लेता है और कहता है कि ''अल्लाह तआला तुझे सलाम कहते हैं''। (तबरानी)

नुत्फा जब बच्चेदानी के अन्दर पहुँच जाता है तो बच्चेदानी का मुहं बन्द हो जाता है जिस तरह गुब्बारे के अन्दर किसी चीज को डालने के बाद हवा भर कर गुब्बारे का मुहं बन्द कर दिया जाता है पर बच्चेदानी मे सिर्फ नुत्फा डाला जाता है हवा नही भरी जाती फिर जैसे-जैसे बच्चे का जिस्म बनकर बढ़ता जाता है बच्चेदानी बगैर हवा के गुब्बारे की तरह फूलती जाती है जिसकी वजह से मॉ का पेट फूलकर बड़ा होता रहता है।

40 दिन के बाद सफेद रंग का नुत्फा लाल रंग का जमा हुआ खून बन जाता है,

जिस तरह फिरऔन के पीते हुए पानी को खून मे बदल दिया था।

फिर 40 दिन के बाद उस जमे हुए खून को अल्लाह तआ़ला गोस्त के लोथड़े मे बदल देते हैं,

जिस तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 के यहां प्याले मे रखे हुए गोस्त को पत्थर मे बदल दिया था और मूसा अलै0 का मशहूर वाकिया जिसे अल्लाह तआला ने कुरआ़न मे बयान फरमाया है कि मूसा अलै0 की लाठी को सांप बना दिया और सापं को फिर लाठी बना दिया कि नज़र तो वो लाठी आ रही है पर न वो लाठी थी और न ही सॉप इसलिये कि न लाठी सापं बन सकती है और न सापं लाठी बन सकता है पर ऐसा हुआ तो इससे पता ये चलता है कि चाहे लाठी हो या सापं या कोई भी नजर आने या नजर न आने वाली मख्लूक हो, वो मख्लूक चाहे चींटी की हो या जिब्रील की,

जमीन की हो या आसमान की,

जर की हो या पहाड़ की,

कतरे की हो या समन्दर की,

यानी अर्श से लेकर फर्श (जमीन) के दरमियान की कोई भी मख्लूक हो, इन सबकी हैसियत एक कठपुतली से ज्यादा नही है, इन सबके अन्दर अल्लाह का जो अम्र काम कर रहा है, वो असल चीज़ है, अल्लाह तआला इन शक्लों से जब चाहेगें, जहां चाहेगें, जैसे चाहेगें और जो चाहेगें, वो होगा।

जैसे मॉ के पेट मे नुत्फे को जमा हुआ खून,

जमे हुए खून को गोस्त का लोथड़ा और

उस गोस्त के लोथड़े पर जिस्म के आज़ा का बनाना कि आधा इंच के गोस्त के लोथड़े के अन्दर हडडियों का ढांचा बनाकर दिल, गुर्दा, तिल्ली, फेफड़ा वगैरह बनाकर नसों का जाल बिछा देते हैं फिर अपनी कुदरत से गोस्त के लोथड़े के ऊपर आखॅ-नाक-कान-मुहॅ-हाथ-पैर वगैरह बनाते है। इन्सानों के जिस्म बनाने की ये तर्तीब अल्लाह तआला ने मुकर्रर की है, हॉ तीन इन्सान इस तर्तीब से बाहर है,

1.आदम अलै0

2.हव्वा अलै0 और

3.ईसा अलै0।

हम सब अपने-अपने बारे मे भी जान लें कि हम सबका जिस्म भी अल्लाह तआ़ला ने इसी तर्तीब से बनाया है, (जिस जिस्म को हम अपनी मल्कियत समझ कर अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल कर रहे हैं हॉलाकि अल्लाह तआ़ला ने ये जिस्म हमे अपनी मर्जी पर इस्तेमाल होने के लिये दिया था) जब इस अन्दाज मे अल्लाह तआला इन्सान का जिस्म बना देते हैं तो जिस्म को सबसे पहले खून की ज़रूरत पड़ती है, अल्लाह तआला अपने ग़ैबी ख़ज़ाने से जिस्म मे बराहे रास्त खून भेजते हैं लेकिन आसमानों के ऊपर से खून का आना इन्सानो को नज़र नही आता, जिस तरह बुखार का इन्सान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नही आता। इन्सान जब मॉ के पेट से बाहर आता है तो इसके जिस्म के सारे आजा की जरूरतों को अल्लाह जल्लाशानुहु बरायेरास्त अपनी कुदरत से पूरा करते है और पूरा कर रहे हैं जैसे,

आंखों की जरूरत रोशनी

कानों की जरूरत आवाज

जुबान की जरूरत बोल

दिमाग की जरूरत अक्ल

हाथ की जरूरत ताकत

पैर की जरूरत ताकत

इन चीजों का हमारे जिस्म मे आना खुद हमे नजर नही आ रहा है, हा इनका जाना समझ मे आता है कि हमारी जुबान से निकले हुए बोल दूसरों के कानो मे पहुँच रहे है, अब तो मोबाईल से अपने बोल को चाहे अमरीका पहुँचा दो या अफ्रीका, इसी तरह जिस्म के सारे आजा का काम है। मॉ के पेट से बाहर आने के बाद कुछ जरूरतें और जोड़ दो जाती है, गिजा की, प्यास की और कपड़े की, इन तमाम दिखने और न दिखने वाली जरूरतों को रोजी कहते है। अब इस इन्सान का इम्तेहान शुरू होता है कि ये अपनी जरूरतों को किस तरह हासिल करता है बनी हुई चीजो के रास्ते से या अपने बनाने वाले के बताये हुए रास्ते से ? यही हर इन्सान का इम्तेहान है अगर ये इन्सान अपने बनाने वाले के बताये हुए रास्ते से अपनी जरूरतों को पूरा कर रहा है तो ये अपने बनाने वाले अल्लाह की इबादत कर रहा है और इसीलिये इन्सान को दुनियॉ मे भेजा गया है और अगर ये बनी हुई चीजो के रास्ते से अपनी जरूरतों को पूरा कर रहा है तो ये शिर्क कर रहा है यानी अल्लाह के गैर की इबादत कर रहा है, रोजी देने का जिम्मा अल्लाह का है पर रास्ते दो है, एक तौहीद वाला रास्ता और एक शिर्क वाला रास्ता। तौहीद वाला रास्ता कामयाबी दिलाने वाला है और शिक वाला रास्ता नाकाम करने वाला है, रोजी तो अल्लाह ही देगें लेकिन रास्ता हमे तय करना है,

وَكَأَيِّن مِن دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

अल्लाह तआला का इर्शाद है ! कितने ही जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोजी को जमा करके नही रखते अल्लाह तआला उनको उनकी जरूरत भर की रोजी पहुंचाते हैं और तुम्हारी भी, वो सबकी सुनते हैं और सबकी जरूरतों को जानते हैं। (सूरः अंकबूत - 60)

अबु हुरैरा रज़ि0 फरमाते हैं ! हुजुर सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया ! इन्सानो तक रोज़ी पहुँचाने के लिये अल्लाह तआला ने फरिश्तों को मुतइय्यन कर रखा है। (इब्ने अबी शैबा)

हजरत उक्बा बिन आमिर रजि0 फरमाते हैं ! इंसान की मौत का जिसको सबसे पहले इल्म होता है, वो हाफिज़ नाम का फरिश्ता है इसलिए कि यही फरिश्ता इंसान के आमाल को ऊपर ले जाता है और ऊपर से रिज्क लेकर जमीन पर उतरता है, जब इंसान का रिज्क उसे ऊपर से लाने को नही मिलता तो वो समझ जाता है कि इस इन्सान की मौत होने वाली है।

(हाकिम)

अगर इन्सान के अन्दर माल से होने का गुमान है तो इसका काम माल से होता है और अगर दुनिया में फैली हुई चीजों और सामान से काम होने का गुमान होता है तो इस रास्ते से होता है लेकिन इस गुमान का नुकसान ये है कि आदमी के अन्दर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा वह उसी चीज़ का मोहताज होगा।

हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! हर आसमान पर हर इन्सान के लिए दो दरवाज़े हैं, एक दरवाजे से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाजे से उसकी रोजी उतरती है (किताबुल जनाइज़)

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! इन्सान चाहे कलाई और चूने के पहाड़ में बंद हो जाये पर दो चीजें ढूंढ कर इसके पास पहुंच जायेगी,''1- रोजी 2- मौत'' जैसे कोई इन्सान चाहे तो अपने आपको किसी लोहे के सनदूक में बन्द कर ले सन्दूक के अन्दर टार्च जलाकर रोशनी कर ले पर सन्दूक के अन्दर इसकी आंखो की रोशनी, कानों मे आवाज, जुबान के बोल, दिमाग का सोचना, हाथ पैरों म ताकत, दिल की धड़कन के लिए सांसे वगैरह वहां पहुंच जायेगी या फिर मलकुल मौत पांच सौ फरिश्तों के साथ इसके जिस्म से रूह निकालने सन्दूक के अन्दर पहुंच जायेगें।

हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! इब्ने आदम पर वही चीज मुसल्लत होती है, इब्ने आदम जिस चीज से डरता है अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज से न डरे तो अल्लाह तआला उस पर और कोई चीज मुसल्लत न होने दें। इब्ने आदम उसी चीज के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज से उसे नफा या नुकसान होने का यकीन होता है अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज से नफा या नुकसान का यकीन न रखे तो अल्लाह तआला उसे किसी और चीज के हवाले न करें।" (कंज--7-59)

चूँकि इन्सान दुनियॉ मे आने के बाद आसमानों के ऊपर किये हुए अपने इकरार को भूल जाता है, अपने बनाने वाले अल्लाह को भूल जाता है, जिसे याद दिलाने के लिये नबियों को भेजा जाता था। अल्लाह जल्ले शानुहु ने आसमान, जमीन, दरियाओं और फिजाओं की जितनी भी मख्लूकात बनाई है उनकी पैदाईश अपने लफज कुन से को है, किसी मख्लूक का वजूद उसका जाती नही है बल्कि उनका वजूद अल्लाह तआला का अता किया हुआ है। वजुद से लेकर आज तक उनकी सिफात पर अल्लाह ही का कब्जा है, चाहे तो आग से ठंडक दे और चाहें तो जला दें आज मुसलमानों का ये अकीदा कि पालने वाले तो अल्लाह हैं मगर दुनिया के अन्दर अल्लाह रब्बुल इज्जत मख्लुकात के रास्ते से पालेगें तो ये अकीदा गैरों का है हमारा नही है, हम ऐसे रब के बन्दे नही हैं जो हमारी जरूरतों को पूरा करने में अपनी बनाई हुई किसी मख्लूक का मोहताज हो हमारा रब कययूम और कादिर है।

हमारा काम ये है कि हम अपने इस बावलेपन और पागलपन को दूर करे जो हमने इन मिटटी के खिलौने से उम्मीदें कर रखी हैं कि चीजों का चीजों से बनना, चीजों से परवरिश का होना और चीजों से परवरिश का बिगड़ना जान रखा है, आज हमने सवारी के और आवाज पहुंचाने के जो असबाब बनाये हैं अल्लाह रब्बुल इज्जत बगैर इन असबाब के सब कुछ अपनी कुदरत से करते है जैसे- हजरत उमर रजि0 की आवाज हजरत सारिया रजि0 तक पहुंचायी, हजरत इब्राहीम अलै0 की आवाज को

आलम-ए-अर्वाह तक पहुंचाया। अल्लाह तआला ने अपनी जात से बराये रास्त लेने के अमल मुहम्मद सल्ल0 के जरिये हमे बतलाये हैं, जिस तरह किसान जमीन से, ताजिर दुकान से लेना जानता है इसी तरह अल्लाह जल्ले शानुहु ने अपनी जात से लेने के अमल अपने बन्दों को बतलायें है मगर ईमान को न सीखने की वजह से हमारी आंखें उससे अधी हो गयी। अल्लाह की कसम एक मुसलमान अल्लाह तआला से सिर्फ एक बार सुब्हानल्लाह कहने पर सुलेमान अलै0 की तरह सलतनत ले सकता है बशर्ते कि ये सुब्हानल्लाह की हकीकत जानता हो और एख्लास से कहता हो।

हजरत निजामुददीन औलिया रह0 का मुकाबला बादशाहों से हुआ, बादशाहों को आज के लोग भूल गये मगर हजरत निजामुददीन औलिया रह0 को लोग आज भी जानते है, इसलिये कि इन्होने जिस जगह पर बैठ कर अल्लाह से लिया था आज लोग उनके नाम पर उस जगह बैठ कर खा रहे है। जमीन अल्लाह तआला से पेट्रोल लेती है, सोना चांदी लेती है, अनाज लेती है मगर जब इन्सान नमाज को कायम करके अपने रब से लेने वाला बनता है तो अल्लाह तआला से इतना लेता है कि कोई मख्लूक भी इतना नही ले सकती, जमीन से तुमने कभो पके हुए खाने निकलते हुए नही देखा होगा पर नमाज को कायम करने वाले इन्सानों ने अल्लाह तआला से पके-पकाये और बेहतरीन खाने जमीन से भी लिये हैं और आसमानों से भी लिये हैं।

रसूलूल्लाह सल्ल0 ने सहाबा किराम को इस तरह से अल्लाह की कुदरत का, उसकी रूबूबियत का, उसके गैबी निजाम का और उसकी कुदरत से अपनी जरूरतों को पूरा कराने के रास्तों का इल्म सिखलाया था, सहाबा किराम इन बातों को मोहताज बनकर सुनते थे जिसकी वजह से नमाज के अमल मे वो हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहते थे कि हम किसके सामने खड़े हैं फिर अल्लाह की कुदरत को, उसकी रूबूबियत को, उसके गैबी निजाम को और उसकी कुदरत से अपनी जरूरतों को पूरा कराने के रास्तों को मोहताज बनकर दूसरों को बतलाते थे। इसको मोहताज बनकर दूसरों को बतलाने से नमाज के रुकुउ के अमल मे "سبحان ربي العظيم" कहते वक्त दिल को इत्मिनान होगा कि हमारा रब हमारी हर जरूरत को बगैर किसी सबब के पूरा कर रहा है और पूरा करेगा इसलिये कि वो हर सबब और हर शक्ल से पाक है, यही उसकी अज्मत है और सज्दा के अमल मे "سبحان ربي الاعلى" कहते वक्त भी दिल को इत्मिनान होगा कि हमारा रब हमारी हर जरूरत का बगैर किसी सबब के पूरा कर रहा है और पूरा करेगा इसलिये कि वो हर सबब और हर शक्ल से पाक है, यही उसकी शान है, इस तरह इत्मिनान से रुकुउ और सज्दे के अमल से नमाज को कायम करने की शर्त पूरी होगी और ये जो अल्लाह की कुदरत को, उसकी रूबूबियत को, उसके गैबी निजाम को मोहताज बनकर दूसरों को बतलाया है इसे ही ईमान का सीखना कहते है,

इसी को हजरत इब्ने उमर रजि0 फरमाते हैं ! हमने अपनी जिन्दगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुजारा है कि हममे से हर एक न पहले ईमान सीखा है फिर कुर्आन सीखा और जो भी सूरः हुजूर सल्ल0 पर उतरती थी, हम लोग उसके हराम और हलाल को ऐसे सीखते थे, जैसे तुम लोग कुर्आन सीखते हो, अब मै लोगों को देख रहा हूँ कि तुम लोग ईमान से पहले कुर्आन सीख रहे हो और सूरः फातिहा शुरू से आखिर तक सारी पढ़ जाते हो पर तुम्हे पता भी नही की सूरः फातिहा किन कामो के करने का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन सी आयात ऐसी है, जहाँ जाकर रूक जाना चाहिए, बस तुम लोग सूरः फातिहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देते हो यानी जल्दी जल्दी पढ़ लेते हो। (हैसमी 1-165)

जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रजि0 फरमाते हैं ! हम लोग नव उम्र लड़के थे हम लोगों ने हुजूर सल्ल0 के साथ मे रहकर, सबसे पहले ईमान सीखा फिर कुर्आन सीखा जिससे हमारा ईमान और बढ़ गया। (इब्ने माजा-11)

अल्लाह जल्ला शानुहू की कुदरत से अपनी जरूरतों को पूरा कराने के लिये सहाबा किराम नमाज का अमल करते थे, अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि0 को दस लाख दिरहम के बदले मे एक जमीन मिली जो बंजर थी, उन्होने उस जमीन पर अपने गुलाम से मुसल्ला लेकर चलने को कहा, जमीन पर पहुँच कर गुलाम से मुसल्ला बिछाने को कहा फिर मुसल्ले पर खड़े होकर

दो रकाअत नमाज़ का अमल किया अमल के दरम्यान सज्दे मे बहुत देर तक पड़े रहे फिर नमाज से फारिग होकर गुलाम से कहा कि मुसल्ला उठाकर यहाँ कि जमीन खोदो, जब गुलाम ने वहां की जमीन खोदी तो वहाँ से पानी का एक चश्मा उबलने लगा। (फज़ायले आमाल)

इसी तरह एक मर्तबा हज़रत अनस रज़ि0 के गुलाम ने हज़रत अनस रज़ि0 से बाग और खेत में पानी न होने की शिकायत की तो हज़रत अनस रज़ि0 ने उससे पानी मांगा और वुजु किया फिर दो रकाअत नमाज़ का अमल करके गुलाम से कहा ! बाहर जाकर देखो क्या आसमान मे बादल आया ? उसने बाहर देखकर बताया, आसमान मे कोई बादल नही है फिर हजरत अनस रज़ि0 ने दोबारा, तिबारा और चौथी मर्तबा नमाज़ का अमल करके गुलाम से कहा ! अब जाकर देखो, इस बार गुलाम ने आकर बताया कि हाँ, चिड़िया के पर के बराबर एक बादल नजर आ रहा है। यह सुनकर इन्होने फिर नमाज़ का अमल किया और खूब देर तक दुआ करते रहे तो गुलाम ने आकर बताया खूब बारिश हो रही है तो आपने उसे अपना घोड़ा देकर कहा कि जा देखकर आ कहां तक बारिश हुई है ? वह गया और वापस आकर उसने बताया कि अपने बाग और खेत क अलावा कहीं बारिश नही हुई है। (तब्काते-इब्ने-साद)

हज़रत अला बिन हजरमी रज़ि0 की जमात बहरैन गयी हुई थी सफर मे पानी नही था, प्यास के मारे ऊँट भी काफिले से भाग गये और उन पर जो सामान और खाना बंधा था सहाबा उससे भी महरूम हो गये। सारी जमात प्यास से परेशान हो गयी तो तयम्मुम करके सबने नमाज का अमल किया और नमाज़ का अमल करके अल्लाह से पानी का इंतिजाम करने की दुआ की, ये लोग दुआ कर ही रहे थे कि पीछे से पानी उबलने की आवाज सुनी, जब पीछे पलटकर देखा तो जमीन से एक चश्मा फूटकर पानी की धार बह रही थी और जो जानवर सामान ले कर चले गये थे, वह सब भी एक साथ वापस आ रहे थे, जैसे उन्हे कोई पकड़कर ला रहा हो। (बैहकी-बुखारी)

अल्लाह जल्ला शानुहू कयामत तक इसी तरह मुसलमानों की जरूरतों को नमाज के अमल पर अपनी कुदरत से पूरा करेगें बस शर्त इतनी है कि नमाज के अमल मे खुशुऊ हो और खुशुऊ हासिल करने के लिये हुजूर सल्ल0 ने सहाबा किराम से अल्लाह की कुदरत को, उसकी रूबूबियत को, उसके गैबी निजाम को जो उन्होने दूसरों को बतलाया था उस पर तन्हाईयों मे बैठा कर गौर व फिक्र करवायी यानी अल्लाह के अलावा की इब्तेदा और इन्तेहा पर गौर व फिक्र करना, मिसाल के तौर पर खुद अपने बारे मे सोचना कि हमे किसने बनाया है ? कहां और कैसे बनाया ? क्यों बनाया ? 100 साल पहले हम कहां थें ? और 100 साल बाद हम कहां होंगे ? इन सारी बातों को कुरआन और हदीस मे देखना या इन्हे ईमान को सीखने वालों से पूछना या जिन्होने उस तरह कुर्आन सीखा हो जिस तरह सहाबा किराम रजि0 ने सीखा था उनसे पूछना, अब सवाल ये है कि सहाबा किराम रजि0 ने किस तरह कुर्आन सीखा था ?

हजरत इब्ने मसऊद रजि0 फरमाते हैं कि (ईमान को सीखते हुए) हम नबी करीम सल्ल0 से कुर्आन की दस आयतों को सीखते और बाद वाली आयते तब सीखते जब पहली आयतों का इल्म, उनका हराम-हलाल और उन पर अमल शुरू कर देते थे।

(कंज जिल्द-1-232)

अगर किसी से पूछने की इन दोनो बुनियादों को छोड़ दोगे तो जिस तरह से आज तक नमाज पढ़ने को “ नमाज” समझ रहे हो उसी तरह कब्र की जिन्दगी को भी “रूहानी” समझते रहोगे हालॉकि कब्र की जिन्दगी रूहानी नही बल्कि जिस्मानी है, जिसकी खबर नबी करीम सल्ल0 ने दी है वो हदीसें नीचे लिखी जा रही हैं उन्हे पढ़कर फैसला करो कि ईमान और इल्म को सोखना हमारी सबसे पहली जरूरत है। इसलिये सबसे अहम मसअला मौत के दिन से शुरू होने वाली जिन्दगी का है, वो जिन्दगी जो कभी खत्म ना होगी, उस खत्म ना होने वाली जिन्दगी की तैयारी के लिये ही इन्सान को इस दुनियॉ मे भेजा गया

है लेकिन इन्सान कदम कदम पर मौत के बाद वाली जिन्दगी को नजर अन्दाज करता रहता है और इसे मौत के नाम स भी डर लगता है जब कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! "अक्लमन्द और समझदार शख्स वो है जो मौत से पहले मौत की तैयारी करे" अब सवाल ये उठता है कि उस जिन्दगी के लिये इन्सान को किस चीज की जरूरत है ? जवाब, मौत के बाद वाली जिन्दगी की पूंजी और सरमाया ईमान है लेकिन इन्सान ईमान से बेपरवाह होकर माल और सामान की फिक्र मे जिन्दगी गुजारता है जिसकी वजह से मौत के बाद वाली जिन्दगी इसक सामने नही रहती और ये इसी को अक्लमन्दी समझता है हालॉकि ये दिन ब दिन जिल्लत, तकलीफें, परेशानियॉ और बीमारियों का शिकार होता रहता है। इन नाकामियों का सबब मौत के बाद वाली जिन्दगी से इसका गाफिल रहना है और मौत के बाद वाली जिन्दगी से गाफिल रहने की वजह मौत के बाद वाली जिन्दगी का रूहानी समझना है। आज ईमान को ना सीखने की वजह से लोग मौत के बाद वाली जिन्दगी को रूहानी जिन्दगी करार देते है लिहाजा मौत के बाद वाली जिन्दगी जिस्मानी है या रूहानो इसके लिये नीचे दर्ज की जा रही हदीसो पर पहले गौर करो फिर फैसला करो कि मौत के बाद वाली जिन्दगी जिस्मानी है या रूहानी ?

1 . हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! कब्र मे लोहे के गुर्ज से पिटाई करने वाला फरिश्ता अंधा और बहरा होता है, जब वो किसी को गुर्ज से मारता है तो उसका जिस्म मिट्टी में मिल जाता है लेकिन उसका जिस्म सही सालिम करके उसकी रूह जिस्म में फिर लौटा दी जाती है। (अहमद, अबुदाऊद)

2 . हज़रत जाबिर रज़ि0 फरमाते हैं कि हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! जब मोमिन को क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उसको ऐसा मालूम होता है जैसे सूरज छिपने का वक़्त (असर और मग़रिब के दरमियान का वक़्त) हो तो जब उसको (रूह) उसके जिस्म में डाला जाता है तो वो जिस्म (रूह पहुंचने की वजह से) आंख मलता हुआ उठ कर बैठता है तो कहता है कि सामने से हटो मैं नमाज़ का अमल करना चाहता हूँ। (इब्ने माजा)

सवाल. क्या रूह के भी आखें होती हैं ?

3 . हज़रत अबु हुरैरा रज़ि0 हुजूर सल्ल0 का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ईमान वाला क़ब्र में पहुंचने पर बेख़ौफ होकर बैठता है फिर उससे सवाल किये जाते हैं और बेईमान कब्र में पहुंचने पर डरा और घबराया हुआ उठकर बैठता है इसी हाल में उससे सवाल पूछे जाते हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ))

सवाल. क्या रूह भी लेटती और बैठती हैं ?

4 . हज़रत आयशा रज़ि0 फरमाती हैं गुनाहगारों के लिये अहले कुबूर से हलाकत है कि उनके ऊपर काले सांप मुसल्लत कर दिये जाते हैं एक पांव की तरफ से और दूसरा सांप सर की तरफ से काटते हुए चलते हैं और दरमियान (सतर के पास) में दोनों आकर मिल जाते हैं। (मिश्कात शरीफ)

सवाल. क्या रूह के भी हाथ और पैर होते हैं ?

5 . अबु हुरैरा रज़ि0 हुजूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि क़ब्र में जब रूह जिस्म में पहुंच जाती है तो फरिश्ते उसका इम्तेहान लेने के लिये पहुँच जाते ह अब अगर वो मोमिन है तो नमाज़ उसके सर के क़रीब आकर खड़ी हो जाती है ज़कात उसके दाहिनी तरफ और रोज़ा बांयी तरफ बाक़ी आमाल पांव की तरफ ख़ुद आकर खड़े हो जाते हैं। (दुर्रे मन्सूर)

सवाल. क्या रूह के भी सर होता हैं ?

6 . अबु हुरैरा रज़ि0 हुजूर सल्ल0 से नक़ल फरमाते हैं जब मोमिन से सवाल का जवाब मिल जाता है तो फिर उसकी क़ब्र 70 हाथ के बराबर चारों तरफ से चौड़ी कर दी जाती है फिर कब्र को रोशन करके उससे कहा जाता है तू सो जा। वो कहता

है कि मैं अपने घर वालों को (अपना हाल) बताने के लिये जा रहा हूँ और अगर ये मुनाफ़िक़ होता है तो फरिश्तों के सवाल व जवाब के बाद क़ब्र से कहा जाता है कि इसको दबा ले चुनांचे क़ब्र इसे दबा लेती है जिससे इसकी पसलियां इधर से उधर घुस जाती हैं फिर (क़यामत तक) उस पर अजाब होता रहता है और अल्लाह तआला इसे कयामत के दिन इसी हाल में उठायेगा। (तिर्मिज़ी शरीफ)

सवाल. क्या रूह भी सोती हैं ?

7 . हज़रत क़ैस बिन क़बीसा रज़ि0 अल्लाह के रसूल सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि बेईमान को (आलमे बर्ज़ख़ में) दूसरों से बात चीज करने की इजाज़त नहीं दी जाती, किसी ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या बर्ज़ख़ में लोग एक दूसरे से बातचीत भी करते हैं ? आपने फरमाया हां, लोग एक दूसरे से मुलाक़ात करके बातचीत करते हैं। (इब्ने हव्वान)

सवाल. क्या रूह की भी जुबान होती हैं ?

8 . हज़रत उम्मे बिश्र रज़ि0 फरमाती हैं कि मैंने हुजूर सल्ल0 से पूछा या रसूलुल्लाह क्या बर्ज़ख़ में लोग एक दूसरे को पहचानते हैं ? आपने जवाब दिया कि अगर परिंदे एक दूसरे को पहचानते हैं (तो तू खुद समझ ले) बर्ज़ख़ वाले भी एक दूसरे को पहचानते हैं। (इब्ने माजा)

सवाल. क्या रूह के भी अक्ल (दिमाग) और सूरत होती हैं ?

9 . हजरत अबु हुरैरा रजि0 से रिवायत है हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! जो ईमान वाला मर्ज की हालत में मरता है उसे सुबह और शाम जन्नत का रिज्क मिलता है। (अहमद व तिर्मिजी)

सवाल. क्या रूह को भी रिज्क की जरूरत होती हैं ?

10 . हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि जो आदमी कुरआन को सीखना शुरू करे और इसे सीखे बिना ही मर जाये तो एक फरिश्ता क़ब्र में उसे कुरआन सिखलाने के लिये भेजा जाता है।

सवाल क्या रूह को कुरआन सिखलाने के लिये भेजा जाता है ? (मुस्नद अहमद)

11 . हज़रत अनस रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं इन्सान के दुनिया से मुन्तक़िल होकर बर्ज़ख़ में पहुंचने की मिसाल ऐसी है जिस तरह मां के पेट की तंगी और अंधेरे से निकल कर इन्सान दुनिया में आता है। (हकीम तिर्मिज़ी)

सवाल क्या मॉ के पेट की तंगी और अंधेरे से सिर्फ रूह निकल कर आती है या रूह के साथ जिस्म भी ?

12 . हज़रत अबु सईद रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि जब गुनाहगार क़ब्र में दाखिल कर दिया जाता है तो क़ब्र उसे इस तरह से दबाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं। (तिर्मिज़ी)

सवाल क्या रूह के भी पसलियां होती हैं ?

13 . हज़रत अबु सईद खुदरी रज़ि0 हुज़ूर सल्ल0 से नक़ल करते हैं कि कब्र में काफिर पर 99 अज़दहे मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक उसे डसते रहते हैं। उनके ज़हर का ये हाल होता है अगर उनमें से एक भी इस ज़मीन पर फुंकार मार दे तो ज़मीन बिल्कुल सब्ज़ा न उगाये। (दारमी)

सवाल क्या ये अज़दहे रूह को डसते है ? और क्या इसी जमीन पर फुनकार मारते है ये अगर इसी जमीन पर फुंकार मारते हैं जिस जमीन पर हम सब रह रहें हैं तो इस कब्रस्तान में घास और पेड़ क्यों निकलते हैं ?

14 . हज़रत बरा बिन आजिब रज़ि0 हुजूर सल्ल0 का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब मोमिन मुन्किर-नकीर के सवालों का जवाब दे देता है तो एक मुनादी आसमान से ये आवाज़ देता है कि इसने सच कहा है सो उसके लिये जन्नत के बिछौने बिछा दो और उसको जन्नत के कपड़े पहना दो। (मुस्लिम शरीफ)

सवाल क्या रूह को भी कपड़े पहनने की ज़रूरत होती है ? और अगर रूह को भी कपड़े पहनने की ज़रूरत पड़ती है तो मल्कुल मौत कफ़न के साथ ही ईमान वाले के लिए कपड़े भी ले आते।

15 . हुजूर सल्ल0 ने फरमाया कि जब काफिर क़ब्र में सवाल का जवाब नहीं दे पाता तो एक मुनादी आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा, इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिये दोज़ख़ का दरवाजा खोल दो और आग का लिवास पहना दो। (मिश्कात शरीफ)

16 . हज़रत उमर रज़ि0 से हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! ऐ उमर उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा, जब मुन्किर-नकीर क़ब्र के अन्दर तुम से सवाल पूछेंगे तो उमर रज़ि0 ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लह क्या उस वक़्त हमारी अक़्ल हमारे साथ होगी ? जिस पर आप सल्ल0 ने फरमाया हां इसी तरह तुम्हारी अक़्लें तुम्हारे पास होगी, ये सुनकर उमर रज़ि0 बोले कि तब तो मैं उनसे निमट लूंगा। (तबरानी)

17 . हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! जब कोई बेईमान बर्ज़ख़ में मुन्तक़िल होने वाला होता है तो "स्याह चेहरे वाले फरिश्ते आसमान की तरफ से उतर कर उसके पास आते हैं, जिनके साथ टाट होते हैं और ये फरिश्ते उस बेईमान को इतनी दूर तक घेर कर बैठ जाते हैं जहां तक उस बेईमान की नज़र जाती है फिर इज्रराईल अलै0 (मलकुल मौत) तशरीफ लाते हैं और उसके सर के क़रीब आकर कहते हैं कि ऐ ख़बीस इन्सान अल्लाह की नाराज़ी की तरफ चल। ये सुनकर इन्सान का अम्र (रूह) अपनी शक्ल (जिस्म) में इधर-उधर भागने लगता है तो मलकुल मौत उसकी शक्ल से उसे इस तरह निकालते हैं, जिस तरह बोटियां (कबाब) भूनने की सीक (लोहे की सरिया) को भीगे हुए ऊन से साफ करते हैं फिर इसे अपने हाथ से पकड़ लेते हैं, ये देख कर फौरन दूसरे फरिश्ते उसे टाट में लपेट लेते हैं। अब ये सारे फरिश्ते आसमान की तरफ इसको लेकर चढ़ते हैं और फरिश्तों के जिस गिरोह पर भी पहुंचते हैं, वो सब इस बेईमान पर लानत करते हैं। यहां तक कि वो उसे लेकर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं मगर उस बेईमान के लिये दरवाज़ा नहीं खोला जाता है" जैसा कि खुद अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने फरमा रखा है कि "उनके लिये न तो आसमान के दरवाज़े खोले जायेंगे और न ही उन्हें कभी जन्नत में दाख़िल किया जायेगा जब तक ऊँट सुई के नाके में से न निकल जाये।" (सूरः आराफ - 40)

फिर अल्लाह तआला कहते हैं कि इस बेईमान को सिज्जीन में दाख़िल (भेज दो) कर दो (जो सारी ज़मीनों के बाद है) फिर हुज़ूर सल्ल0 ने ये आयत तिलावत फरमायी "जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा फिर चिड़ियों (गिद्द या चील वगैरह) ने उसकी बोटियां नोच लीं या हवा ने उड़ा कर उन्हें द्र ल जाकर छोड़ दिया" (सूरः हज 31) फिर उस बेईमान की रूह को उसकी शक्ल (जिस्म) में लौटा दिया जाता है अब उसके पास दो फरिश्ते आते हैं और उसे बिठा कर पूछते हैं " तेरी रोज़ी (जरूरतें) इस क़ब्र में कैसे हासिल होगी ?" वो कहता है हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं फिर उससे पूछते हैं कि " तुझे अपनी रोज़ी हासिल करने का तरीक़ा नहीं पता है ?" वो कहता है हाय ! हाय ! मझे नहीं पता है फिर पूछते हैं "क्या तेरे पास यहां (क़ब्र)" के बारे में कोई ख़बर देने वाला नहीं पहुंचा ? वो फिर यही कहता है कि हाय ! हाय ! मुझे पता नहीं है।

जब ये सवाल-जवाब हो जाते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है, ये झूठ बोल रहा है (कि नबी ने इसे सारी ख़बरें पहुँचा दी थी) लिहाज़ा इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिये दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता ह, जिससे वहां की गर्मी और गर्म लू आती रहती है फिर क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है यहां तक की उसकी

पसलियां एक दूसरे में इधर से उधर घुस जाती हैं फिर आप सल्ल0 ने अपने दोनों हाथों की उंगलियों को एक दूसरे म डाल कर बतलाया इस तरह। (मिश्कात)

सवाल क्या रूह के भी पसलियां होती हैं ?

18 . हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! "कब्र या तो जन्नत का एक बाग है या जहन्नम का एक गढ़ा "

सवाल क्या जन्नत और जहन्नम मे रूह के साथ एजाज व इक्राम या सजा का मामला होगा ?

हुज़ूर सल्ल0 की इन खबरों मे कब्र की जिन्दगी का जिस्मानी होना साबित ह पर इसकी क्या वजह है कि लोग कब्र की जिन्दगी को रूहानी करार देते है ? इसकी वजह ईमान का ना सीखना है।

अगर हुज़ूर सल्ल0 की खबरों को हम गैब से जोड़ेगें तो मौत के बाद वाली जिन्दगी का जिस्मानी होना सामने आ जायेगा, कब्र का गैब मे होना हमारी समझ मे आये इसके लिये नीचे लिखी जा रही हदीस पर गौर करे,

हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! एक रात मुझे जिब्रील और मीकाईल एक मुकद्दस ज़मीन पर ले गये, मैने सबसे पहले वहॉ पर एक आदमी का कल्ला चीरते हुए देखा आगे जाने पर एक लेटे हुए आदमी के सर पर पत्थर मारते हुए देखा जिससे उसका सर फट जाता है और आगे जाने पर नंगे मर्द और औरतों को तनूर की तरह आग के गड्ढ़े में जलते हुए देखा। इसी तरह जिब्रील और मीकाइल मुझे और आगे ले गये तो मैने वहॉ पर एक खून की नहर को देखा, जिसमें एक आदमी को पत्थर से मारा जा रहा होता है फिर वो दोनों मुझे और आगे लेकर पहुंचे तो मुझे वहां पर एक हरा-भरा बाग नज़र आया फिर एक पेड़ पर मुझे चढ़ाया गया तो उस पेड़ के बीच में बने हुए मकान में हजरत इब्राहिम अलै0 बहुत से बूढ़े मर्द, जवान मर्द, बच्चे, और औरतों के साथ नज़र आये। (बुख़ारी शरीफ)

इस हदीस मे हुज़ूर सल्ल0 ने जिस मुकद्दस ज़मीन पर जाने की बात की है ये मुकद्दस ज़मीन आलम ए बर्जख है, खुदा ने जिस तरह हुज़ूर सल्ल0 को आसमानों की सैर (मेराज में) करायी उसी तरह बर्जख की मुकद्दस जमीन पर भी सैर करायी है। ये आलम ए बर्जख 6 जमीनों के बाद का एक आलम है जो आलम ए दुनियॉ से लाखों गुना बड़ा है, इस ज़मीन से आलमे बर्ज़ख़ की दूरी का सिर्फ अन्दाज़ा ही लगाया जा सकता है इसलिये कि इसकी दूरी का इल्म सिर्फ खुदा को है, हुज़ूर सल्ल0 ने 6 जमीनों के बारे मे इतना फरमाया ! एक जमीन से दूसरी जमीन का फासला पॉच सो साल के बराबर है इसी तरह हर जमीन के दरम्यान का फासला पॉच सौ साल के बराबर है। (जामे तिर्मिजी)

इस ज़मीन से (जिस पर हम सब मौजूद हैं) दूसरी 6 ज़मीनों की दूरी अल्बत्ता मालूम की जा सकती है। जैसेः इस ज़मीन से दूसरी ज़मीन की दूरी 8 करोड़ 47 लाख किलोमीटर है जिसे लोग मिरीख़ के नाम से जानते हैं, इस ज़मीन का फैलाओ हमारी ज़मीन के आधा है। एक राकेट से इस ज़मीन पर पहुँचने में (सन 2001 में) 229 दिन लगे थे और सन 2001 जनवरी के पहले हफ्ते में स्पिरट नाम का एक राकेट 8 करोड़ 47 लाख किलोमीटर का सफर करके अपने साथ एक 6 पहिये वाली गाड़ी और रोबोट को लेकर इस ज़मीन पर उतरा, ये रोबोट वहॉं की मिट्टी और पत्थर पर ये पता कर रहा है कि क्या उस ज़मीन पर कहीं पानी है ?

इस ज़मीन से तीसरी ज़मीन की दूरी 63 करोड़किलो मीटर है इसे लोग मुश्तरी के नाम से जानते हैं इस ज़मीन का फैलाओ हमारी इस ज़मीन से 1300 गुना बड़ा है।

चौथी जहल नाम से जानी जाने वाली ज़मीन हमसे 1 अरब 30 करोड़ मिलोमीटर दूर ज़मीन और आसमान के दरम्यान लटक रही है।

पांचवी यूरेन्स के नाम से मशहूर ज़मीन हम से 2 अरब 86 लाख किलोमीटर दूर है।

छठी नेपचूय्न 4 अरब 49 करोड़ किलोमीटर दूर है और सातवीं प्लूटो के नाम से मशहूर ज़मीन हमसे 5 अरब 90 करोड़ किलोमीटर दूर ख़ला में लटक रही हैं, जिस तरह ये चांद इस ज़मीन से 3,84,400 किलोमीटर दूर हमारे सर के ऊपर ज़मीन और आसमान के दरम्यान लटकता हुआ नज़र आता है। हर ज़मोन के ऊपर दूसरी मख़्लूक़ात भी आबाद है, जिसकी ख़बर हुज़ूर सल्ल0 के उन अल्फाज़ों से होती है जिन्हें आपने ख़ैबर की बस्ती में दाख़िल होने से पहले अपनी दुआ में इस्तेमाल किया था,

“ऐ अल्लाह तू रब है सात आसमानों का और उन तमाम चीज़ो का जिन पर ये सातों आसमान साया किये हुए हैं औरत रब है सातों ज़मीनों का और उन तमाम चीज़ों का जिन्हें सातों ज़मीनों ने अपने ऊपर उठाया हुआ है।” (अलबिदयाः वन्निहाया)

यहॉ पर एक सवाल ये पैदा होता है कि क्या इन्सान इन जमीनो पर पहॅुच सकता ? इस सवाल का जवाब नीचे दर्ज की जा रही हदीसों मे मौजूद है,

हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! “दीन अगर सुरैय्या पर होता तो ये (इन्सान) फारस वाले उसे वहां से भी ले आते।” एक जगह पर यूँ फरमाया ! “इल्म अगर सुरैय्या पर होता तो ये उसे वहां से भी ले आते।” ओर एक जगह फरमाया ! “ईमान अगर सुरैय्या पर होता तो ये लोग इसे वहां से ले आते।”

इन हदीसों से दो चीज़े साबित हुई है 1. दीन, इल्म और ईमान ये तीनों चीज़े सुरैय्या पर नहीं हैं 2. अगर होती तो ये वहां से भी ले आते यानी इन्सान की पहुँच सुरैय्या तक हो सकती है और सुरैय्या सितारों के झुरमुट को कहते हैं यानी सितारों तक इन्सान पहुँच सकता है। इन सात जमीनों के बाद आलम ए बर्ज़ख़ की शुरूआत होती है इस आलम मे पहॅुचने वाले इन्सानों की वहॉ पहले से पहॅुचे हुए इन्सानों से मुलाकात होती है, हम लोग क़ब्र उसे समझते हैं जहां इन्सान के जिस्म को इस दुनिया में मिट्टी के अन्दर गढ़ा खोदकर दबाया जाता है अगर ये हमारे पैरों के नीचे की ज़मीन यानी जिस ज़मीन पर हम सब चलते फिरते हैं इस पांच फिट नीचे की ज़मीन को क़ब्र और बर्ज़ख़ मान लिया जाये ? तो हुज़ूर सल्ल0 की इस ख़बर का क्या मतलब होगा ?

“हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया काफिर पर क़ब्र में 99 अजदहे मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो क़यामत तक उसे डसते रहते है और उन अजदहों के ज़हर का हाल ये है अगर उनमें से कोई एक अजदहा इस ज़मीन पर फुंफ्कार मार दे तो ज़मीन पर कहीं कोई सब्ज़ा (घास वगैरह तक) न उगे।” (दारमी)

बर्ज़ख़ के आलम की इन हदीसों का मतलब तब समझ मे आयेगा जब पैरों के नीचे की ज़मीन को कब्र ना समझ कर एक गढ़ा समझे जिस गढ़े मे हमारा ये जिस्म रूह निकलने के बाद दबाया जाता है और अगर हम इसे ही कब्र समझ रहे हैं तो सवाल ये उठता है कि इस ज़मीन में सारे ही लोग दफन हैं कुफ्र वाले, शिर्क वाले और शक वाले तो क्या इन्हें क़ब्र का अज़ाब नहीं हो रहा है ? क्या इन्हें 99 अज़दहे नहीं डस रहे है? अगर इनकी रूह पर ही अज़ाब हो रहा हो, सांप फुंकार मार ही रहे हैं अगर ये सांप 7 फिट नीचे की ज़मीन पर फुंकार मार रहे हैं तो कब्रस्तान की ज़मीन के ऊपर चारों तरफ हरयाली क्यों नज़र आ रही है ? घास, पेड़ और पौधे इसी ज़मीन पर निकले हुए हैं जबकि आप सल्ल0 ने फरमाया “उनमें से कोई एक अजदहा इस ज़मीन पर फुंकार मार दे तो कहीं सब्ज़ा न उगे” यानी 5 करोड़े 74 लाख मुरब्बा किलो मीटर में कही घास न उगे लेकिन कबस्तान तो हरा-भरा है फिर क्या मतलब रहा हूज़ूर सल्ल0 की इस खबर का ? नाऊबिल्लह हुज़ूर सल्ल0 ने अपनी उम्मत से कोई पहेली बुझायी है ?

अगर ईमान को ना सीखने वालों की ये बात मान भी ली जाये कि बर्ज़ख़ का आलम और उसमे मौजूद क़ब्र हमारे पैरों से 5 या 7 फिट नीचे इसी ज़मीन में है तो सवाल ये पैदा होता है कि आख़िर वो लोग जिनके जिस्म चिता पर रखकर आग में जला दिये जाते हैं ? या दरिया और समन्दर में जिस्म को बहा दिये जाने पर मछलियॉ व समन्दरी जानवर खा जाते हैं ? या जंगल

के दरिंदे किसी को मार कर जिस्म को खा जाते हैं ? क्या ये लोग क़ब्र के अज़ाब से छुटकारा पा जाते है ? और मुन्किर-नकीर के सवालों से बच जाते है ?

ना सिर्फ इनके इतना कह देने से बात खत्म हा जायेगी कि ऐसे लोगों को खुदा अपनी कुदरत से दूसरा जिस्म देते अगर ऐसी बात है तो ये लोग मुसलमान से अफजल हो गये कि मुसलमान को कब्र मे पुराना जिस्म मिले और फिरऔन व कारून या इन जैसे लोगों को कब्र मे नया जिस्म मिले। मिस्र की राजधानी काहिरा में फिरऔन का जिस्म रखा हुआ है या सैकड़ों इन्सानों के जिस्म दुनिया के अन्दर सैकड़ों सालों से रखे हुए हैं, जिन्हे कोई भी इन्सान देख सकता है और खुद अपने मुल्क के अजायबघरों में भी ऐसे मुर्दा जिस्म रखे हुए हैं तो क्या फिरऔन और दूसरे लोगों के मुर्दा जिस्मा पर अजायबघरों में ही अज़ाबे क़ब्र हो रहा है ? और फिर ये कैसे हो सकता है कि जिस ईमान वाले का जिस्म कब्र मे जन्नत की खुश्बू और ठंडी हवाओं में हों पर उसके जिस्म की हड्डियां हमारे हाथों में हों ? अक्सर क़ब्रस्तान में ज़मीन की खुदाई करते वक्त दो-चार साल पहले दफन हुए किसी मुसलमान मुर्दे की हड्डियां हमें मिलती हैं।

मलकुलमौत के इन्सान की रूह निकाल ले जाने के बाद सौ फीसद लोग यही समझते और कहते हैं कि भाई फलां इन्सान ख़त्म हो गया अगर कोई इन्सान मौत के बाद वाली ज़िन्दगी को सोचना भी चाहे तो इस “ख़त्म” के बोलने से आगे की जिन्दगी के बारे में सोचने के सारे दरवाज़े बन्द नज़र आते हैं कि अरे ये तो ख़त्म ही हो गया और यही होगा कि एक दिन हम भी ख़त्म हो जायेंगे हालॉकि इन्सान खत्म हो जाने के लिये नहीं बनाया गया है, अल्बत्ता कायनात की सारी शक्लें एक दिन टूट कर फना हो जायेंगे पर इन्सान कभी फना और ख़त्म नहीं होगा बल्कि मुन्तक़िल होगा। खुदा ने इन्सान की रूह को आदम अलै0 की पुश्त से मुन्तक़िल करके आलमे अर्वाह में रखा फिर वहां से मुन्तक़िल करके इसे दुनिया में भेजा, अब इसे दुनिया से मुन्तक़िल होकर क़यामत तक रहने के लिये बर्ज़ख़ के आलम में भेजा जायेगा फिर क़यामत के दिन फैसले के बाद या तो हमेशा रहने के लिये जन्नत में दाख़िल किया जायेगा या फिर हमेशा के लिये इसे जहन्नम में डाला जायेगा। इसके अलावा इन्सान का कोई तीसरी ठिकाना नहीं है, इसलिये इन्सान खत्म नहीं हाता बल्कि एक आलम से दूसरे आलम मे मुन्तकिल होता है, हॉ, दुनिया में मिला हुआ इसका जिस्म अल्बत्ता ख़त्म होकर मिट्टी हो जाता है पर अम्बिया अलै0 को दुनिया में मिला हुआ जिस्म भी ख़राब नहीं होता कि ज़मीन की मिट्टी पर अम्बिया अलै0 का जिस्म हराम है न तो उनके जिस्मों को ये गला सकती है और न ही सड़ा सकती है।

जैसे कि ये बात पहले ही अर्ज की जा चुकी है कि आलम ए बर्जख 6 जमीनों के बाद का एक आलम है जो आलम ए दुनियॉ से लाखों गुना बड़ा है, “हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ! इन्सान के दुनियॉ से मुन्तकिल होकर कब्र में पहॅुचने की मिसाल ऐसी है जिस तरह मॉ के पेट की तंगी ओर अधेंरे से निकल कर इन्सान दुनियॉ में आता है।” आलम ए दुनियॉ से आलम ए बर्जख लाखों गुना बड़ा है ये रिवायत इसी की तरफ इशारा कर रही है, इसी आलम मे हुजूर सल्ल0 को जिब्रील व मीकाईल अलै0 लेकर गये थे, इस आलम मे अन्डे जैसी एक चीज है जिसका नाम कब्र है मेरी ये बात आपको अजीब लग रही होगी कि आलम ए बर्जख मे अन्डे जैसी एक चीज का नाम कब्र है, ये बात मेरी नही है बल्कि हूजुर सल्ल0 ने ही क़ब्र की मुशाबहत अन्डे से की है।

हूजुर सल्ल0 ने एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि0 से फरमाया ! ऐ आइशा अल्लाह के बारे में शक करने वालों के लिये बड़ी खराबी है कि वे क़ब्र में इस तरह से दबाये जायेंगे जिस तरह अंडे (के अन्दर बच्चे) को पत्थर रख कर दबा दिया जाये।

(शौके वतन के हवाले से)

इस हदीस की रोशनी मे अब ये हदीस समझ मे आयेगी कि "हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! जब गुनाहगार क़ब्र में दाखिल कर दिया जाता है तो क़ब्र उसे इस तरह से दबाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं। " जिस तरह अंडे के अन्दर बच्चे को पत्थर रख कर दबा दिया जाये तो उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जायेगीं।

आलम ए बर्जख मे मौजूद हर इन्सान की कब्र मे खुदा जिस्म बनाते है मलकुलमौत अलै0 हमारे इस दुनियॉ के जिस्म से रूह निकाल कर उस जिस्म मे दाखिल करते हैं।

हुज़ूर सल्ल0 का इर्शाद है "बगैर किसी शक के क़यामत के दिन तुम लोग आदम अलै के कद पर बेख़त्ना, नंगे पांव और नंगे बदन जमा किये जाओगे"। (बुख़ारी और मुस्लिम)

इस हदीस से ये बात पता चलती है कि हमारा कब्र मे बना हुआ जिस्म, कब्र से निकल कर हश्र के मैदान मे पहुँचेगा, हमारे इन जिस्मों (जो माँ के पेट में बना है) का डाक्टर या जर्राह ख़त्ना करते है मगर क़ब्र में बने हुए जिस्मों का ख़त्ना नहीं होता है, इसी लिये बर्ज़ख़ में बना हुआ हमारा जिस्म बे ख़त्ना होता है।

हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! जन्नत मे दाख़िल होने वाला हर जन्नती आदम अलै0 के जिस्म की तरह 60 हाथ का होगा।"

(बुख़ारी बाब ख़ुलिक़ा आदम)

जिस तरह दुनिया के आलम में रहने वाले का जिस्म दुनिया की मिट्टी से बनाया जाता है उसी तरह कब्र मे मिलने वाला जिस्म बर्ज़ख़ की मिट्टी से बनाया जाता है। यहाँ पर इस बात को भी हम समझ लें कि जब जन्नत से निकाल कर आदम अलै0 और हव्वा अलै0 को अलग अलग इस ज़मीन पर उतारा जा चुका तो 40 साल के बाद अरफात के मैदान में दोनों की आपस में मुलाक़ात हुई फिर दोनों साथ में रहने लगे और अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने हव्वा अलै0 के पेट से इन्सानों को इस ज़मीन पर भेजने का सिलसिला शुरू किया जो आज तक जारी है और क़यामत के क़ायम होने तक जारी रहेगा पर हव्वा अलै0 से शुरू हुआ इन्सानों का आलमे अर्वाह से आने का सिलसिला नूह अलै0 के ज़माने तक जो चला उन सारे इन्सानों का जिस्म 60 हाथ ही का होता था।

नूह अलै0 की क़ौम के बाद इन्सानों का जिस्म और उम्र घटते-घटते हुज़ूर सल्ल0 के ज़माने तक जिस्म 5 से 7 फिट तक और उम्र 60 से 63 साल के दरम्यान रह गयी। यहॉ पर सोचने वाली बात यह है कि 19 करोड़ 69 लाख 50 हज़ार मुरब्बा मील फैली हुई दुनिया में इन्सानों के लिये 5 करोड़ 74 लाख 10 हज़ार मुरब्बा मील ज़मीन पर मिट्टी (और तक़रीबन 14 करोड़ मुरब्बा मील पर पानी) पर तनो-तन्हा हज़रत आदम अलै0 और हव्वा अलै0 को जन्नत से निकाल कर इस ज़मीन पर फरिश्तों के ज़रिये आसमानों के ऊपर से उतारा गया है, जिस तरह क़यामत के क़ायम होन से पहले हज़रत ईसा अलै0 को दूसरे आसमान के ऊपर से दो फरिश्तों के परों पर हाथ रख कर पीले रंग का जोड़ा पहने हुए मुल्क शाम की जामा मस्जिद की मीनार पर उतारा जायेगा। हज़रत ईसा अलै0 जिस वक़्त मस्जिद की मीनार पर उतारे जायेंगे उस वक़्त इमाम मेहदी फज्र की नमाज़ की इमामत करने के लिये मुसल्ले पर खड़े होंगे। इक़ामत कही जा चुकी होगी पर उसी वक़्त ईसा अलै0 के इस ज़मीन पर आसमान से उतारे जाने की ख़बर सुन कर इमाम मेहदी नमाज़ पढ़ने से रुक कर, मस्जिद की मीनार से उतर आने का इन्तिज़ार करेंगे फिर उनके उतर आने के बाद इमाम महदी हज़रत ईसा अलै0 से जमात की इमामत करने को कहेंगे और खुद मुसल्ले से हट जायेंगे पर ईसा अलै0 के कहने पर इमाम मेहदी ही फज्र की नमाज़ पढ़ायेंगे। (इसलिये कि हज़रत ईसा अलै0 को सूर फातिहा का इल्म नही होगा) (मुस्लिम)

अब रही बात कि खुदा कब्र मे जिस्म कैसे बनाते है ? इसका जवाब ये कि जिस तरह अल्लाह पाक इस दुनिया मे अन्डों के अन्दर परिन्दों के जिस्म बनाते हैं, उसी तरह अल्लाह पाक बर्ज़ख़ के आलम में क़ब्र के अन्दर उन इन्सानों के जिस्मों को अपनी कुदरत से बनाकर तैयार रखते हैं (जो इन्सान आलमे अर्वाह से दुनिया में आ चुके होते है) जिस तरह आलमे अर्वाह

से मुन्तक़िल होकर दुनिया में आने वाले इन्सान के साथ होता है कि आलमे अर्वाह से मुन्तक़िल किये जाने से 4 महीने पहले अल्लाह पाक इस इन्सान की मां के पेट में इसका जिस्म बनाना शुरू कर देते हैं इसी तरह इन्सान जैसे ही आलमे अर्वाह स इस दुनिया में मुन्तक़िल होता है तो क़ब्र में इसका जिस्म बनना शुरू हो जाता है, अल्लाह तआला का इर्शाद !

“हम जानदार चीज़ों से बेजान को निकालते हैं, और बेजान चीज़ों से जानदार चीज़ों को निकालते हैं, और जिसको जैसे चाहें रिज़्क़ अता फरमाते हैं।” (सूरः आले इम्रान-26)

अल्लाह पाक अन्डों के अन्दर इस वजह से जिस्म नहीं बनाते है कि अल्लाह की ज़ात नाऊज़ुबिल्लाह अन्डों के बग़ैर जिस्म बनाने पर क़ादिर नहीं है ऐसा सोचना भी कुफ़्र है, अन्डों के अन्दर जिस्म का बनाना इन्सानों के क़ब्र में बन रहे जिस्म की तरफ मुतवज्जा करने के लिये है। क़ब्र में इन्सानों के बन रहे जिस्म को अल्लाह पाक इस दुनिया में अन्डों के अन्दर जिस्म बनाकर समझाते हैं इसलिये क़ब्र मे जिस्म बन जाने के बाद मलकुल मौत दुनिया के जिस्म से रूह को निकाल कर क़ब्र के जिस्म में मुन्तक़िल करते हैं।

हजरत अनस बिन मालिक रजि0 से रिवायत ह रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया ! बन्दा जब अपनी कब्र मे पहुँच जाता है (इसकी रूह जब कब्र के जिस्म मे डाल दी जाती है) और उसके साथी वापस चल देते है (मलकुलमौत और उनके साथ आये 500 फरिश्ते) और उनके वापस होने पर उनके पैरों की आवाज इसे सुनायी पड़ रही होती है, इतने मे इसके पास दो फरिश्ते आकर उसको बिठाते है फिर सवाल जवाब शुरू कर देते है। (बुखारी)

इन्सान का जिस्म ही क़ब्र के अन्दर अज़ाब में मुब्तिला किया जाता है, जिस तरह मुर्गी का बच्चा अन्डे के अन्दर दबा हुआ रहता है कि एक बार अन्डे से बाहर आने के बाद अगर सारे इन्सान मिल कर दोबारा इस अन्डे में इसे डालना चाहें तो ऐसा नहीं कर सकते। इसलिये कि ये अन्डे से बाहर आया हुआ बच्चा अन्डे के अन्दर चारों तरफ से दबा हुआ था, जो बाहर आने के बाद हमें अन्डे से बड़ा नज़र आ रहा है। इसी तरह क़ब्र के अन्दर इन्सान को जगह की तंगी महसूस होती है लेकिन सवालों के जवाब दे लेने के बाद मोमिन की क़ब्र इसीलिये सत्तर हाथ की लम्बी चौड़ी और ऊचीं कर दी जाती है ताकि मोमिन के जिस्म को राहत मिल सके। इसी तरह काफिर इन्सान को जब सांप फुंकार मारता है तो इसका जिस्म 70 हाथ नीचे धंस जाता है तो फिर उसे खींच कर ऊपर निकाला जाता है। हुज़ूर सल्ल0 ने जहन्नमी लोगों के जिस्मों से के बारे मे बतलाया कि

“काफिर अपनी ज़ुबान एक फर्सख़ (3 मील) और दो फर्सख़ तक खींच कर बाहर निकाल देगा।” (तर्गीब-तर्हीब)

“जहन्नमी के दोनों मोढ़ों के दरम्यान का हिस्सा तीन दिन के रास्त के बराबर होगा।” (मुस्लिम शरीफ)

“क़यामत में काफिर की दाढ़ उहद पहाड़ के बराबर होगी।” (मिश्कात)

और कुछ रिवायतों मे काफिर की खाल के बारे में आया है कि उनकी खाल 42 हाथ मोटी होगी वगैरह। क़ब्र के अन्दर हर एक का जिस्म होगा लेकिन मुन्किर और नकीर के सवालों का जवाब न दे पाने की वजह से जिन लोगों पर क़ब्र का अज़ाब होता है, इस अज़ाब की वजह से क़यामत के दिन इनके जिस्म जलन, सूजन, काला पन और जिस्म पर छाले वगैरह पड़े होने की वजह से, ये बदन मोटे, बड़े और बेढंगे नज़र आयेगे। इस बात को समझने के लिये यूँ समझ कि जिस तरह इस दुनिया में किसी इन्सान की खूब पिटाई की जाये, जिस्म को आग से जलाया जाये, धारदार हथियार से जख़्मी किया जाये, हाथ पेरों को जिस्म से बांध दिया जाये, तो ऐसे इन्सान का जिस्म जगह-जगह से फूला हुआ, जलने की वजह से जिस्म पर छाले पड़े हुए और जिस्म का रंग काला, नीला, गेहुए और जगह-जगह धब्बे नज़र आयेंगे।

अब एक सवाल यहॉ पर ये पैदा होता है अगर बर्ज़ख़ दुनिया की इस पर ज़मीन नहीं है और क़ब्र भी ये नहीं है तो हुज़ूर सल्ल0 ने इसी ज़मीन वाली क़ब्र मे अज़ाब होते सुना और देखा है ?

जवाब . अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने टेक्नालॉजी का ये दौर सिर्फ अपनी कुदरत का तआरुफ कराने के लिये ही शुरू कराया है चूंकि हुज़ूर सल्ल0 क़यामत तक आने वाले सारे इन्सानों के नबी हैं, हुज़ूर सल्ल0 को अल्लाह की तरफ से वो सारी खूबियां मिली हुई थी जो खूबियां आप से पहले किसी भी नबो को हासिल नहीं थीं कि मराज का होना, आसमानों के ऊपर के आलमों को देखना, इसके अलावा आप सल्ल0 को क़यामत तक ज़ाहिर होने वाले फित्नों में शामिल होने वाले लोगों की शक्लें (हुलिया) तक 1425 साल पहले ही दिखला दी गयी थी। आपको इसी जमीन पर रहते हुए वो सब नज़र आता था, जो इस ज़मीन से बहुत दूर होता था जैसे एक दिन आप सल्ल0 ने मैदाने हश्र में कौसर के हौज को मस्जिद के मिम्बर पर चढ़ कर देखा और सहाबा किराम से यूँ इर्शाद फरमाया ! मैं तुम लोगों से पहले होज पर पहुँच कर गवाह बनूंगा और उस ज़ात की कसम जिसके कब्जे में मेरी जान है मैं इस वक्त अपने कौसर के हौज को देखा रहा हूँ। (मुस्लिम-किताबुल फज़ायल)

इसी तरह आप सल्ल0 ने इसी जमीन पर खड़े होकर जन्नत को देखा और जन्नत के पेड़ से अंगूर तोड़ने के लिये आपने अपने पैरों को भी बढ़ा दिया जैसा कि हदीसों से पता चलता है। जब हज़रत उमर रज़ि0 मदीने से 300 मील को दूरी पर सारिया रज़ि0 को देखकर और उन्हें खबरदार कर सकते हैं कि “सारिया अल जबल”। (अबु नुऐना, पेज नं0 210)

तो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का भला कोई क्या मुकाबला कर सकता है, वो तो सारे नबियों क इमाम हैं, उनके साथ भला वो सब कुछ क्यों नहीं हो सकता जो किसी के साथ न हुआ हो, इसलिये हुज़ूर सल्ल0 का किसी के जिस्म को दफन करने वाली जगह पर खड़े होकर अजाबे क़ब्र का सुनना और देखना कोई हैरत और ताज्जुब की बात नहीं है। इसलिये कि इस दौर में ये सारी बातें बहुत आसानी से देखी और समझी जा सकती हैं, जिस तरह चांद पर पहुंचने वाले इन्सानों ने चांद से वापस आने पर कुत्ते के एक बच्चे को चांद की ज़मीन पर ही छोड़ दिया (उचकने और कूदने के लियें) और इस ज़मीन पर वापस आकर 3 लाख 84 हज़ार किलोमीटर की दूरी से उसकी हरकतों को टेलीवीज़न की स्क्रीन पर देखते रहे या जिस तरह आज हिन्दुस्तान में बैठे हुए लोग नवीं जिलहिज्जा को अरफात के मैदान में हाजियों को टेलीवीज़न या मोबाईल पर देख लेते हैं या कोई आदमी हिन्दुस्तान में रहते हुए अमरीका में रहने वाले अपने बाप या भाई से मोबाईल पर बात कर सकता है या वीडियों कालिंग के ज़रिये उनको देख सकता है तो क्या अल्लाह पाक अपनी कुदरत से हुज़ूर सल्ल0 को बर्ज़ख़ के आलम मे क़ब्र के अन्दर हो रहे अज़ाब को दिखला और सुना नहीं सकते ? लेकिन कुदरत की बात तो उसी की समझ में आयेगी जिसे अल्लाह की कुदरत का यक़ीन होगा वरना कुदरत की मालूमात रखने वाले को भी कुदरत समझ में नहीं आयेगी, इसी यकीन को हासिल करने के लिये ईमान सीखा जाता है पर हमने आज तक ईमान नहीं सीखा।

हुज़ूर सल्ल0 की ज़ात जो आसमानों का सफर करते हुए अर्श तक बुला ली गयी हो भला उस बा बरकत ज़ात ने अगर दफन करने वाली जगह से खड़े होकर बर्ज़ख़ के आलम में क़ब्र के अन्दर होते हुए अज़ाब को देखा हैं तो इसमें कोई हैरत की बात नहीं है। आसमान में खुलने वाले दरवाज़ को आपने देखा है फिर ये बर्ज़ख़ तो ज़मीन और आसमान के दरम्यान हैं, ऐसा इसलिये कि आसमान भी अन्डे की तरह गोल और चारों तरफ से बन्द है, (ये बात इस ज़मीन से 4 हज़ार किलो मीटर आसमान की तरफ ऊपर जाने से हमें खुद नज़र आ सकती है) जब हुज़ूर सल्ल0 किसी दफन करने वाली जगह पर खड़े होते थे या उस गड्ढे में जहाँ पर किसी को दफन किया जाना होता था, आपको वहीं पर खड़े खड़े बर्ज़ख़ के आलम में कब्र के अन्दर हो रहे अज़ाब को दिखलाया या सुनवाया जाता था (जिस तरह वीडियों कालिंग के ज़रिये से कुछ भी दिखलाया ओर सुनाया जा सकता है)

जैसे कि ये हदीस शुरू मे ही लिखी जा चुकी है कि हुज़ूर सल्ल0 ने फरमाया ! “मुझे वो चीजें नज़र आती हैं जो तुम्हें नज़र नहीं आती और मुझे वो सुनायी पड़ता है जिन्हें तुम नहीं सुन सकते।” (तिर्मिज़ी)

हज़रत उस्मान रज़ि0 क़ब्र की बात सुनकर या क़ब्रस्तान में पहुंच कर इतना रोते थे कि दाढ़ी के बाल आंसुओं से तर हो जाते थे क्योंकि क़ब्र इन पर मुन्कशिफ हो जाती थी, जिस तरह अम्र बिन जमूह रज़ि0 को जन्नत की खश्बू उहद के मैदान में मिलने

लगी थी और हज़रत अली रज़ि0 तो यहां तक फरमा रहे हैं कि मेरे सामने अगर जन्नत या जहननम को कर दिया जाये तो मेरे यक़ीन में न कमी होगी और न इज़ाफा कि जन्नत या जहन्नम उन पर मुस्तहज़र और मुन्कशिफ हो चुकी थी।

एक सहाबिया ने हुज़ूर सल्ल0 के पास आकर अपने इन्तेकाल कर चुके बच्चे के बारे में तज़्किरा किया, आप सल्ल0 ने उनसे फरमाया कि तुम्हारा बच्चा इस वक़्त जन्नत में खेल रहा है कहो तो तुम्हें दिखला दूँ ?

यहॉ पर ये बात भी याद रखने की है कि शहीद को बर्ज़ख़ के आलम में क़ब्र की जिन्दगी नहीं गुज़ारनी पड़ती है बल्कि शहीद की रूह को जन्नत में भेज दिया जाता है। शहीद के बारे में हुजूर सल्ल0 ने बतलाया शहीद की रूहें हरे रंग के परिंदों के पोटों में हैं, उनके लिये अर्श इलाही के नीचे कन्दील लटके हैं, वे जहां चाहें जन्नत में चलती फिरती हैं फिर इन कन्दीलों में आकर ठहर जाती हैं, अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने ये इर्शाद फरमाया है,

“जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये हैं उनको मुर्दा मत समझो बल्कि ये लोग ज़िन्दा अपने रब के क़रीब में हैं जहां इन्हें रिज़्क़ मिलता है।”

मुर्दा मत समझों का मतलब ही यही है कि इन लोगों को बर्ज़ख़ वाली जिन्दगी में न समझो और रिज़्क़ मिलता है कि रूहें जो हरे रंग के परिन्दों के जिस्म में होती हैं जन्नत के पेड़ों से फलों को खाती और वहां की नहरों से पीती हैं।

हजरत सलमान फारसी रजि0 रिवायत फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्ले0 ने इर्शाद फरमाया ! जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकल कर सरहद की निगरानी का काम अन्जाम देता रहा और उसी हाल में उसकी मौत आ जाये तो उसको रिज्क मिलता रहेगा।

(तिर्मिजी व इब्ने माजा)

इन सारी रिवायतों को सामने रखकर अपनी रूह और जिस्म को अपनी मेहनत का मैदान बनाओ ताकि हमारे अन्दर हमारे बनाने वाले का ध्यान आ जाये और ध्यान पाने के लिये गैब की इन बातों को तन्हाईयों मे बैठकर कुरआन व हदीस की रोशनी मे जिन्हे हुजूर सल्ल0 ने बतलाया है इन पर गौर व फिक्र करो, ये नमाज के अमल मे खुशुऊ हासिल होने का रास्ता है। खुशुऊ हासिल होने के बाद हमे वो मेहनत करनी है जिस मेहनत के लिये इब्राहीम अलै0 ने इस उम्मत को अल्लाह से मॉगा था कि जब इब्राहीम अलै0 अल्लाह के करीब होने के लिये अल्लाह की हर बात मानत चले गये इसलिये कि करीब वाले की बात मानी जाती है, इस तरह जब इब्राहीम अलै0 अल्लाह के करीब पहुॅच गये तो अल्लाह ने इब्राहीम अलै0 से कहा कि ऐ इब्राहीम ! तूने मेरी हर बात मानी है अब तू मुझसे मॉग क्या मॉगता है अब तेरी हम मानेगें तो इब्राहीम अलै0 ने कहा ऐ मेरे रब ! मुझे सोचने का मौका दीजिये कि मैं आपसे क्या मॉगू ? खुदा ने कहा ठीक है सोच ले, इब्राहीम अलै0 ने सोचकर कहा कि मैं आपसे दो चीजे मॉगता हूॅं पहली चीज इस बैतुल्लाह की आबादी के लिये उम्मत मॉगता हूॅं और दूसरी चीज उम्मत की तर्बीयत के लिये नबी मॉगता हूॅं।

वो नही मॉगा जो आज हमारे जहनों मे है कि मेरी औलादों को उम्दा तिजारत दे दीजिये, उम्दा खेती दे दीजिये, उम्दा हुकूमत दे दीजिये, उम्दा कारखाने या उम्दा नौकरी दे दीजिये, ये उम्मत खेती करने के लिये नही मॉगी गयी है, दुकानें करने के लिये नही मॉगो गयी है, कारखाने लगाने के लिये नही मॉगी गयी है, नौकरियॉ करने के लिये नही मॉगी गयी है, मुल्क चलाने के लिये नही मॉगी गयी है बल्कि ये उम्मत बैतुल्लाह की आबादी के लिये मॉगी गयी है, बैतुल्लाह की आबादी की मेहनत का मतलब मस्जिद की आबादी की मेहनत है, ये उम्मत जब तक बैतुल्लाह की आबादी वाली मेहनत करती रहेगी ये आबाद रहेगी और जब उम्मत मस्जिद की आबादी की मेहनत छोड़ेगी तो किस्म किस्म की मुसीबातें से परेशान हो जायेगी फिर जलजले आयेगें, तूफान आयेगें, जंगे होगी, नई नई बीमारियॉ आयेगी, कब ? जब चीज मकसद से हट जाया करती है तो कोई ना कोई मुसीबत आ जाया करती है और यही हुआ कि ये उम्मत मस्जिद की आबादी की मेहनत से हटकर मुल्क व माल की मेहनत पर लग गयी और मुसीबतों व परेशानियों मे मुब्तिला हो गयी। आज उम्मत की मेहनत जमीनों पर, मजदूरियों पर, चीजों पर है कि जिस तरह लोग बाजार मे चीजों के नक्शे बना-बनाकर जाकर पेश करते हैं और उसके बदले चन्द कौड़ियॉ और चन्द

पत्थर अपने घरों मे खुश होकर ले आते है। नक्शे वालों का मरकज बाजार है कि हमने ये कपडे बनाये है, ये बरतन बनाये है, ये धागा बनाया है, ये सूई बनाई बनायी है फिर इन बनायी हुई चीजों को बाजार मे लाकर पेश किया अब खरीदने वाला इन चीजो को हमसे खरीद कर पैसे दे गया फिर उस पैसे को लेकर उसी बाजार मे हमने किसी चीज का इन्तिखाब करके कि इससे सर्दी मे हिफाजत होगी इसे घर ले चलो फिर उस चीज को हम खरोद कर अपने घर ले आये। एक सिपाही से लेकर मुल्क के वजीर-ए-आजम तक बाजार से चीजें ला-लाकर अपनी जिन्दगी बना रहे है, ये बाजार से बड़े बनकर लेते हैं हम बाजार मे छोटे बनकर उन्हे वो चीजें बेच देते हैं, बाजारी जिन्दगी हकीर है, अल्लाह के यहॉ गधा इतना हकीर नही, रन्डो इतनी हकीर नही जितना हकीर बाजारी आदमी है।

इधर बाजार के मुकाबले पर मस्जिद बनायी गयी है जहॉ अमलों को बनाकर अल्लाह के सामने पेश करो कि ऐ अल्लाह मैंने तेरे वाले अमल बनाये हैं वो तुझे पेश कर रहा हूँ अब तू अपनी कुदरत ये मेरी जिन्दगी बना दे। जो फरिश्ते फज्र की नमाज से लेकर असर की नमाज तक इसके साथ होते हैं, जहॉ-कहीं भी इसने अमल बनाये वो आमाल को लेकर वहॉ जाते हैं जहॉ अल्लाह के सामने इन्सान के अमल पेश होते हैं, इसलिये अल्लाह की मर्जी के मुताबिक अमल पेश करके अल्लाह से इत्मिनान, हिफाजत, सुकून और परवरिश मॉगो, अमल पेश करके अल्लाह से हिदायत मॉगो, यहॉ जमीनदार,काश्तकार को भी अमल पेश करके मॉगना होगा, फकीर और मालदार को भी अमल पेश करके मॉगना होगा।

कान सही सुनेगे या गलत सुनेगे,
बदन सही बैठेगा या गलत बैठेगा,
ऑख सही देखेगी या गलत देखगी,
जुबान सही बोलेगी या गलत बोलेगी,
दिमाग सही सोचेगा या गलत सोचेगा,

इसका पता नमाज को कायम करने पर चलेगा कि इसने अपने जिस्म का इस्तेमाल मस्जिद के बाहर कैसे किया है अगर जिस्म का इस्तेमाल अपनी मर्जी पर किया है तो नमाज के अमल मे खुदा इसे अपना दीदार न करायेगे और जिसकी नमाज के अमल मे खुदा का ध्यान नही होता उसके लिये तय हो जाता है कि

इसके ऊपर मुसीबतें डाल दो,
इसके ऊपर बीमारियॉ डाल दो,
इसके नक्शों मे आफते डाल दो,
इसके ऊपर गम और फक्र डाल दो,
इसके ऊपर परेशानियॉ और तंगी डाल दो,

अब हो सकता है इसके जमींदारा मे कीड़े पड़ जायें या बाजार मे आग लग जाये या दुकान मे नुकसान हो जाये। उसकी जिन्दगी की बरबादी के फैसले के लिये, कारोबार के उजड़ने के लिये, जलील-रूसवा और परेशान हाल होने के लिये इतनी बात काफी है कि नमाज के अमल मे खुदा का ध्यान न हो।

एक ताजिर आदमी اَللّٰهُ اَكۡبَرُ اللّٰهُ اَكۡبَرُ सुनकर नमाज के अमल के लिये मस्जिद मे आ गया तो पेश करो तुमने तिजारत मे कौन से अमल किये ? गैरूल्लाह के एतबार से अमल किये या हमारे एतबार से अमल किये ?

अगर अमल खराब निकले तो मस्जिद मे आकर भी फैसला नाकामी का होगा कि मस्जिद का नमाजी है फिर भी इसकी नाकामी का फैसला किया जा रहा है, आज जेलखाने मे नमाजी जा रहा है क्यों ? इसलिये कि ये नमाजी तो है पर बदअमल इन्सान है, इसके पास नमाज की सूरत तो है नमाज की हकीकत नही है कि जंगल मे शेर तो है पर मुर्दा है। आज मस्जिद मे आने वाले नमाजियॉ का अमल से पलने का जहन नही है बल्कि नक्शों और चीजों से पलने का जहन बना हुआ है। याद रखना

कामयाबी की शुरूआत नमाज से होगी, दुनियॉ व आखिरत की सारी फलह व बहबूद और हिफाजत नमाज पर है। उम्मत का फिर से मस्जिद की आबादी की मेहनत पर आना ही खुदा की कुदरत से फायदा उठाना है पर इस मेहनत मे सबसे बुनियादी जुम्ले दो है एक لَا إِلَٰهَ और दूसरा إِلَّا اللهُ मस्जिद की आबादी की मेहनत की यही बुनियाद है।

इसके लिये हमे सबसे पहले **لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ** का इल्म सीखना होगा ताकि हम हमातन अल्लाह की तरफ मुतवज्जा रहने वाले बन जायें, इसके लिये हमे मस्जिद मे इल्म के हलके लगाने होगें जिस हलके से हम इल्म सीख रहे हों या सिखला रहे हों, ये मस्जिद की आबादी की पहली मेहनत है।

मस्जिद को आबाद करने की दूसरी मेहनत **لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ** को दिमाग मे बैठाना होगा ताकि हम अल्लाह के अलावा से मायूस हो जायें, इसके लिये हमे मस्जिद मे ईमान को सीखने के हलके लगाने होगें जिस हलके से हम ईमान सीख रहे हों या सिखला रहे हों, ये मस्जिद को आबाद करने की दूसरी मेहनत है।

मस्जिद को आबाद करने की तीसरी मेहनत मे हमे तन्हाईयों मे बैठकर अपने अन्दर अल्लाह का ध्यान पैदा करना है, इस तरह इन तीनों मेहनतों को करते हुए हमे नमाज का अमल करना है, नमाज का अमल अपने अन्दर नमाज को कायम करने के लिये है। अल्लाह जल्ला शानुहू ने मक्का मे दार ए अरकम से इन तीनों मेहनतों को शुरू करा कर मदीना की मस्जिद नबवी को सारी दुॅनिया के लिये नमूना बनाया, मस्जिद नबवी मे ये तीनों मेहनतें हर वक्त हुआ करती थी जब नमाज का वक्त होता तो हुजूर सल्ल0 नमाज का अमल कर लेते। हर चीज स हटकर इन तीनों मेहनतों को मस्जिद मे करने और कराने का मकसद ये है कि हमारी 24 घन्टे की जिन्दगी अल्लाह को देखते हुए गुजर रही हो और अल्लाह को देखते हुए जिन्दगी का गुजारना किसी इन्सान को उस वक्त तक मयस्सर नही होगा जब तक ये अपने आपको देखने वाला न बन जाये। अपने आपको देखने का मतलब अपनी रूह को देखना है, सोचने वाली बात ये है कि जिस रूह को अल्लाह का दीदार होना है हमे सुबह से लेकर शाम तक अपनी ही रूह का ख्याल न हो, अल्लाह तआला ने इसी गफलत पर शैतान को हमेशा के लिये नाकाम करके कयामत तक आने वाले इन्सानों को गफलत का नुकसान बतला दिया।

शैतान जो सबसे बड़ा आबिद, सबसे बड़ा आरिफ और सबसे बड़ा आलिम था कि उससे बड़ा न कोई आलिम हुआ, न उससे बड़ा कोई आरिफ हुआ और न उससे बड़ा कोई आबिद हुआ, जब गफलत की वजह से वो नाकाम हो गया तो हमारी क्या मजाल है। यहॉ पर अब ये सवाल पैदा होता है कि इन सिफात के होते हुए उसके अन्दर अना कैसे आ गयी कि मै आदम से अफजल हूॅ कि वो मिटटी से पैदा किये गये हैं और मैं आग से, आदम अभी पैदा किये गये है और मैं हजारों साल से अल्लाह की इबादत कर रहा हूॅ फिर मैं इनके सामने सज्दा क्यों करूॅ ? आखिर ये बात उसके अन्दर कैसे आ गयी ? अम्बिया अलै0 भी आरिफ, आलिम और आबिद होते थे इन सिफात की वजह से उनके अन्दर कभी अना नही आयी फिर अबलीस के साथ ऐसा क्यों हुआ ?

अबलीस के साथ ऐसा होने की वजह ये थी कि वो एक लम्हे के लिये अपनी रूह से गाफिल हो गया बस इस गफलत पर अल्लाह ने उसके अन्दर से अपना ध्यान निकाल लिया, ध्यान निकलते ही उसके जिस्म ने मक्कारी कर दी कि आदम मिटटी से पैदा हुए हैं और मै आग से, इनके मिटटी के जिस्म ने अब तक अल्लाह की इताआत और फरमा बरदारी भी नही की है जब कि मेरे हाथ पैर, मेरा सर और गर्दन हजारों साल से अल्लाह की कोई इतआत और फरमा बरदारी मे इस्तेमाल हो रहा है। जरा सोचो जो शैतान इन्सानों का सबसे बड़ा दुश्मन है जब वो जिस्म की यानी नफस की मक्कारी से तबाह हो गया तो हमारी क्या मजाल है, इसलिये अपने जिस्म से अल्लाह तआला की मर्जी वाले अमल अपनी रूह से पूरा कराओ। कैसे ? ऑख से, कान से, जुबान से, हाथ से, पैर से, दिमाग से और शर्मगाह से जब भी कोई हरकत हो वो रूह के इशारे पर करो अगर रूह के इशारे का ख्याल न करोगे तो दिखने मे वो अमल हुजूर सल्ल0 वाला अमल होगा पर अल्लाह के लिये न होगा। अल्लाह के

लिये तो वही अमल होगा जो उसके ध्यान के साथ हो वरना अपनी रूह ये गाफिल रहकर मुनाफिक भी सौ फीसद हुजूर सल्ल0 वाले अमल करते थे कि हजरत उमर रजि0 जसे फरासात वाले सहाबी भी ये नही समझ पाते थे कि कौन मुनाफिक है और कौन मुसलमान है, अरे इन्सान तो इन्सान नीचे लिखी जा रही हदीस से ये पता चलता है कि फरिश्तों को भी मालूम नही होता है कि कौन मुनाफिक है और कौन मुसलमान है।

हजरत जमरह बिन हबीब रजि0 हुजूर सल्ल0 से नकल करते हैं कि जब फरिश्ते किसी बन्दे के अमल को लेकर आसमान पर पहुंचते हैं जिसे वो बड़ा और पाकीज़ा समझते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ वह्य फरमाते हैं ! ऐ फरिश्तों तुम मरे बन्दों के अमल के निगरां हो लेकिन उनके दिलों में क्या है ये सिर्फ मै जानता हूं। मेरे बन्दे ने ये अमल मेरे लिये नही किया है, इसलिए यह अमल सिज्जीन (सांतवी जमीन के नीचे एक आलम है) में फेंक दो,

इसी तरह जब किसी और बन्दे का अमल लेकर फरिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं तो अल्लाह तआला उनकी तरफ भी वह्य फरमाते हैं ! ऐ फरिश्तों तुम अमल के निगरां हो लेकिन उसके दिल में क्या है ये मैं जानता हूं लिहाजा इस अमल को कई गुना कर दो और इसे उसके लिये इल्लीयीन में रख दो। (दुर्रेमंसूर 6/325)

रूह मानिंद सवार के है और जिस्म मानिंद सवारी कि सवार के इशारे पर चलने वाली सवारी मंजिल तक पहुच जाती है और अगर सवारी सवार से बेकाबू हो जाये तो सवार और सवारी दोनों मंजिल तक नही पहुॅच पाते, इन्सान के अन्दर उस वक्त तक कोई खूबी नही आ सकती जब तक वो नफस की गुलामी से रिहाई न पा ले और इससे रिहाई के लिये ये जरूरी है कि इसे पहचान कर इसकी मंशा पर गलबा पा ले, जब इन्सान अपने नफस पर गलबा पा लेता है तब इसके दिल को इकरार हासिल होता है, दिल के इकरार से इसकी रूह को करार मिलता है और फिर रूह का तआल्लुक हक तआला शानुहू के साथ जुड़ जाता है। इसलिये नफस को पहचान कर इस पर मुजाहदे की लाठी मारो और मुजाहदे की लाठी ये है कि जब तुम्हे किसी चीज की हाजत हो उस वक्त दुनियॉ के सरो-सामान से नाउम्मीद होकर, इससे दूर भाग कर बस नमाज का अमल करके हक तआला से कहो तो तुम्हारी हाजत को वो पूरी करेगा।

नफस किसको कहते हैं ? नफस जिस्म की जरूरतो का नाम है, जब हक तआला की तरफ से तुम्हारी तरक्की के लिये तुम पर हाजत भेजी जाती है तो रूह का और जिस्म का मुकाबला होता ह, उस वक्त तुम्हारा जिस्म तुम्हे शक्लों की तरफ मुतवज्जाह करता है, नफस ये चाहता है कि इन्सान शक्लों की तरफ मायल हो क्यों कि ये जिस्म खुद शक्लों से निकल कर आया है कि पहले जर्रात फिर मनी की बूंद फिर जमा हुआ खून फिर गोस्त का लोथड़ा फिर सही सालिम जिस्म। इन्सान की जरूरते जमीन और आसमान के दरम्यान फैली हुई शक्लों की तरफ जिस्म को इस तरह खीचती हैं जिस तरह मकनातीस (magnet-चुम्बक) लोहे को अपनी तरफ खींचता है अगर जिस्म मे रूह न हो तो ये जिस्म सिवाये मिटटी के और कुछ नही है फिर ये जिस्म न खाने-पीने का, न उठने-बैठने का, अल्लाह के गैर की तरफ मुतवज्जा करना ही इस जिस्म का काम है कि ये आपको माल की तरफ, चीजों की तरफ, सोने-चॉदी की तरफ, सवारी और महलों की तरफ मायल करगा और इसी माददे पर कदम बढ़ाने से रूह बिगड़ती है, जितना ये नफस के खीचने पर शक्लों से उम्मीद करेगा उतना ही इसकी रूह बिगड़ती चली जायेगी और इसके बरअक्स अगर इन्सान रूह पर मेहनत करता हैं तो हाजत के आने पर रूह कुदरत की तरफ मुतवज्जाह करतो क्यों कि ये रूह कुदरत के रास्ते से आयी है और नफस तो है ही वह माददा जिसे अल्लाह ने गैर से गैर की तरफ कहने-सुनने के लिये ही उभारा है इसी मे इन्सान का इम्तेहान हे कि यह कभी अल्लाह की तरफ नही खीचेगा, फरिश्तों मे ये माददा नही है तो फरिश्तों के लिये जन्नत नही है। इसलिये नफस को दबाओ और ये तहकीक करो कि खुदा का इस वक्त क्या हुक्म है ? नफस तो वो माददा है जिस पर इन्सान अगर पड़ जाये तो उसकी रूह इतनी खराब हो जाये जिसका इन्सान तसव्वुर भी नही कर सकते अगर रूह की बदबू को इन्सानो पर जाहिर कर दिया जाये तो दिमाग फट कर सब मर जायें या अगर रूह की स्याही जाहिर कर दी जाये तो सूरज भी स्याह पड़ जाये। एक फरिश्ता आकर जिस्म मे रूह डाल जाता है, ये रूह इसका सर और गला काटने से न निकलेगी बल्कि अल्लाह जब रूह निकालने के लिये फरिश्ते को भेजेगें तब ही रूह निकलेगी। आपको आग

या बारूद मे दबा दिया जाये तो वो फरिश्ता नही आयेगा रूह नही निकलेगी, एक महकमे से फरिश्ता रूह को जिस्म मे डाल कर जाता है दूसरे महकमे का फरिश्ता वक्त पूरा होने पर उसको जिस्म से निकाल ले जाता है।
हम मेहनत करके अपनी रूह को ऐसा पाकीजा बना ले जैसी पाकीजा बनाने पर खुदा की तरफ से वादे हैं, अल्लाह के गैर से उम्मीद और अपनी मजी वाले अमल ये दो चीजें ऐसी हैं जो रूह को स्याह और बदबूदार करती है और अल्लाह के गैर से मायूसी और मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल रूह को खुशबूदार और नूरानी करती है। अल्लाह के गैर से मायूस होकर अपनी जरूरतों को मुहम्मद सल्ल0 वाले अमल से पूरा कराना बस इतने पर ही खुदा पहले इस दुनियॉ मे तरतीब बदलेगें ताकि लोग अल्लाह को रब मान जाये कि अल्लाह पालते हैं और अमलों पर पालते हैं, वो चीजों से नही पालते। जिस्म वह जिन्स है जो किसी तरह भी रूह मे नही घुस सकता जैसे तार मे करंट घुसता है करंट के अन्दर तार नही घुस सकता इसो तरह रूह मे कोई चीज या कोई शक्ल नही घुस सकती, दवाऐ रूह मे नही घुसेगीं जिस्म मे फैल जायेगीं, जो रूह से चलता है वो रूह पर असर डालता है, तुम्हारा चलना रूह से चला है और जिस्म से जाहिर हुआ है। अमल की तहरीक रूह से चलती है और अमल जिस्म से जाहिर होता है अगर हमारे अमल रूह की लाश के है तो रूह बिगड़ जायेगी कि पैसे तो तकिया मे और बुख्ल बाहर बस रूह मे स्याही पहुँच गयी अगर कुरआन को सामने रखकर तक्सोम कर दिया तो रूह मे नूर आ गया, इस रूह के बनने-बिगड़ने के लिये अल्लाह ने क्या रखा है ?
रूह के बनने-बिगड़ने का तआल्लुक कुरआन स है, कुरआन पाक रूह की लाईन है, अल्लाह की कुदरत के मुकाबले मे कायनात मे फैली हर चीज की तरदीद करने के लिये कुरआन पाक मे अमल बतलाये है,
जिस्म की जरूरते चीजों से पूरी कराने के एतबार से चीजे दिखाने के लिये अल्लाह ने सूरज की रौशनी रखी है, जहॉ-जहॉ तक ये रौशनी चलती रहेगी जिस्म नजर आयेगें पर इस रौशनी मे हमे रूह दिखायी नही देती। यूरोप-अमरीका और एशिया के सूरमा इससे आजिज हैं कि रूह को देख लें, जहॉ सारी इन्सानियत आजिज है नबी का पहला इन्केशाफ वहॉ से शुरू होता है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 को नबूवत बाद मे मिली पहले जिब्राईल ने अपने आपको सामने करके दिखाया कि मैं खुदा का फरिश्ता, अब रूह गायब और रूह की लाईन के फरिश्ते गायब। आज अहमको-झूठों-बदमाशो और जालिमों के कहने पर हम सब माल से और चीजों से होने को तस्लीम कर रहे हैं तो मैं हजरत मुहम्मद सल्ल0 की खबरों को क्यों न मॉनू कि जो मुहम्मद सल्ल0 बतला रहे है कि इस अमल से ये होगा और इस अमल से ये होगा तो चीजों को दिखलाने के लिये अल्लाह ने सूरज की रौशनी रखी है, इसके मुकाबले मे एक रौशनी है अमल से जरूरते पूरी होती हुई दिखाने के लिये और ये रौशनी मिलती है नमाज को कायम करने से यानी नमाज के अमल से अपनी जरूरतों को अल्लाह से पूरा कराने पर लेकिन नमाज के अमल से अपनी हाजत को अल्लाह से पूरा कराने की कोशिश करते वक्त तुम अपने नफस की यानी अपने जिस्म की चालबाजियों से धोखा मत खा जाना कि जिस तरह दरिंदा बनावटी नींद से धोखा देता है कि वो अपने शिकार पर ये जाहिर करता है कि वो सो रहा है पर हकीकत मे वो इसके शिकार की ताक मे है कि जैसे ही वो इसकी जद मे आता है ये उसे दबोच लेता है, ठीक इसी तरह ये नफस भी हमारे तुम्हारे अन्दर आजिजी व इन्केसारी और नेक कामों मे हमारी तुम्हारी मुवाफिकत किया करता है ताकि हम और तुम इसकी इस्लाह से बेफ्रिक हो जाए और इसकी इस्लाह यही है कि हम हाजत के आने पर दुनियॉ के साजो-सामान से नाउम्मीद होकर, नमाज का अमल करके हक तआला से कहें तो वो हमारी तुम्हारी जरूरत पूरी कर देगा, कैसे पूरी करेगा य ऊपर लिखा जा चुका है, उसको सामने रखकर हाजत के आने पर दुनियॉ के साजो-सामान से दूर भागना और नमाज का अमल करके ही हक तआला से अपनी जरूरतों को पूरी कराना, अल्लाह तआला ने इन्सानों को इसकी तर्बीयत का रास्ता مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ को बतलाया है कि आप सल्ल0 ने नबी बनाये जाने से लेकर दुनियॉ से रूख्सत होने तक अपनी हर जरूरत को नमाज का अमल करके अल्लाह से पूरी कराया है, इसको समझने के लिये मुसलमान को सबसे पहले لَا إِلٰهَ को समझना होगा إِلَّا اللّٰهُ फिर खुद ही समझ मे आ जायेगा।

इस لَا إِلٰهَ का मतलब इस कलिमे के कहने वाले को मख्लूकात-ए-इलाहिया के एक जर्रे से भी उम्मीद बाकी न रहे इसलिये कि इस कलिमे की समझ मिटटी व सोने को और चीटी व जिब्रील को एक बराबर कर देती है, इन्सानों की कामयाबी दुनियाँ से मायूस होने और إِلَّا اللهُ को सब कुछ करने वाला समझने मे है। ये दुनियाँ एक जहरीले साँप की तरह है इसलिये इससे उस वक्त तक भागते रहो जब तक कोई शख्स आकर इसके दाँत ताड़ कर इसका जहर न निकाल ले फिर वो शख्स इसको तुम्हारे करीब लाकर तुम्हे इसके दाँत ताड़ने और जहर निकालने का हुनर सिखला कर इसे तुम्हारे हवाले कर दे, जब तुम्हे इस साँप से किसी किस्म की कोई तकलीफ पहुँचने का डर न होगा तभी तुम इसे अपने हाथ मे लेकर उलट पुलट सकते हो, इस काम को रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सहाबा के सामने करके दिखला दिया था और सहाबा किराम ने इसे बाद वालों के लिये करके दिखलाया कि इसके दाँत ताड़ने और जहर निकालने के लिये ही कलिमा और नमाज है कि कलिमा इसके दाँत ताड़ता है और नमाज इसका जहर निकालती है। सारे अम्बिया, सहाबा और औलिया ने इसे कलिमा और नमाज से ही उलटा पुलटा किया है, इसलिये जब तुम अल्लाह तआला को सब कुछ करने वाला समझोगे तो अल्लाह तआला तुम्हे अपना महबूब बना लेगें फिर वो दुनियाँ और दुनियाँ की शोहरत, दुनियाँ की लज्जत, नफस की ख्वाहिस और श्यातीन इन सबसे हमारी किफायत फरमायेगें वरना बिला दलील हम मुश्रिक बनकर तौहीद का दावा कब तक करते रहेगे ?

हम लोग दुनियाँ के पीछे इसलिये दौड़ रहे है ताकि ये हमको कुछ दे दे लेकिन ये हमको इतना ही देगी जितना एक गुलाम को मिलता है (जितना मुकददर मे लिखा जा चुका है) हाँ, अगर हमने सहाबा किराम और औलिया किराम की तरह इसके दाँत तोड़ने और जहर निकालने का हुनर सिखा होता तो बात कुछ और थी अगर हम अन्धे नही हैं तो खुद देख लें कि ये दुनियाँ सहाबा और औलिया के पीछे खुद किस तरह दौड़ रही थी कि किसी तरह इनको कुछ दे दे इसलिये ये इनके सामने सर झुकाये खड़ी रहती थी अगर हम भी अपने लिये ये पसन्द करते है तो हमे अपने नफस को तौहीद की तलवार से मारना पड़ेगा, इससे मुकाबले के लिये तौफीक का टोप पहना पड़ेगा, तक्वे की ढाल और यकीन का नेजा हाथ मे लेकर इससे मुकाबला करना पड़ेगा कि कभी नेजाबाजी हो तो कभी तलवारबाजी, यहाँ तक कि ये हमारे सामने सर झुका दे और हम इस पर सवार हो जाये अगर इसकी लगाम मेरे हाथ मे होगी तो हक तआला शानुहू हम पर फख्र फरमायेगें और हमे उन लोगों पर अफसर बना देगें जो लोग अपने नफसों के गुलाम हैं यानी जिनके जिस्म के आजा जब जो अमल चाहें अपनी रूह से करा लेते है।

आज हमारी गफलत का ये हाल है कि हमने न अपनी रूह के बारे मे जानने की कोशिश की और न कभी ये समझने की कोशिश की कि अल्लाह तआला ने अपने हुक्म हमारी रूह को दिया है या हमारे जिस्म को ? हालाँकि इस सवाल का जवाब ऊपर लिखा जा चुका है पर यादध्यानी के लिये एक बार फिर समझ लिया जाये कि अल्लाह जल्ला शानुहू के हुक्मों का तआल्लुक इन्सान की रूह से है, ये बात इस तरह से समझ मे आ सकती है कि अगर किसी इन्सान का नमाज के वक्त मस्जिद के अन्दर इन्तेकाल हो जाये तो क्या नमाज के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ? या

अगर बैतुल्लाह मे दाखिल होते ही उसकी मौत हो जाये तो क्या तवाफ के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ? या

अगर रमजान की रात मे सहरी खाने के वक्त किसी की मौत हो जाये तो क्या रोज के अमल का हुक्म उस पर लागू होगा ?

तो जवाब होगा नही, क्यों ? क्योंकि अल्लाह जल्ला शानुहू का हुक्म जिस चीज को मिलता था, मलकुलमौत वो चीज जिस्म से निकाल ले गया। अब रहा सवाल ये कि इन्सान की रूह अल्लाह जल्ला शानुहू का हुक्म कैसे पूरा करेगी ? रूह को हुक्म पर अमल कराने के लिये अल्लाह तआला ने इन्सान को जिस्म दिया है वरना जिस्म तो मिटटी है, हाँ इस मिटटी के जिस्म मे गोस्त का एक लोथड़ा है जिसे "दिल" कहते है इस दिल का तआल्लुक रूह से होता है और रूह का तआल्लुक अल्लाह जल्ला शानुहू के साथ जुड़ता है, ये दिल रूह और जिस्म का मर्कज है। कुरआन के जरिये अल्लाह जल्ला शानुहू ने इन्सान की रूह को मुखातिब किया है न कि जिस्म को इसलिये कि जिस्म तो रूह के काबू मे होता है, अल्लाह जल्ला शानुहू की तरफ से इन्सानो के मुतआल्लिक जो भी हुक्म कुरआन व हदीस मे आये हैं वो इन्सान की रूह से है, अल्लाह के हुक्म का तआल्लुक रूह से है, हालात का तआल्लुक भी रूह से है और इनामात का तआल्लुक भी रूह से है। जिस इन्सानी जिस्म से रूह निकाल

ली जाती है उस इन्सानी जिस्म पर न खुदा का कोई हुक्म लागू होता है, न उस इन्सानी जिस्म पर खुदा का कोई हाल आता है जैसे बुखार या भूख और न उस इन्सानी जिस्म पर खुदा का कोई इनाम नाजिल होता है जैसे इल्म या हिल्म। अब हमारे और तुम्हारे लिये सोचने वाली बात ये है कि क्या हमने अपनी सारी जिन्दगी मे अल्लाह जल्ला शानुहू का कोई भी छोटा या बड़ा हुक्म अपनी रूह से पूरा कराया है ? अगर नही तो इसे ही गफलत कहते हैं, क्या गफलत के साथ जिन्दगी गुजारने वाले को नमाज के अमल मे अल्लाह जल्ला शानुहू का दीदार हो सकता है ?

मख्लूक से नाउम्मीदी ही अल्लाह वालों को इसका शिकार होने से बचाती है मगर अल्लाह वाले हुकूक की अदायगी की गर्ज से इन्सानों की तरफ तवज्जा करने और उनके पास बैठने से अपनी तबीयत को मजबूर किया करते है, अल्लाह वालों के लिये मख्लूक की मिसाल ऐसी है जैसे कुछ लोगों ने बादशाह से मुलाकात करना चाहा लेकिन बादशाह तक पहुॅचने के लिये दरिया पार करना पड़ता था और चन्द लोग ही दरिया पार करने का रास्ता जानते थे, जो जानते थे वो दरिया पार करके बादशाह के पास पहुॅच गये और जो रास्ते से नवाकिफ थे वो दरिया मे गोता खाने लगे, बादशाह को जब इसकी खबर लगी तो उसने अपने पास आने वालों से कहा ! जिस रास्ते से तुम लोग आये हो उसी रास्ते से उन्हे भी लेकर आओ, इसकी असल हक तआला का ये कौल है कि

“ और कहा उस शख्स ने जो ईमान ला चुका था, ऐ मेरी कौम ! जिस रास्ते से मैं आया हूॅ उसी रास्ते पर तुम लोग आओ ताकि मैं तुम लोगों को हिदायत के रास्ते लगा दूॅ ”

जो शख्स अक्लमन्द होगा वो न दुनियॉ पर खुश होगा, न औलाद पर और न मुताल्लिकीन व अम्वाल पर खुश होगा, उसके लिये न खाना-पीना, न सवारी और बीबियॉ, क्यों कि ये सारा का सारा हवस है। मोमिन की खुशी ईमान व यकीन की कूव्वत और दिल के दरवाजे से अल्लाह के करीब पहुॅचने की होती है, दुनियॉ व आखिरत के बादशाह वही हैं जो कायनात से मायूस होकर अल्लाह तआला की मंशा पर चलने वाले और अपनी जरूरतों को नमाज के अमल से पूरा कराने वाले हैं।

हमारा तुम्हारा कल्ब कब साफ होगा और हमारे तुम्हारे बातिन मे किस वक्त सफाई आयेगी ? जब कि हम लोगों ने मख्लूक को शरीक-ए-खुदा करार दिया हुआ है, अब खुद ही बतलाओ हम कैसे कामयाब हो जाऐगे ? हम हर वक्त मख्लूक ही से मदद चाहते हैं, मख्लूक ही से शिकवा करते हैं आर मख्लूक ही से भीख मॉगते हैं, ये निशानी है दिल के तौहीद से खाली होने की कि एक जर्रा बराबर भी दिल मे तौहीद नही, तौहीद एक नूर है और मख्लूक को शरीक करार देना जुल्मत है, ये जुल्मत अंधेरा है। हम लोग फलाह किस तरह पा सकते हैं जब कि हमारे दिल तक्वे से खाली है, हम लोगों को खालिक के बजाये मख्लूक महबूब है, मुसब्बिुल असबाब के बजाये असबाब महबूब है, हम मख्लूक पर एतमाद व भरासा करके तवक्कुल का दावा करते हैं, याद रखने की बात ये है कि बगैर गवाह के ये दावा हमे तुम्हे एक मुटठी घास नही दिला सकता। जिसका दिल मख्लूक की शिर्कत से पाक हो जाता है हक तआला उसके दिल मे अपने कुर्ब का दरवाजा खोलकर फहम और दानिश का गलबा नसीब फरमाता है फिर वो जो कुछ देखता है उससे नसीहत लेता व जो कुछ सुनता है उससे नसीहत हासिल करता है और वो उन्ही अमलों को करता है जो अमल हक तआला का मुकर्रब बनाता है, इसकी हालत ऐसी हो जाती है जिसका हक तआला ने यूसुफ अलै0 के मुतआल्लिक कुरआन मे जिक्र फरमाया है “ हमने ऐसा ही किया कि यूसुफ को बदी और बेहयाई से दूर रखा, बेशक वो हमारे मुख्लिस बन्दों मे था ”

हम सब अपने ईमान की कमजोरी को दूर करने के लिये सबसे पहले अपने नफस की इस्लाह मे मश्गूल हो जाऐ इसलिये कि बगैर अपनी इस्लाह की नियत किये हमारे मुताल्लिकीन की इस्लाह नही होगी, अपनी इस्लाह की नियत किये बगैर आम मख्लूक की तरफ हम उस वक्त तवज्जो करे कि जब हम तक्वे की जिरह पहने हो, अपने कल्ब पर ईमान का टोप रखे हो, हमारे हाथ मे तौहीद की तलवार हो, हमारे तरकश मे दुआ की कुबूलियत के तीर हों और तौफीक के घोड़े पर सवार होकर उनका

सामना कर रहें हो। अपनी इस्लाह की नियत करके जब हम आम मख्लूक को हक तआला की तरफ मुतवज्जा करेगें तब आगे से-पीछे से, दायें से-बायें से और ऊपर व नीचे से इन छः जानिबों से हक तआला हमारी मदद व नुसरत करेगें। तब हम मख्लूक-ए-खुदा को शैतान के हाथों से खीच खीच कर दरवाजा-ए -खुदाबन्दी पर ला डालेगें कि इनको जन्नत के आमाल की तर्गीब देगें और दोजख के आमाल से डरायेगें।

जो शख्स इस मकाम पर पहुॅच जाता है उसके दिल की ऑखों से पर्दे हट जाते है फिर छः जानिबों मे जिधर तवज्जो करता है अपनी नजर को पर्दो से परे पहुॅचा देता है अगर दिल का सर उठाता है तो आसमानों के ऊपर अर्श देख लेता है और नीचे सर झुकाता है तो सातों जमीनों और उसके बाशिंदों को देख लेता है, इस सारे कमाल का सबब ईमान व शरीयत के इल्म के साथ अल्लाह तआला की मआरिफत है। जब हम इस मकाम पर पहुॅचने की मेहनत कर रहे हो तब मख्लूक को दरवाजा-ए-खुदाबन्दी को तरफ बुलायें और वाईज बनकर मिंबर पर आयें वरना इससे पहले हमसे कुछ न होगा अगर हम खुद दरवाजा-ए-खुदाबन्दी पर न हुए तो मरा बुलाना उलटे मझ़ पर वबाल होगा फिर जब कभी हम ऐसा करने की हरकत करेगें घुटने टेककर बैठ जायेगें, अपनी निगाह मे हम चाहे बुलन्द होते नजर आये मगर पस्ती मे पहुॅच जायेगे। जब इन्सान का कल्ब दुरुस्त हो जाता है तो अल्लाह तआला के करीब हो जाता है फिर अगर ये किसी पर नजर डालता है तो चश्मा-ए-मारिफत और कुर्ब के डालता है, उसकी ये निगाह गोया हक तआला की तरफ से होती है, उसके कल्ब मे कुर्ब की गोया घटा होती है कि निगाह बिजली व वआज बारिश है फिर उसकी जबान वही मज्मून जाहिर करती है जो उसके कल्ब मे होता है।

हम सब आरजुओं को खत्म करते हुए हिर्स मे कमी करें और नमाज का ऐसे अमल करें जैसे दुर्निया से रुखसत होने वाला करता है, इसलिये हमारा खाना-पीना ऐसा होना चाहिये जैसे दुर्निया से रुख्सत होने वाला का होता है और भाई-बन्दो से मिलना जुलना भी ऐसे ही होना चाहिये जैसे दुर्निया से रुख्सत होने वाले का होता है, हम अपने कल्ब मे ये बात पैदा करते रहा करें कि मैं दुर्निया से रुख्सत हो रहा हूॅं। जो इस तरह से अपने ऊपर मेहनत करते हैं वो आगाह हो जाते हैं कि उनके लिये हक तआला ने क्या तज्वीज किया है, उनके दिलो मे ये मख्फी रहता है। वो इसको इस तरह देखते हैं जिस तरह हम तुम आफताब देखते हैं, बस उनकी जबाने इसको बयान नही कर सकती, अव्वल इसकी इत्तिला रूह को होती है ओर रूह इसकी इत्तिला दिल को देती है फिर दिल नफस ए मुतमईन्ना को इत्तिला देकर छिपाने की ताकीद कर देता है।

ये मकाम मस्जिद वाले आमाल को आबाद करने की मेहनत से हासिल होता है, जो इस मकाम पर पहुॅच गया वो जमीन पर हक तआला का खलीफा बन जाता है, हक तआला के खजानों की कुंजियॉ (हक तआला के अहकामात) उसके पास होती है, ऐसे लोगों का वआज सुनकर लोग सालेह बनते है और निजाम ए आलम दुरूस्त होता है। ऐसे लोग हक तआला से उसकी रहमत का वास्ता देकर इल्तिजा किया करते हैं कि ऐ हमारे परवर दिगार हम तुझसे न दुनियॉ चाहते हैं न आखिरत बल्कि तेरी मर्जी पर चलने के लिये अफु व आफियत चाहते है, ईमान और मारिफत की बका चाहते है। हममे तुममे से बहुत कम लोग हैं जो इन बातों को सच्चा समझेगें वरना अक्सर तो इन्हे झुठलायेगें हालॉकि इनको सच्चा समझना और इस पर अमल करना इन्तेहाई जरूरी है। सालिहीन के अहवाल का इन्कार वही शख्स करता है जो मुनाफिक दज्जाल अपनी ख्वाहिस ए नफस पर सवार हो, ये बातें ऐसे लोगों की समझ से बाला है, क्यों कि मख्लूक मे जो कुछ जाहिर हो रहा है वो इसके पहाड़ का एक जर्रा और इसके समन्दर का एक कतरा और इसके आफताब का एक चिराग है जिसकी वजह से उनकी अक्लों की वहॉ तक रसाई नही हो सकती।